

मेदिनी

श्रीमन्मेदिनीकारं प्रणीता



वि, ए, उपाधिधारिण्ये

श्रीजीवानन्द विद्यासागरभट्टाचार्य्येण

संस्कृता ।

कलिकाताराजधान्याम्

सारसुधानिधियन्त्रे

श्रीसदानन्दमिश्रेण मुद्रिता ।

६१८७२

रुचिपत्रम् ।

| वर्णप्रकरणम् | पत्राङ्काः | श्लोकाङ्काः । | वर्णप्रकरणम् | पत्राङ्काः | श्लोकाङ्काः |
|--------------|------------|---------------|--------------|------------|-------------|
| कैककम् | २ | १५ । | घद्विकम् | ३४ | १ |
| कद्विकम् | २ | १६ । | घत्रिकम् | ३४ | ६ |
| कत्रिकम् | ५ | ४० । | | — | |
| कचतुष्कम् | १८ | १७३ । | ङैककम् | ३५ | १ |
| कपञ्चकम् | २४ | २२४ । | | — | |
| कषट्कम् | २५ | २३४ । | चैककम् | ३५ | १ |
| | — | | चद्विकम् | ३५ | १ |
| खैककम् | २५ | १ । | चत्रिकम् | ३७ | १२ |
| खद्विकम् | २५ | २ । | चचतुष्कम् | ३७ | २० |
| खत्रिकम् | २६ | ८ । | चपञ्चकम् | ३८ | २१ |
| खचतुष्कम् | २७ | १३ । | | — | |
| खपञ्चकम् | २७ | १८ । | कैककम् | ३८ | १ |
| | — | | कद्विकम् | ३८ | २ |
| गैककम् | २७ | १ । | कचतुष्कम् | ३८ | ६ |
| गद्विकम् | २८ | ४ । | | — | |
| गत्रिकम् | ३० | २८ । | जैककम् | ३८ | १ |
| गचतुष्कम् | ३३ | ४३ । | जद्विकम् | ३८ | ३ |
| गपञ्चकम् | ३४ | ५८ । | जत्रिकम् | ४० | १८ |
| | — | | जचतुष्कम् | ४२ | २० |
| घैककम् | ३४ | १ । | जपञ्चकम् | ४२ | २६ |

| वर्णप्रकरणम् | पत्राङ्काः | श्लोकाङ्काः | वर्णप्रकरणम् | पत्राङ्काः | श्लोकाङ्काः |
|--------------|------------|-------------|--------------|------------|-------------|
| जपङ्कम् | ४३ | २७ | डैककम् | ५८ | १ |
| | — | | डद्विकम् | ५८ | १ |
| झैककम् | ४३ | १ | डत्रिकम् | ५८ | ६ |
| झद्विकम् | ४३ | १ | डचतुष्कम् | ५८ | ११ |
| | — | | | — | |
| ञकैकम् | ४३ | १ | णैककम् | ५८ | १ |
| ञद्विकम् | ४३ | १ | णद्विकम् | ५८ | ११ |
| ञत्रिकम् | ४४ | ४ | णत्रिकम् | ६२ | ३३ |
| | — | | णचतुष्कम् | ६८ | ८८ |
| टैककम् | ४४ | १ | णपञ्चकम् | ७० | ११२ |
| टद्विकम् | ४४ | २ | णपङ्कम् | ७१ | ११७ |
| टत्रिकम् | ४७ | ३३ | | — | |
| टचतुष्कम् | ५० | ५८ | तैककम् | ७१ | १ |
| टपञ्चकम् | ५१ | ६७ | तद्विकम् | ७१ | २ |
| | — | | तत्रिकम् | ७८ | ७६ |
| टैककम् | ५१ | १ | तचतुष्कम् | ८८ | १७५ |
| टद्विकम् | ५१ | १ | तपञ्चकम् | ८४ | २२८ |
| टत्रिकम् | ५२ | १० | तपङ्कम् | ८५ | २३३ |
| टचतुष्कम् | ५३ | १७ | तमप्रकम् | ८५ | २३४ |
| | — | | | — | |
| डैककम् | ५३ | १ | थैककम् | ८५ | १ |
| डद्विकम् | ५३ | १ | थद्विकम् | ८५ | २ |
| डत्रिकम् | ५६ | २७ | थत्रिकम् | ८७ | १४ |
| डचतुष्कम् | ५८ | ३७ | थचतुष्कम् | ८८ | २५ |

| वर्णप्रकरणम् | पत्राङ्काः | श्लोकाङ्काः । | वर्णप्रकरणम् | पत्राङ्काः | श्लोका- |
|--------------|------------|---------------|--------------|------------|---------|
| द्वैककम् | ८८ | १ । | फैककम् | १३८ | १ |
| द्विद्विकम् | ८८ | २ । | फद्विकम् | १४० | २ |
| द्वित्रिकम् | १०० | १७ । | — | — | — |
| दचतुष्कम् | १०३ | ४३ । | वैककम् | १४० | १ |
| दपञ्चकम् | १०४ | ५६ । | वद्विकम् | १४० | २ |
| — | — | । | वत्रिकम् | १४१ | ८ |
| धैककम् | १०५ | १ । | वचतुष्कम् | १४२ | १५ |
| धद्विकम् | १०५ | २ । | वपञ्चकम् | १४२ | १७ |
| धत्रिकम् | १०७ | २६ । | — | — | — |
| धुचतुष्कम् | १०८ | ४० । | भैककम् | १४२ | १ |
| धपञ्चकम् | ११० | ४८ । | भद्विकम् | १४२ | २ |
| — | — | । | भत्रिकम् | १४३ | १० |
| नैककम् | ११० | १ । | भचतुष्कम् | १४५ | २४ |
| नद्विकम् | ११० | १ । | — | — | — |
| नत्रिकम् | ११३ | २६ । | भैककम् | १४५ | १ |
| नचतुष्कम् | १२६ | १६२ । | भद्विकम् | १४५ | २ |
| नपञ्चकम् | १२३ | २२८ । | नत्रिकम् | १४८ | ३८ |
| नपङ्कम् | १३६ | २५४ । | मचतुष्कम् | १५१ | ५८ |
| — | — | । | — | — | — |
| पैककम् | १३६ | १ । | यैककम् | १५२ | १ |
| पद्विकम् | १३६ | २ । | यद्विकम् | १५२ | ३ |
| पत्रिकम् | १३७ | १३ । | यत्रिकम् | १५८ | ६७ |
| पचतुष्कम् | १३८ | २३ । | यचतुष्कम् | १६३ | ११५ |
| पपञ्चकम् | १३८ | ३१ । | यपञ्चकम् | १६५ | १३२ |

| | | | | | | |
|--------------|-----------|------------|--|--------------|-----------|------------|
| वर्णप्रकरणम् | पत्राङ्का | श्लोकाङ्का | | वर्णप्रकरणम् | पत्राङ्का | श्लोकाङ्का |
| यषद्वयम् | १६५ | १३४ | | शद्विकम् | २२१ | २ |
| — | — | — | | शत्रिकम् | २२७ | १ |
| रैकिकम् | १६६ | १ | | शचतुष्कम् | २२४ | ३१ |
| रद्विकम् | १६६ | ३ | | — | — | — |
| रत्रिकम् | १७६ | १०२ | | षैकिकम् | २२६ | १ |
| रचतुष्कम् | १८० | २४० | | षद्विकम् | २२६ | २ |
| रपञ्चकम् | १८६ | ३०२ | | षत्रिकम् | २२८ | २८ |
| — | — | — | | षचतुष्कम् | २३१ | ४८ |
| लैकिकम् | १८७ | १ | | — | — | — |
| लद्विकम् | १८७ | २ | | सैकिकम् | २३२ | १ |
| लत्रिकम् | २०३ | ५७ | | सद्विकम् | २३२ | २ |
| लचतुष्कम् | २१२ | १४७ | | सत्रिकम् | २३३ | १४ |
| लपञ्चकम् | २१४ | १६८ | | सचतुष्कम् | २३७ | ४७ |
| — | — | — | | सपञ्चकम् | २३८ | ६८ |
| वैकिकम् | २१४ | १ | | सषद्वयम् | २३८ | ६८ |
| वद्विकम् | २१५ | ३० | | — | — | — |
| वत्रिकम् | २१७ | ३० | | हैकिकम् | २३८ | १ |
| वचतुष्कम् | २२० | ५६ | | हद्विकम् | २३८ | २ |
| वपञ्चकम् | २२१ | ६६ | | हत्रिकम् | २४१ | १३ |
| — | — | — | | हचतुष्कम् | २४२ | २६ |
| शैकिकम् | २२१ | १ | | हपञ्चकम् | २४३ | ३४ |

अव्ययानि ।

| प्रकरणम् पत्राङ्काः श्लोकाङ्काः । | वर्षप्रकरणम् पत्राङ्काः श्लोकाङ्काः |
|---------------------------------------|-------------------------------------|
| ह्रस्वराव्ययम् २४४ २ । नान्तम् २४८ ४० | |
| ान्तम् २४५ ११ । षान्तम् २५० ४६ | |
| ान्तम् २४६ १२ । भान्तम् २५१ ४७ | |
| ान्तम् २४६ १३ । मान्तम् २५१ ४८ | |
| वान्तम् २४६ १३ । यान्तम् २५२ ६३ | |
| जान्तम् २४६ १६ । ऱान्तम् २५३ ६५ | |
| ठान्तम् २४७ १७ । लान्तम् २५४ ७३ | |
| णान्तम् २४७ १८ । वान्तम् २५४ ७४ | |
| तान्तम् २४७ १८ । षान्तम् २५४ ७८ | |
| थान्तम् २४८ २५ । सान्तम् २५५ ७८ | |
| दान्तम् २४८ ३८ । हान्तम् २५५ ८५ | |
| धान्तम् २४८ ३८ । | |

कान्तादिष्वय्येषु स्वरवत्त्वमविवक्षितम् ।

मेदिनी

उत्पलिनोऽब्दार्णवसंभारावर्त्तनाममालाख्यान् ।
 भागुरिवररुचिशाश्वतवोपालितरन्तिदेवहरकोषान् ॥१॥
 अमरशुभाङ्गहलायुधगेवङ्गैरभसपालकृतकोषान् ।
 रुद्रामरदत्ताजयगङ्गाधरधरणिकोषांश्च ॥२॥
 हारीवंल्लभिधानं विक्राण्डशेषञ्च रत्नमौलाञ्च ।
 अपि वङ्गदीपं विश्वप्रकाशकोषञ्च सुविचार्य्य ॥३॥
 वाभट्टमाधववाचसपतिधर्मव्याडितारपालाख्यान् ।
 अपि विश्वरूपविक्रमादित्यनामलिङ्गानि सुविचार्य्य ॥४॥
 कात्यायनवामनचन्द्रगोमिरचितानि लिङ्गशास्त्राणि ।
 पाणिनिपदानुशासनपुराणकाव्यादिकञ्च सुनिह्य ॥५॥
 पट्टशतगाथकोषप्रणयनविख्यातकौशलेनाथम् ।
 मेदिनिकरेण कौपः प्राणकरसुनुना रचितः ॥६॥

॥ मेदिनी ॥

ॐ नमो गणेशाय ।

वृषाङ्गाय नमस्तस्मै यस्य मौलिविलम्बिनी ।
जटावेष्टनजां शोभां विभावयति जाङ्गवी ॥२॥
पातु वो मदकालिम्ना धवलिम्ना रदस्य च ।
गङ्गायमुनयोः सङ्ग वहन्निव गजाननः ॥ २ ॥
पञ्चाचार्यकृतो वीर्यशब्दशास्त्र निरूप्य च ।
नानार्थशब्दकोषोऽय लिङ्गभेदेन कथ्यते ॥ ३ ॥
प्रायशो रूपभेदेन विशेषणवशात् क्वचित् ।
स्त्रीपुनपुसकं ज्ञेयं विशेषोक्तेश्च कुत्रचित् ॥ ४ ॥
त्रिलिङ्गां त्रिष्वितिपट मिथुने च द्वयोरिति ।
निपिङ्गलिङ्ग शेषार्थ त्वन्तायादि न पूर्वभाक् ॥५॥
रूपाद्युक्तं लिङ्गमुक्तं लिपिभ्रान्तिच्छिदे क्वचिन ।
विशेष्यनिघ्नेऽनुक्तोऽपि विज्ञेया वाच्यलिङ्गता ॥ ६ ॥
गुणे शुक्लादिकट्टाद्याः पुंसि स्युस्तद्वति त्रिषु ।
नीरणाद्यास्तु गुणे क्लीबे गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ॥७॥

स्त्रीवपुसोरपि स्त्रीत्वं काप्यत्पत्वविवक्षया ।

जातिवाचकशब्दानामपि तत् स्त्रीविवक्षया ॥ ८ ॥

उद्भिदः प्रसवे स्त्रीवे हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।

पुष्पे जातीप्रभृतयः खलिङ्गा व्रीहयः फले ॥ ९ ॥

प्राज्ञानार्थोऽनु तल्लिङ्गं द्वयोदन्दे न चैकता ।

शब्दावृत्तिर्न लिङ्गैक्य सप्तमी न विशेषणे ॥ १० ॥

स्त्रीवे नपुसके पुंसि स्त्रियां योपिति च द्वयोः ।

त्रिपुचेत्यादि यद्रूपं तल्लिङ्गस्यैव वाचकम् ॥ ११ ॥

नानार्थः प्रथमान्तोऽत्र सर्वत्रादौ प्रदर्शितः ।

सप्तम्यन्तोऽभिधेयेषु वर्त्तमानो विनिश्चितः ॥ १२ ॥

एकद्वित्रिचतुष्यञ्चपड्वर्णानुक्रमात् कृतः ।

स्वरकाद्यादि-काद्यन्त-वर्गैर्नानार्थसंग्रहः ॥ १३ ॥

नानार्थकोपपुस्तकभावाज्जनदुःखहानये कृतिनः ।

मेदिनिकरकृतकोपो विशुद्धलिङ्गोऽभिनिख्यतामेकः ॥ १४ ॥

कैककम् ।

को ब्रह्मणि समीरात्मयमदत्तेषु भास्करे ।

कामग्रन्थौ चक्रिणि च पतत्रिणि च पार्थिवे ॥ १५ ॥

मयूरेऽग्नौ च पुंसि स्यात् सुखशीर्षजलेषु कम् ।

कद्विकम्

अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके रवौ ताम्रे दिवस्पतौ ॥ १६ ॥

अङ्गो रूपक भेदागच्छिङ्गरेखाजिभूषणे ।

रूपकांशान्तिकोत्सङ्गे स्थानेऽकं पापदुःखयोः ॥१७॥

एकः सङ्ख्यानतरे श्रेष्ठे केवलेतरयोस्त्रिषु ।

कर्कः कर्के तले वङ्गौ शृङ्गाश्चे दर्पणे घटे ॥ १८ ॥

कङ्कश्वद्विजे ख्यातो लोचं पृष्ठकृतान्तयोः ।

कल्कोऽस्त्री घृततैलादिशेषे दम्भे विभीतके ॥ १९ ॥

विट्किट्टयोश्च पापे त्रिषु पापाशये पुनः ।

काकः स्याद् वायसे वृक्षप्रभेदे पीठसर्पिणि ॥२०॥

शिरोऽवचालने मानप्रभेद-दीपभेदयोः ।

काकास्यात्काकनासायां काकोलीकाकजङ्घयोः ॥२१॥

रक्तिकायां मलयुञ्च काकमाच्याञ्च योषिति ।

कांकां सुरतबन्धे स्यात् काकानामपि संहतौ ॥ २२ ॥

किष्कुर्दयोर्वितस्तौ च सप्रकोष्ठकरेऽपि च ।

कोकश्चक्र-वृक-ज्यैष्ठो-खर्जूरीद्रुम-ददुरे ॥ २३ ॥

केको गृहाश्रित-मृगपत्त्रिणो नागरे त्रिषु ।

टङ्को नोलकपित्ये च खनित्रे टङ्कणेऽस्त्रियाम् ॥२४॥

जङ्घायां स्त्री पुमान् कोषे कोपासियावदारणे ।

तर्कः कांक्षावितर्कोद्देशे तुशास्त्रेषु कथ्यते ॥ २५ ॥

त्रिका कूपस्य नेसौ स्यात् त्रिकं पृष्ठाधरे त्रये ।

तौकं पुत्रे सुतायाञ्च द्विकः स्यात् काककोकयोः ॥२६॥

न्यङ्कु र्मुनौ मृगे पुंसि नाकस्तु त्रिदिवेऽम्बरे ।
 नाकु र्मन्यन्तरे पृथ्वीधरवल्मीकयोः पुमान् ॥ २७ ॥
 निष्कमस्त्री साष्टहेमशते दीनारकर्पयोः ।
 वक्षोऽलङ्कारणे हेममात्रे हेमपलेऽपि च ॥ २८ ॥
 पङ्कोऽस्त्री कदम पापे पांकः परिणतौ शिशौ ।
 केशस्य जरसागौक्ल्ये स्थाल्यादौ पचनेऽपि च ॥ २९ ॥
 वकस्तु वक्रपुष्ये स्यात् कङ्के श्रीदे च रक्षसि ।
 भूकं छिद्रं च काले च भेको मण्डूकमेघयोः ॥ ३० ॥
 मुष्को मोक्षकवृक्षे स्यात् सङ्घाते वृषणेऽपि च ।
 मूक स्वधाचि ना दैत्ये रङ्गः कृष्णमन्दयोः ॥ ३१ ॥
 राका नद्यन्तरे कच्छां नवजातरजःस्त्रियाम् ।
 सम्पूर्णन्दुतिथौ रेकः शङ्खानीचविरेचने ॥ ३२ ॥
 राकस्तु क्रयभिद्दीप्त्याः राकं नावि चले विले ।
 लङ्का रक्षःपुरीशाखाशाकिनीकुलटासु च ॥ ३३ ॥
 नोकी जनेऽपि भुवने वस्त्रं वल्कलगच्छयोः ।
 वङ्कः पर्याणभागे ना नदीपात्रे च भङ्गुरे ॥ ३४ ॥
 शन्क्रन्तु शकले वन्केशको जात्यन्तरे नृपे ।
 शङ्कुः सह्यास्त्रयादौ भित्कीलेशकनुपेषु ना ॥ ३५ ॥
 शङ्का चासे वितर्के च शाको द्वीपान्तरेऽपि च ।
 शक्तौ दुर्मविशेषे च पुमान् हरितकेऽस्त्रियाम् ॥ ३६ ॥

शुको व्याससुते कीरे रावणस्य च मन्त्रिणि ।
 गिरीपपादपे पुंसि ग्रन्थिपर्णे नपुसकम् ॥ ३७ ॥
 शुक्लं घट्टादिदेये स्याद् वरादर्थग्रहेऽस्त्रियाम् ।
 शुकोऽस्त्री शुङ्गदययोः श्लोकः पद्ये यशस्यपि ॥ ३८ ॥

कन्निकम्

शौकंशुकगणे स्त्रीणां करणे मृक इत्ययम् ।
 वाणवातात्यले श्लोकं त्रिव्यले चातके पुमान् ॥ ३९ ॥
 अशोक स्त्रिपु निःशोकै पुंसिकङ्केस्त्रिपादप ।
 स्त्रियान्तु कटुरोहिण्या पारदे स्यान् नपुसकम् ॥ ४० ॥
 अलका कुबेरपुर्व्यामस्त्रियां चूर्णकुन्तले ।
 अशोकः कामुकैकुरे निर्भये त्रिपु ना कवौ ॥ ४१ ॥
 अनीकोऽस्त्री गणे सैन्येऽप्यणुको निपुणाल्पयोः ।
 अलोकमप्रियेऽपि स्याद् दिव्यसत्ये नपुसकम् ॥ ४२ ॥
 अनूकान्तु कुले शौले पुंसि स्याद् गतजन्मनि ।
 अशुकं श्लक्ष्णवस्त्रे स्याद् वस्त्रमात्रोत्तरीययोः ॥ ४३ ॥
 अन्ति क निकटे वाचलिङ्गं स्त्री शान्तलौपधौ ।
 चुट्ट्यां ज्येष्ठभगिन्याश्च नाद्योक्त्याकथ्यतेऽन्तिका ॥ ४४ ॥
 अलर्को धवलार्के स्याद् योगोन्मादितकुङ्कुरे ।
 अम्बिका पार्वतीमात्रो धृतराष्ट्रस्य मातरि ॥ ४५ ॥

अन्धिका द्यूतभेदे च रजन्यामपि योषिति ।
 अम्बिका तिनितिङ्गिकाऽम्बोद्गारचाङ्गेरिकास्तु च ॥४६॥
 अर्भकः कथितो बाले मूर्खेऽपि च कृशेऽपि च ।
 आनकः पटचे भेर्यां मृदङ्गे ध्वनदम्बुदे ॥ ४७ ॥
 आदकी तु तुवर्यां स्त्री परिमाणान्तरे त्रिषु ।
 आलोकस्तु पुमान् द्योते दर्शने वन्दिभाषणे ॥ ४८ ॥
 आङ्गिकं दिननिवर्त्ये त्रिलिङ्गमथ न द्वयोः ।
 नित्यक्रियाभोजनयो र्वृन्दे प्रकरणस्य च ॥ ४९ ॥
 आतङ्को रोगसन्तापशङ्कास्तु मुरजध्वनौ ।
 इक्ष्वाकुः कटुतुम्ब्यां स्त्री सूर्यवंश्यनृपे पुमान् ॥५०॥
 उलूकः पुंसि काकाराविन्द्रे भारतयोधिनि ।
 उदर्क एष्यत्काले तत्फले मदनकण्ठके ॥ ५१ ॥
 उष्णकस्तु निदाघे स्यादातुरे क्षिप्रकारिणि ।
 उद्विका मृत्तिकाभाण्डभेदेऽपि करभे स्त्रियाम् ॥५२॥
 ऊर्मिका चाङ्गुरीये स्याद् वस्त्रभङ्गतरङ्गयोः ।
 कनकं चेन्नि पुंसि स्यात् किंशुके नागकेशरे ॥५३॥
 धुस्त्रे काञ्चनानि च कालीये चम्यकेऽपि च ।
 करकस्तु पुमान् पक्षिविशेषे दाडिमिऽपि च ॥५४॥
 द्वयो वर्षोपले न स्त्री करङ्गे च कमण्डलौ ।
 क्रमकस्तु पुमान् भद्रमुस्तके ब्रह्मदारुणि ॥ ५५ ॥

फले कार्पासिकायाश्च पट्टिका लोध्रपूगयोः ।
 कटकोऽस्त्री नितम्बेऽद्दे र्दण्डिनां दन्तमण्डले ॥५६॥
 सामुद्रलवणे राजधानी बलययोरपि ।
 कटुका कटुरोहिण्यां स्त्रियां व्योषे नपुंसकम् ॥ ५७ ॥
 कण्टको नस्त्रियां क्षुद्रशत्रौ मत्स्यादिकीकसे ।
 नैयायिकादिदोषोक्ता स्याद् रोमाञ्चद्रुमाङ्गयोः ॥५८॥
 करङ्को मस्तकेऽशस्यनारिकेलफलास्थिनि ।
 कलङ्कोऽङ्गेऽपवादे च कालायसमलेऽपि च ॥५९॥
 कर्णिका करिहस्ताये करमध्याङ्गुलावपि ।
 क्रमुकादिच्छटांशेऽज्ज्वराटे कर्णभूपणे ॥६०॥
 कणिका कथ्यतेऽत्यन्त-सूक्ष्मवस्त्वग्निमन्ययोः ।
 कचाकुस्तु दुराधर्षे दुःशीले ना विलेशये ॥६१॥
 कञ्चुको वारवाणे स्यान् निर्मोके क्वचिऽपि च ।
 वर्द्धापक गृहीताङ्गस्थितवस्त्रे च चालके ॥६२॥
 कञ्चुक्ये ऽपधिभेदेऽथ कारिका नटयोपिति ।
 कृतौ विवरणाश्लोके शिल्पयातनयोरपि ॥६३॥
 नपुंसकन्तु कर्मादौ कारक कर्त्तरि त्रिषु ।
 कामुकः कमनेऽशोकपादपे चातिमुक्तके ॥६४॥
 कार्मुक धनुषि स्यान् ना चैषौ कर्म्मक्षमेऽन्यवत् ।
 कावृकः कृकवाकौ स्यात् पीतमस्तककोकयोः ॥६५॥

चारकः पत्तिमत्स्यादिपिटके जालकैऽपि च ।
 कालिका चण्डिकाभेदे काष्णर्षवृश्चिकपत्रयोः ॥६६॥
 क्रमदेये वस्तुमूल्ये धूसरीनवमेघयोः ।
 पटोलशाखारोमानीमांसीकाकीशिवासु च ॥६७॥
 मेघावलौ च किम्पाकौ महाकालफलाञ्जयोः ।
 कीचको दैत्यभिदाताहतसखनवंशयोः ॥६८॥
 कीटकः क्रमिजातौ ना निष्ठुरे पुनरन्यवत् ।
 कुलकन्तु पटोले स्यात् सम्यद्द्व्यश्लोकसंघतौ ॥६९॥
 पुंसि वल्मीककाकेन्दु कुलश्रेष्ठेषु कथ्यते
 चुम्बक स्त्रिपु नीचेऽल्पे कुशिको मुनिसर्जयौः ॥७०॥
 कुपाकुः कपिवह्न्यऽर्के ना परोत्तापिनि त्रिपु ।
 कुलिको नागभेदे स्याद्द्रुमेदे कुलमत्तमे ॥७१॥
 चुरकः कोकिलात्ते स्याद् गोक्षुरे तिलकद्रुमे ।
 कृपको गुणवृक्षे स्यात् तैलपात्रे कुकुन्दरे ॥७२॥
 उदपाने चितायाञ्च कृपिकाऽभोगतौपले ।
 कूलकं न स्त्रियां स्तूपे पुंसि स्यात् क्रमिपर्वते ॥७३॥
 कृर्चिका मृचिकायाञ्च तलिकायाञ्च कुट्टले ।
 कवाटकुकुट्टके घोरविकृतावपि योपिति ॥७४॥
 कृपकः पुंसि फाले स्यात् कर्पकोत्पभिधेयवत् ।
 कोरकोऽस्त्री कुट्टले स्यात् कथोन्मकमृणात्रयोः ॥७५॥

कौतुकन्वभिलाषे स्यादुत्सवे नर्महर्षयो ।
 तथा परम्परायाते मङ्गले च कुतूहले ॥७६॥
 विवाहसूत्रगीतादिभोगयोरपि न द्वयोः ।
 काशिको नकुले व्यालयाहे गुग्गुलुशक्रयोः ॥७७॥
 कोपज्ञेालूकयोश्च स्याद् विश्वामित्रमुनावपि ।
 कौपिकी चण्डिकायाश्च नदीभेदे च योषिति ॥७८॥
 खनको नोन्दुरौ सन्धिचौरे त्रिष्ववदारके ।
 खङ्गिको महिषीक्षीरे फेनशैनिकयोरपि ॥७९॥
 स्यात् खालकस्तु पाके शिरस्त वल्मीक पूगकोषेषु ।
 गणिका यूथीवेश्मेभीतर्कारीषु ना तु दैवज्ञे ॥८०॥
 ग्रन्थिक पिप्पलीमूले गुग्गुलुग्रन्थिपर्णयोः ।
 करीरे पुसि दैवज्ञे सह देवाख्यपाण्डवे ॥८१॥
 गण्डक पुसि खङ्गे स्यात् सङ्घ्याविद्याप्रभेदयोः ।
 अवच्छेदेऽन्तराये च गण्डकी सरिदन्तरे ॥८२॥
 ग्राहको घातिविहगे व्यालानाञ्च ग्रहीतरि ।
 गान्धिको लेखकेऽपि स्यात् सुगन्धिव्यवहारिणि ॥८३॥
 गुण्डको मलिने धूलौ कलौक्ति स्नेहपात्रयोः ।
 गुह्यको निम्बके च्छेके गैरिक धातुरुक्मयोः ॥८४॥
 गोलको विधवापुत्रे जारात् स्यान्मणिके गुडे ।
 गोरङ्गुः स्यात् पुमान् पक्षिभेदे नग्नकवन्दिनोः ॥८५॥

चषकोऽस्त्री पानपात्रे मधुमद्यप्रभेद्योः ।

चलुकः प्रसृतौ भाण्डभेदे चलुकवत् पुमान् ॥८६॥

चतुष्की मशकद्वय्यां पुष्करिण्यन्तरेऽपि च ।

चारकः पालकेऽश्वादेः स्यात् सञ्चारकबन्धयोः ॥८७॥

चित्रकं तिलके नातु व्याघ्रभिच्चञ्चुपाठिषु ।

चम्बकसुम्बनपरे धूर्तायस्कान्तयोरपि ॥८८॥

बङ्गग्रन्थैकदेशज्ञे घटस्योर्द्धावलम्बने ।

चुल्लकी शिशुमारं स्यात् कुण्डीभेदे कुलान्तरे ॥८९॥

चूलिका नाटकस्याङ्गे कर्णमूले च हस्तिनाम् ।

चुतकः कूपकेऽप्याम्ने जनकः पितृभृभुजोः ॥९०॥

जम्बुकः फेरवे नीचे पश्चिमाशापतावपि ।

जतुका जिनपत्रायां जतुकं द्विद्भुलाक्षयोः ॥९१॥

जाहकी घोह्णमार्ज्जार-खट्वाकारुण्डिकासु च ।

जालकं कोरके दम्भे कुलायानाययोरपि ॥९२॥

न पुंसि मोचकफले स्त्रियान्तु वसनान्तरे ।

गिरिसारे जलौकायामपि स्याद् विधवास्त्रियाम् ॥९३॥

भटानामग्गरचिताङ्गरक्षिण्याच्च जालिका ।

जालिको वाच्यवद् ग्रामजालिजालोपजीविनोः ॥९४॥

जीवक. प्राणके पीतशालक्षपणयोरपि ।

कूर्चशीर्षे च पुंसि स्यादाजीवे जीविका भता ॥९५॥

त्रिषु सेविनि वृद्धाशीर्जाविनोराहितुण्डके ।
 अल्लिकोदत्तनमले पटे दीप्तौ च झिल्लिका ॥६६॥
 उदत्तनाशुके झिण्ड्यां टुण्डुकः शोणकाल्पयोः ।
 डिम्बिका जलविम्बे स्यान्मोणकेकामुकेस्त्रियाम् ॥६७॥
 तण्डुकः खञ्जने फेने समासप्रायवाचि च ।
 गृहदारुतरुस्कन्धमायावज्जलकेष्वपि ॥६८॥
 तल्लकस्तु पुमान्नागराजभेदे च वर्द्धकौ ।
 तारको दैत्यभित्कर्णधारयो न द्वयोर्दृशि ॥६९॥
 कनीनिकायामृत्ते च न पुमान्त्रातरि त्रिषु ।
 तिलको द्रुमरोगाश्वभेदेषु तिलकालके ॥ १०० ॥
 क्लीवं सौर्वचलक्लोम्नो न स्त्रियान्तु विशेषके ।
 त्रिशङ्कुर्ना राजभेदे शलभे वृषदंशके ॥ १०१ ॥
 तुरष्कः सिद्धके स्नेच्छजातौ देशान्तरेऽपि च ।
 त्वलिका कूर्चिकायान्तु शय्योपकरणेऽपि च ॥ १०२ ॥
 दर्शकः स्यात्प्रतीहारे दर्शयित्प्रवीणयोः ।
 दारको बालकेऽपि स्याद्भेदकेऽप्यभिधेयवत् ॥१०३॥
 द्रावको यावभेदे स्याद्विदग्धे मोपकेऽपि च ।
 दीपकं वागलङ्कारे वाच्यवद्दीप्तिकारके ॥१०४॥
 दीप्यकञ्चाजभेदायां यवानीवर्ध्निचूडयोः ।
 दुच्छको गन्धकुट्यां स्याद्विहारद्यवकाशके ।

दूपिका तूलिकायाञ्च मले स्यात्लोचनस्य च ॥१०५॥
 धनिका साधुनार्यां ना धन्याके त्रिषु साधुधनिनेस्य ।
 स्याद्दधेनुकाकरिण्यां धेनावपिपुसिदानवविशेषे ॥१०६॥
 धेनुकं करणे स्त्रीणां धेनूनामपि संहतौ ।
 नर्त्तकः केलके पोटगल चारणयो र्नटे ॥ १०७ ॥
 नर्त्तकीलासिकायाञ्च करेण्वामपि येऽपिति ।
 नग्रिकाऽपिकुमार्यां स्यात्पुमान् क्षपणवन्दिनैः ॥१०८॥
 नरकः पुसि निरयदेवारातिप्रभेदयोः ।
 नन्दको हरिखड्गे च हर्षके कुलपालके ॥ १०९ ॥
 नालीकः शरशल्यास्त्रेऽप्यवज्जपण्डे नपुंसकम् ।
 नायको नेतरि श्रेष्ठे द्वारमध्यमणावपि ॥११०॥
 निर्मोको मोचने व्योम्नि सन्नाद्ये सर्पकञ्चुके ।
 नीलिका नीलिनी-क्षुद्रोग-सेफालिकासु च ॥१११॥
 पराकस्तु व्रते खड्गे प्रसेकः सेचने च्युतौ ।
 प्रतीकोऽवयवेऽपि स्यात्प्रतिकूलविलोमयोः ॥११२॥
 पद्मकं स्यात्पद्मकाष्ठविन्दुजालकयोरपि ।
 पक्षकस्तुपुमान् पार्श्वद्वारे च पार्श्वमात्रके ॥ ११३ ॥
 पत्न्यङ्गी मञ्चपर्यङ्कवृषीपर्यस्तिकासु च ।
 पताका वैजयन्त्याञ्च सौभाग्यनाटकाङ्गथैः ११४॥
 पातुकः पतयालौ स्यात्प्रपातजनहस्तिनैः

प्राणकः सत्वजातीये जीवकद्रुमचेलयोः ॥११५॥
 पाटकः स्यान्नहाकिष्कौ कटकान्तरवाद्ययोः ।
 अक्षादिचालने मूलद्रव्यापचयवेधसोः ॥ ११६ ॥
 पालङ्कः शक्तकीशाकभेदयोः प्राजिपक्षिण ।
 पावकोऽग्रौ सदाचारे वङ्गिमन्ये च चित्रके ॥११७॥
 भस्मातके विडङ्गे च प्रियकः पीतशालके ।
 नीपे चित्रमृगे चालौ प्रियङ्गौ कुङ्कुमेऽपि च ॥११८॥
 पिण्याकोऽस्त्री तिलकस्त्रे हिङ्गुवाह्लीकसिल्लके ।
 पिनाकोऽस्त्री रुद्रचापे पांशुवर्षत्रिशूलयोः ॥११९॥
 पिटकस्त्रिषु विस्फोटे मञ्जुपायां पुनः पुमान् ।
 पिष्टको घृतपूपादौ नेत्ररोगान्तरेऽपि च ॥१२०॥
 प्लवकः क्रमिभेदे प्रस्तरभेदे च मणिदोषे ।
 रोमाञ्चे हरिताले गजान्नपिण्डे च गन्धर्वे ॥१२१॥
 पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्घेपे भक्तसिक्वके ।
 पुष्पकं रीतिका-नेत्ररोगयो रत्नकङ्कणे ॥१२२॥
 कुबेरस्य विमाने च काशीशि च रसाञ्जने ।
 लौहकांस्ये मृदङ्गारशकव्याञ्च नपुंसकम् ॥१२३॥
 स्यात् पुत्रिका पुत्तलिकादुद्विचेर्यायहृत्तके ।
 ना पुत्रेशरभे धूर्त्तेशैलवृत्तप्रभेदयोः ॥१२४॥

पूर्णकः स्वर्णचूडे स्यान् नासाक्खिन्यान्तु पूर्णिका ।
 पृदाकु वृश्चिके व्याघ्रे सर्पचित्रकयोः पुमान् ॥१२५॥
 पृथुकः पुंसि चिपिटे शिशौ स्यादभिधेयवत् ।
 पेचको गजलाङ्गुलमूलोपान्ते च कौशिके ॥१२६॥
 पेटकः पुस्तकादीनां मञ्जुपायां कदम्बके ।
 वल्मीको रोगभेदे च नाकौ च पुन्नपुंसकम् ॥ १२७ ॥
 वन्धूकं वन्धुजीवे स्याद् वन्धूकः पीतशालके ।
 वन्धुसं स्याद् विनिमये पुण्यत्यां स्यात् तु वन्धुकी ॥१२८॥
 बज्रकः कर्कटे चार्के दातृहे जलखातके ।
 बराकः शङ्करे पुंसि गोचनीयेऽभिधेयवत् ॥१२९॥
 बालकस्तु शिशावज्ञे बालधौ हयहस्तिनोः ।
 अङ्गुरीयकह्रीवेरवलये पुंसि बालिका ॥१३०॥
 बालायां बालुका पत्रकाहले कर्णभ्रुपणे ।
 वारकोऽश्रुगतौ पुंसि वाच्यवत्स्यान् निषेधके ॥१३१॥
 बालुका सिकतासु स्याद् बालुकस्त्वेन बालुके ।
 भस्मक रोगभेदे स्याद् विडङ्गकलधौतयोः ॥ १३२ ॥
 भ्रामको जम्बुके धूर्ते चर्यावर्ताग्नभेदयोः ।
 भ्रानाङ्कः करपत्रे स्यात् शाकभेदे च गेहिले ॥१३३॥
 महालक्षणमम्यन्नपुरुषे कच्छपे हरे ।
 भूमिका रचनायां स्याद् वेगान्तरपरिग्रहे ॥१३४॥

भूतोकमपि भूनिम्बे दीप्यभूसृष्टे कप्तृणे ।
 मधुका मधुपर्णां स्त्री मधुकं क्लीतके खगे ॥१३५॥
 वन्द्यन्तरे ना मशको रोगकोटप्रभेदयोः ।
 मण्डूकः शोणके मुन्यन्तरे स्याद् गूढवर्चसि ॥१३६॥
 मण्डूकपर्णां मण्डूकी मल्लिको हसभिद्यपि ।
 मल्लिका त्वणशून्येऽपि मीनमृत्यात्रभेदयोः ॥१३७॥
 मामकः स्यान् मदीयार्थे त्रिषु पुंसि तु मातुले ।
 मातृका घातृका मात्रो देवीभिर्दण्डमालयोः ॥१३८॥
 मालिका सप्तना पृथ्वी-ग्रीवालङ्कारणेषु च । । ।
 पुष्यमाल्ये नदीभेदे पक्षिभेदे तु मालिकः ॥१३९॥
 मेचकस्तु मयूरस्य चन्द्रके श्यामले पुमान् ।
 यद्युक्ते वाच्यवत् क्लीव स्रोतोञ्जनान्धकारयोः ॥१४०॥
 मोचकः कदलोशियुनिर्माचकविरागिपुं ।
 मोदकः खाद्यभेदेऽस्त्री हर्षके पुनरन्यवत् ॥१४१॥
 यमकं यमजे शब्दालङ्कारे पुंसि संयमे ।
 याजकस्तु गजे राज्ञो याज्ञिकेऽप्यथ याज्ञिकः ॥१४२॥
 याजके च कुये चाथ युतकं संगये युगे ।
 नारीवस्त्राञ्चले युक्ते चलनाये च यौतके ॥१४३॥
 यूथिका स्नानके पुष्यविशेषेऽपि च योपिति
 रसिका स्त्री रसालेक्षुरसयाः सरसे त्रिषु ॥१४४॥

रक्तकोऽम्बानवन्धूकरक्तवंस्तानुरागिषु ।
 राजिकाऽपि च क्केदारे राजसर्पपरेखयोः ॥१४५॥
 रात्रकं पञ्चरात्रे ना वेग्यावेश्माब्दवासिनि
 रुचको वीजपुरे च निष्के दन्तकपोतयोः ॥१४६॥
 न द्वयोः सर्जिकाचारेऽप्यथाभरणमाल्ययोः ।
 सौर्वचलेऽपि माङ्गल्यद्रव्ये चाप्युत्कटेऽपि च ॥१४७॥
 रुण्डिका द्वारपीपद्याञ्च दूतिकायां रणक्षितौ ।
 रूपकं नाटके मूर्त्ते काव्यालङ्करणेऽपि च ॥१४८॥
 रेणुकापि हरेणौ च जामदग्न्यस्य मातरि ।
 लम्पाको लम्पटे देशे लासको लास्यकारिणि ॥१४९॥
 मयूरे लसके चाय लूणको भिदिते पशौ ।
 लोचको मांसपिण्डेऽक्षितारकायाञ्च कज्जले ॥१५०॥
 ललाटाभरणे स्त्रीणां कदलीनीलवस्त्रयोः ।
 निर्व्वुद्धौ कर्णपूरे च मौर्व्वजां भ्रूस्लयचर्माणि ॥१५१॥
 यस्तुकं रौमके पुंसि शिवमल्ल्यर्कपर्णयोः ।
 वर्णकश्चरणे स्त्री तु चन्दने च विलेपणे ॥१५२॥
 द्वयोर्नील्यादिषु स्त्री स्यादुत्कर्षे काञ्चनस्य च ।
 वर्त्तकस्तु खुरेऽथस्य विषगे वर्त्तिका द्वयोः ॥१५३॥
 वञ्चकस्तु खले घूर्त्ते गृहवभ्रौ च जम्बुके ।
 व्यनीव्रमप्रियाकार्यवैलक्ष्येऽपि पीडने ॥१५४॥

ना नागरेऽथ वाल्मीकं वाल्मिकं धीर हिङ्गुनाः ।
द्वावेतौ पुंसि देशस्य प्रभेदे तुरगान्तरे ॥१५५॥
वार्द्धकं वृद्धसङ्घाते वृद्धस्य भावकर्मणोः ।
वार्षिकं त्रायमाणायां क्लीबे वर्षाभवे त्रिषु ॥१५६॥
वालकोऽस्त्री पारिचार्यं त्रिषु स्याद्ङुरीयके ।
वितर्कस्तु पुमानूहे संशये च निगद्यते ॥१५७॥
विपाकः पचने खेदे कर्मणो विसदृक्फले ।
विवेकः स्याज्जलद्रोण्यां पृथग्भावविचारयोः ॥१५८॥
वृश्चिकस्तु दुणे राशौ शूककीटौपधीभिदोः ।
वृषाङ्गः शङ्करे साधौ भल्लातकमहोत्तयोः ॥१५९॥
वैजिक शिशुनैले स्याद् द्वेतौ सद्योऽङ्कुरे तु ना ।
शलाका शल्यमदनशारिकाशल्लकीषु च ॥१६०॥
ह्रस्वादिकाठीशरयोः शल्लकी पशुवृत्तयोः ।
शम्बुको गजकुम्भाये घोङ्गे च शूद्रतापसे ॥१६१॥
जलजन्तुविशेषे च शम्बूका न नपुंसके ।
शङ्खकं बलये कम्बावस्त्री पुंसि शिरोरुजि ॥१६२॥
शार्ककः स्याद् दुग्धफेनशर्करापिण्डयोः पुमान् ।
शिण्डुकः शिशुमारे स्याद् वालकोलुपिनोरपि ॥१६३॥
शीतकः शीतकाले च सृस्थिते दीर्घह्रस्विणि ।
शूककः प्रावटेऽपि स्याद् रसेऽपि परिकीर्तितः ॥१६४॥

सस्यको मणिभेदेऽसौ सम्पर्को मेलके रतौ ।
 सम्पाक स्तार्किके धृष्टे त्रिषु ना चतुरङ्गुले ॥१६५॥
 स्यमीका नीलिकाया स्त्री स्यमीको नाकुवृक्षयोः ।
 स्वस्तिको मङ्गलद्रव्ये चतुष्क गृहभेदयोः ॥१६६॥
 सरकोऽस्त्री सीधुपाने सीधुपात्रेषु सीधुनेः ।
 अर्च्छिन्नाध्वगपङ्क्तौ च सायकः शरखङ्गयोः ॥१६७॥
 स्यासकः पुंसि चार्च्चिके जलादेरपि बुद्बुदे ।
 स्रचकः सीवनद्रव्ये बोधके पिशुने शुनि ॥१६८॥
 श्रौतौ काके स्रतकोऽस्त्री पारदे न द्वयोज्जनौ ।
 स्रदाकुर्नाऽनिले वज्रे ज्वलने प्रतिस्वर्यके ॥१६९॥
 सेवकस्तु प्रसेवे ना वाच्यलिङ्गोऽनुजीविनि ।
 सेचकस्तु पुमान् मेघे वाच्यलिङ्गस्तु सेक्तारि ॥१७०॥
 सैनिकः सैन्यगच्छे च स्यात् सेनासमवेतके ।
 दारवाः कितवे चौरि गद्यविज्ञानभेदयोः ॥१७१॥
 उडुको वाद्यभेदे च मत्तदात्यूरपक्षिणि ।
 हेरुको बुद्धभेदे स्यान् महाकानगणेऽपि च ॥१७२॥

कचतुष्कम् ।

भवेदलिमको भेके पिकेऽनौ पद्मकेशरे ।
 मधूकेऽप्यथान्त्रिको मृङ्गको किलकुक्षुरे ॥१७३॥

अङ्गारकः कुजेऽपि स्याद् दग्धकाष्ठे कुरुण्टके ।
 भवेद्दङ्गारिका चेत्तुदण्डे किशुककोरके ॥१७४॥
 स्यादश्वन्तकमुद्धाने मल्लिका च्छदनेऽपि च ।
 आकल्पक स्तमोमोहग्रन्थिपूत्कलिकामुद्रो' ॥१७५॥
 आक्षेपकोऽनिलव्याधौ व्याधे निन्दाकरेऽपि च ।
 भवेदाखनिकश्चैरे शूकरे मूषिकेऽपि च ॥ १७६ ॥
 कथितोत्कलिकोत्कण्ठाहेलासलिलवीचिषु ।
 ण्डमूकोऽन्यलिङ्गः स्यात् शठे वाक्श्रुतिवर्जिते ॥१७७॥
 कठिन्नकस्तु पर्णासे वर्षाभकारवेक्षयोः ।
 कपर्दको वराटे स्याज्जटाजूटे च धूर्जटेः ॥१७८॥
 कर्कटकः स्यान् मालूरकाद्रवेयप्रभेदयोः ।
 कलेविङ्कः पुमान् ग्रामचटकेऽपि कलिङ्गके ॥ १७९ ॥
 कनीनिका तारकेऽदृष्ट्या स्यात् कनिष्ठाङ्गुलावपि ।
 कापटिकोऽन्यमर्माज्ञे ह्यात्रे पुंसि शठे त्रिषु ॥ १८० ॥
 काकरुको नग्नदम्बस्त्रीजितोत्कभीरुषु ।
 निःसे कुरुवकः शोणान्त्लानश्लिषटीप्रभेदयो' ॥१८१॥
 कुरुण्टकः पीतपुष्पान्त्लानश्लिषिटकयोः पुमान् ।
 छकवाकु र्मयूरेऽपि सरटे चरणायुधे ॥ १८२ ॥
 कोपातका कचे पुंसि पटोल्या घोषके स्त्रियाम् ।
 अथ कौकुटिकोऽदूरप्रेरिता-ऽक्षे च दाम्भिके ॥ १८३ ॥

कौलेयकः सारमेये कुलीनेऽथ खरालिकः ।

ग्रामणीभण्डनाराचेऽप्युपधाने च पुस्त्यम् ॥ १८४ ॥

भवेद् गुणनिका नृत्ये शून्याङ्के पाठनिश्चितौ ।

गोकण्टको गोक्षुरके स्यपुटे गोखुरेऽपि च ॥ १८५ ॥

गोमेदकं पीतमणौ काकोले पत्रकेऽपि च ।

स्याद् गोकुलिको वलिरे पङ्कस्यगवोपेक्षके ॥ १८६ ॥

अथ घर्घरिका चुद्रघण्टावादित्रदण्डयोः ।

चर्चरीको महाकाले केशविन्यासशाकयोः ॥ १८७ ॥

चण्डालिका किन्नरायामुमायामोपधीभिदि ।

अथ चातुरको चक्रगण्डौ पुस्त्यभिधेयवत् ॥ १८८ ॥

गोचरे लोचनस्यापि चाटुकारे नियन्तरि ।

जर्जरीकं वङ्गच्छिद्रे जरातुरेऽपि वाच्यवत् ॥ १८९ ॥

जीवन्तिका गुडूच्याञ्च जीवाख्यशाकवन्दयोः ।

जैवाढकः पुमान् सोमे दीर्घायुः कृशयोस्त्रिपु ॥ १९० ॥

तर्त्तरीकं वह्नित्रे स्यान् न द्वयोः पारगे त्रिपु ।

तिक्तशाकस्तु खदिरे वरुणे पत्रसुन्दरे ॥ १९१ ॥

त्रिवर्णकं गोक्षुरके त्रिफलायां कटुत्रिके ।

दलाढकः स्वयं जाततिले प्रश्रगाञ्च गैरिके ॥ १९२ ॥

फेनखातकयोर्नागकेशरे च महत्तरे ।

दन्दशूकस्तु पुलिङ्गौ राक्षसे च सरीसृपे ॥ १९३ ॥

दासेरकस्तु करभे दासीपुत्रे च धीवरे ।
 नियामकः कर्णधारे पीतवाहे नियन्तरि ॥ १८४ ॥
 निश्वारकः पुरीषस्य क्षये स्वैरे समोरणे ।
 निर्ग्रन्थकः स्यात् क्षपणे निषफलेऽप्यपरिच्छदे ॥ १८५ ॥
 प्रचलाकः शराघाते शिखण्डे च भुजङ्गमे ।
 प्रकीर्णक चामरे स्याद् विस्तारे ना तुरङ्गमे ॥ १८६ ॥
 पञ्चालिका स्त्रियां वस्त्र पुत्रिकागीतिभेदयोः ।
 भवेत् पुमान् प्रापणिको गन्धविक्रयिणि द्विजे ॥ १८७ ॥
 स्यात् पिप्पलक वक्षोजवृन्ते सीवनसूत्रके ।
 पिण्डीतकः स्यात् तगरे भद्रनाख्यमहीरुहे ॥ १८८ ॥
 अथ पुष्यलको गन्धमृगे क्षपणकीलयोः ।
 पुण्डरीक सीताम्बोजे सितच्छत्रे च भेषजे ॥ १८९ ॥
 पुंसि व्याघ्रेऽग्निदिङ्नागे कोपकारान्तरेऽपि च ।
 भवेत् पूर्णानक वर्द्धापने च पटहेऽपि च ॥ २०० ॥
 फर्फरीकश्चपेटे स्यात् फर्फरीकन्तु मार्दवे ।
 बलाहको गिरौ मेघे दैत्यनागविशेषयोः ॥ २०१ ॥
 वराटकः पद्मबीजकोपे रज्जौ कपर्दके ।
 वकेरुका बलाकाभिदातयेन्मिश्रशाखयोः । २०२ ॥
 वरण्डकस्तु मातङ्गवेद्या यौवनकण्टके ।
 वर्तुलेऽथ वाणिजिको बाडयाग्नौ वर्णज्यपि ॥ २०३ ॥

कपञ्चकम् ।

अनेङ्गमूक उद्दिष्टः शठे वाक्श्रुतिवर्जिते ।
 स्यादाच्छुरितर्कं हासनखराघातभेदयोः ॥ २२४ ॥
 उपकारिकोपकर्त्यां पिष्टभेदे नृपालये ।
 कक्षावेक्षक इत्येष शुद्धान्ताद्यानपालयोः ॥ २२५ ॥
 रङ्गाजीवे कवौ पिङ्गे दाःस्थेऽथ कटखादकः ।
 खादके काचकलसे बलिपुष्टे च जम्बुके ॥ २२६ ॥
 कृमिकण्टकन्तु चित्राङ्गविडङ्गोडुम्बरेषु च ।
 गोजागरिकं मङ्गले पुंसि स्यात् कण्टकारके ॥ २२७ ॥
 चिलमीलिका तु कण्ठीभेदे खद्योतविद्युतोः ।
 अथो जलकरङ्गुः स्यान् नारिकेलफलेऽम्बुजे ॥ २२८ ॥
 शङ्खे जललतायाञ्च वारिवाहे च कीर्तितः ।
 जलतापिक इनीशकाकोचिमत्स्ययोः पुमान् ॥ २२९ ॥
 नवफलिका स्त्रोन्व्ये (नव) जातरजोऽङ्गनायाञ्च ।
 नागवारिक उद्दिष्टो राजकुञ्जर हस्तिपे ॥ २३० ॥
 गणस्यराजे गरुडे चित्रमेखलकेऽपि च ।
 स्याद् व्रीहिराजिकः कद्दुधान्यचीनकधान्ययोः ॥ २३१ ॥
 व्यवहारिका स्यात् लोकयात्रासम्मार्जनीद्गुटे ।
 शतपर्बिका टर्बिमां वनायापि गोपिणि ॥ २३२ ॥

शीतचम्पक इत्येष स्यादातर्पणदीपयोः ।

सुवसन्तक आख्यातो वासन्त्यां मदनीत्सवे ॥ २३३ ॥

स्याद् हेमपुष्पिका यूथ्यां चम्पको हेमपुष्पकः ।

कपट्कम् ।

ग्राममङ्गुरिका ग्रामयुद्धे शृङ्गीश्रुपे स्त्रियाम् ॥ २३४ ॥

मातुल-पुत्रक इत्यपि मातुल तनये च फले धूर्त्तस्य ।

मदनशलाका कामोद्दीपणभैषज्यशारिकयोः ॥ २३५ ॥

वर्णविलोडक एष श्लोकस्तेनेच सन्धिचैरे च ।

सिन्दूरतिलक खक्तो मर्तङ्गजे स्त्रीतुकामिन्याम् ॥ २३६ ॥

इति कान्तवर्गः समाप्तः ।

खैककम् ।

खमिन्द्रिये पुरे क्षेत्रे शून्ये विन्दौ विद्यायसि ।

सवेदने देवलोकेशर्मण्यपि नेपुसकम् ॥ १ ॥

खदिकम् ।

नखी स्त्रीक्लीबयोः शुक्तौ नखरे पुन्नपुसकम् ।

न्युद्ध सम्यङ्मनोजे च साम्नः षट्प्रणवेऽपि च ॥ २ ॥

प्रेङ्खा पर्यटनेऽप्यशगतौ सवेशनान्तरे ।

मुखनि सरणे वक्त्रे प्रारम्भोपाययोरपि ॥ ३ ॥

सन्ध्यन्तरे नाटकादौः शब्देऽपि च नपुंसकम् ।
 लेखो लेख्ये सुरे लेखा लिपिराजिकयोरपि ॥ ४ ॥
 विद्धोऽय्यगतिभेदेऽपि शूकशिम्वपाञ्च नर्त्तने ।
 शङ्खः कम्बौ न योपिन्ना भालास्थिनिधिभिन्नखे ॥ ५ ॥
 शाखा पक्षान्तरे वाहौ वेदभागद्रुमाङ्गयोः ।
 शिखा शाखावर्द्धिचूडालाङ्गलिक्य-ऽयमात्रके ॥ ६ ॥
 चूडामात्रे शिखायाञ्च ज्वालायां प्रपदेऽपि च ।
 सखा मित्रे सहायेना वयस्यायां सखी मता ॥ ७ ॥
 सुखं शर्माणि नाके च सुखा पुर्यां प्रचेतसः ।

खत्रिकम् ।

गोमुखं कुटिलागारे वाद्यभाण्डे च लेपने ॥ ८ ॥
 पुंसि मातलिपुत्रे च मद्यादेवगणान्तरे ।
 त्रिशिखा राक्षसे क्लीवं त्रिशूले मण्डलान्तरे ॥ ९ ॥
 दुर्मुखः कपिभिन्नागभिदोर्ना मुखरे त्रिपु ।
 प्रमुखः प्रथमे श्रेष्ठे मयूखः किरणोऽपि च ॥ १० ॥
 ज्वालायामपि शोभायां विशिखस्तोमरे शरी ।
 विशिखा तु खनित्रपाञ्च रथ्यानालिकयोरपि ॥ ११ ॥
 विशाखस्तर्कके स्कन्दे स्त्रियामृत्ते कठिन्नके ।
 वैशाखा मासभेदे स्थान् मन्याने च प्रकीर्त्तितः ॥ १२ ॥
 सुमुखस्तार्क्ष्यतनये शाकनागप्रभेद्योः ।

खचतुष्कम् ।

भवेदग्निमुखो देवे विप्रे भक्तान्तके स्त्रियाम् ॥ १३ ॥
 अथाग्निमुखमुद्दिष्टं कुसुम्भे कुङ्कुमेऽपि च ।
 लाङ्गलिकाख्यौपधौ च विशल्यायाञ्च योषिति ॥ १४ ॥
 इन्दुलेखाऽमृतासोमलता शशिकलासु च ।
 अथ बहुशिखा स्त्री स्यादुच्चटायां शिशौ त्रिषु ॥ १५ ॥
 महाशङ्खो मानुपास्थिसह्याभेदालिकेषु च ।
 भवेद् व्याघ्रनखं कन्दगन्धद्रव्यविशेषयोः ॥ १६ ॥
 नखचतान्तरे क्लीवं शिलीमुखोऽलिकाण्डयोः ।
 शशिलेखा कलाभागे गुडूचीवृत्तभेदयोः ॥ १७ ॥
 भवेत् स्वस्तिमुखो लेखे ब्राह्मणे वन्दिनि त्रिषु ।

खपञ्चकम्

मलिनमुखोऽग्नौ गोलाङ्गुले पुंसि त्रिषु क्रूरे ॥ १८ ॥
 शीतमयूख चन्द्रे घनसारे चापि पुंलिङ्गः ।
 सर्वतीममुख उग्रे च चैत्रजब्रह्मणोः पुमान् ॥ १९ ॥
 नपुंसकन्तु पानीये सुरवर्त्मन्यपि स्मृतम् ।

खान्तवर्गः समाप्तः ।

गौककम्

गौः. स्वर्गे च बलोवर्द्धे रग्ने च कलिशे यमान ।

स्त्री सौरभेयीदृग्वाणदिग्वाग्भूष्यप्सु भूमि च ॥२॥
 गायत्र्यामपि गम्भीरे जगत्यां भुवने जने ।
 गोगणेशे च नाके च वियत्यपि पुमानयम् ॥२॥
 गः सुमेरौ समाख्यातो गायत्रीगीतयोः पुमान् ।
 गन्धर्वेषु चापि गः ख्यातो गायकै चाभिधेयवत् ॥३॥

गदिकम्

अगो महीरुचे शैले भास्करे पवनाशने ।
 अङ्ग गात्रे प्रतीकोपाययोः पुभूमि नीवृति ॥ ४ ॥
 क्लीवैकत्वे त्वप्रधाने त्रिष्वङ्गवति चान्तिके ।
 इङ्गः स्यादङ्गुते ज्ञाने जङ्गमेङ्गितयोरपि ॥५॥
 खगः सूर्ये ग्रहे देवे मार्गणे च विद्वङ्गमे ।
 खङ्गो गण्डकशृङ्गासि-बुद्धभेदेषु गण्डके ॥ ६ ॥
 गाङ्गस्तु गङ्गासम्भूते त्रिषु भीष्मे गुहे पुमान् ।
 चङ्गस्तु शोभने दक्षे टङ्गाऽस्त्री स्यात् खनित्रके ॥७॥
 खङ्गभेदे च जङ्गायां त्यागो दाने च वर्जने ।
 तुङ्गी निशावर्चरयोः पुत्रागनगयोः पुमान् ॥ ८ ॥
 उन्नते त्रिषु दुर्गोमान्दीन्योः स्त्री दुर्गमे त्रिषु ।
 नागं नपुसके रङ्गे सीसके करणान्तरे ॥ ९ ॥
 नागः पन्नगमातङ्गक्रूरचारिषु तोयदे ।
 नागकेशर-पुत्राग-नागदन्तकमुस्तके ॥१०॥

देहानिलप्रभेदे च श्रेष्ठे स्यादुत्तरस्थितः ।
 पिङ्गा गौरचनाहिङ्गुनालिकाचण्डिकासु च ॥११॥
 पिङ्गी शम्यां पिशङ्गे ना वालके तु नपुंसकम् ।
 पूगस्तु क्रमुके वृन्दे फल्ग्वसारेऽभिधेयवत् ॥१२॥
 नदीभेदे मलय्यां स्त्री भंगो जयविपर्यये ।
 भेदरोगतरङ्गेषु भङ्गा सस्यान्तरे स्त्रियाम् ॥१३॥
 भगं स्त्रीयोनिवीर्येच्छो ज्ञानवैराग्यकीर्त्तिषु ।
 माहात्म्यैश्वर्ययत्नेषु धर्मे मोक्षे च ना रवौ ॥१४॥
 भागो ह्यपार्द्धके भाग्यैकदेशयो भृङ्गुः पुमान् ।
 मुनौ हरे तटे शुक्रे भृङ्गो धूम्याटपिङ्गयोः ॥१५॥
 मधुव्रते भृङ्गराजे पुंसि भृङ्गं गुडत्वचि ।
 भोगः सुखे धने चाहेः शरीरफणयोरपि ॥ १६ ॥
 पालनेऽभ्यवहारे च योपिदादिभृतावपि ।
 मार्गो मृगमटे मार्गशीर्षे चान्वेपणाध्वनोः ॥१७॥
 मृगः पशौ कुरङ्गे च करिनक्षत्रभेदयोः ।
 अन्वेपणे च याच्नायां मृगी तु वनितान्तरे ॥१८॥
 युगो रघुहलाद्यङ्गेन द्वयोस्तु ह्यनादिषु ।
 युग्मे हस्तचतुष्केऽपि वृद्धिनामौपधेऽपि च ॥ १९ ॥
 योगोऽपूर्वार्थसम्प्राप्तौ सङ्गतिध्यानशुक्तिषु ।
 वपुःस्वैर्ये प्रयोगेऽपि विष्कम्भादिषु भेषजे ॥ २० ॥

विश्रम्भघातके द्रव्योपायसन्नचनेष्वपि ।
 काम्मणेऽपि च रङ्गा नारागे नृत्ये रणक्षितौ ॥२१॥
 अस्त्री त्रपुणि रागस्तु मात्स्यर्ये लोहितदिपु ।
 क्लेशादावनुरागे च गान्भारादौ नृपेऽपि च ॥२२॥
 रोगः कुष्ठौपधे व्याधौ लङ्गस्तु सङ्गपिङ्गयोः ।
 लिङ्गं चिह्नेऽनुमाने च साह्योक्तप्रकृतावपि ॥२३॥
 शिवमूर्त्तिविशेषे च मेहनेऽपि नपुसकम् ।
 व्यङ्गो भेके च हीनाङ्गे वङ्गं सीसकरङ्गयोः ॥२४॥
 वात्तोकेऽपि च कार्पासे पुंभृन्नि नीवृदन्तरे ।
 वल्गु स्याच्च कागले पुंसि सुन्दरे चाभिभेयवत् ॥२५॥
 वेगो जवे प्रवाहे च मदाकालफलेऽपि च ।
 शार्ङ्गं कार्मुकमात्रेऽपि विष्णोरपि शरासने ॥२६॥
 शृङ्गो वटाम्रतकयोः पर्कव्यामपि च स्त्रियाम् ।
 शृङ्गं प्रभुवे शिखरे चिह्ने क्रोडांस्त्रुयत्तके ॥२७॥
 विषाणोत्कर्षयोश्चाथ शृङ्गः स्यात् कूर्चशीर्षके ।
 स्त्री विषायां स्वर्णमीनभेदयो ऋषभौपधे ॥२८॥
 सर्गस्तु निश्चयाध्यायमोक्षोत्सादात्म दृष्टिपु ।

गत्रिकम्

अथैवो विदुरे कूटे विश्लेषे कठिनाद्यमे ॥२९॥

अनङ्गो मदनेऽनङ्गमाकाशमनसोरपि ।
 अपाङ्गस्वङ्गहीने स्यान्नेत्रान्ते तिलकेऽपि च ॥३०॥
 आभोगो वारुणच्छत्रे पूर्णतायत्नयोरपि ।
 आयोगो व्याप्तौ गन्धमाल्योपहाररोधसोः ॥३१॥
 आशुगो मारुते वाणेऽप्युद्देगं क्रमुकीफले ।
 उद्देगोऽप्युद्दालकोद्देजनोद्गमनेषु च ॥ ३२ ॥
 उत्सर्गः पुंसि सामान्ये न्याये च त्यागदानयोः ।
 कलिङ्गः पूतिकरजे धूम्याटे भूमिनिवृत्ति ॥३३॥
 नदयोः कौटजफले महिलायान्तु योषिति ।
 कालिङ्गो भूमिर्कर्कारौ दण्डांवलभुजङ्गयोः ॥३४॥
 कालिङ्गी राजकर्कव्यां चक्राङ्गी मानसौकसि ।
 चक्राङ्गी कटुरोहिण्यां जिह्मगोऽहौ च मन्दगे ॥३५॥
 तडागोऽस्त्रीजलाधारविशेषे यन्त्रकूटके ।
 तातगुः क्षुद्रताते नाजनकस्य हिते त्रिषु ॥३६॥
 त्रिवर्गो धम्मकामार्थे त्रिफलायां कटुत्रिके ।
 वृद्धिस्थानक्षये सत्त्वरजस्तमसि चेष्यते ॥ ३७ ॥
 तुरगी चाश्वगन्धायां तुरगश्चित्तवाजिनोः ।
 धारङ्गोऽसौ च तीर्थे च नरङ्गस्तु वरण्डके ॥३८॥
 मेघने नदयोश्चाय नारङ्गः पिप्पलीरसे ।
 यमजे प्राणिनि विटेनागरङ्गद्रुमेऽपि च ॥३९॥

निषङ्गः सङ्गे तूणे च निसर्गा रूपसर्गयोः ।
 नीलाङ्गुः स्यात् कृमौ भम्भराल्याञ्च योपिति ॥४०॥
 पत्राङ्गं न द्वयो भूर्जे पद्मके रक्तचन्दने ।
 पन्नग श्लेषधिभेदे तथैव पवनाशने ॥४१॥
 श्रवणो वानरे भेके सारथौ चाष्णदीधितेः ।
 परागः सुमनोरेणौ धूलिस्नानीययोरपि ॥४२॥
 गिरिप्रभेदे विख्यातावुपरागे च चन्दने ।
 प्रयाग स्तीर्यभेदे स्याद् यज्ञे शतमखाश्वयोः ॥४३॥
 प्रयोगः कार्मण्येऽपि स्यात् प्रयुक्तौ च निदर्शने ।
 पतङ्गः शलभे शालिप्रभेदे पत्तिस्वर्ययोः ॥४४॥
 क्लोवं हृते प्रियङ्गुः स्त्री राजीकाकणयोरपि ।
 फलिन्यां कङ्कुसस्ये च पुत्राङ्गस्तु सितात्यले ॥४५॥
 जातीफले नरश्रेष्ठे पाण्डुनागे द्रुमान्तरे ।
 वराङ्गं योनिमातङ्गमस्तकेषु गुडत्वचि ॥४६॥
 भुजङ्गोऽहौ च पिङ्गे च मातङ्गः श्वपचे गजे ।
 मृदङ्गः पटचे घोपे रक्ताङ्गस्तु महीसुते ॥४७॥
 कम्पिले स्त्री तु जीविन्तयां क्लोवं विद्रुमधीरयोः ।
 रघाङ्गं न द्वयो शक्रे ना चक्राङ्गविचङ्गमे ॥४८॥
 वातिगः पुंसि भण्टाक्यां धातुवादिनि चान्यवत् ।
 विडङ्ग स्त्रिय्वभिज्ञे स्यात् क्रमिन्ने पुत्रपुंसकम् ॥४९॥

विसर्गस्तु पुमान् दाने त्यागे च मलनिर्गमे ।
 विसर्जनीयेऽप्ययनभेदेऽपि च विभावसोः ॥५०॥
 विहगस्तु नृलिङ्गः स्यादाशुभे च विहङ्गमे ।
 सर्व्वगं सलिले क्लीवं सर्व्वगः शङ्करे विभौ ॥५१॥
 सम्भोगस्तु पुमान् भोगे सुरते जिनशासने ।
 सारङ्गः पुंसि हरिणे चातके च मतङ्गजे ।
 शरले त्रिपु चेमाङ्गे गरुडे परमेष्ठिनि ॥५२॥

गचतुष्कम् ।

स्यात्पर्व्वगं स्व्यागे मोक्षे कार्यावसाने साफल्ये ।
 अभिपङ्गः पुंलिङ्गः पराभवान्क्रोशशपथेषु ॥५३॥
 ईहामृगस्तु पुंसि स्यात् कौक रूपकभेदयोः ।
 उपरागस्तु पुंसि स्यात् राज्यासेऽर्कचन्द्रयोः ॥५४॥
 दुर्नये यद्दकक्लोले व्यसनेऽपि निगद्यते ।
 उपमर्गः पुमान् रोगभेदोपस्रवयोरपि ॥५५॥
 कटभङ्गस्तु सस्यानां हस्तच्छेदे नृपाल्यये ।
 कृत्रभङ्गेऽपि वैधव्ये स्वातन्त्र्यनृपनाशयोः ॥५६॥
 दीर्घाध्वगः पुमानुष्टे लेखहारि तु भेद्यवत् ।
 मत्तनागेऽभ्रमातङ्गे वात्स्यायनमुनावपि ॥५७॥
 समायोगस्तु सयोगे समवाये प्रयोजने ।
 सम्प्रयोगो रतेऽपि स्याद्व्यित्ते कार्त्तणेऽपि च ॥५८॥

गपञ्चकम् ।

कथाप्रसङ्गो वातुले विपवैद्ये च वाच्यवत् ।

नाडीतरङ्गः काकोले छिण्डके रतछिण्डके ॥५६॥

गान्तवर्गः समाप्तः ।

घैककम् ।

घो घण्टायां घर्घरे ना स्त्रियान्तु काञ्चिघातयोः ।

घद्विकम् ।

अघन्तु व्यसने दु खे दुरिते च नपुंसकम् ॥१॥

अर्घः पूजाविधौ मूल्ये प्युहः स्याद् देहजानित्ते ।

अग्नौ हस्तपुटे शस्तोऽप्योघो वेगे जलस्य च ॥२॥

वृन्दे परम्परायाञ्च द्रुतनृत्योपदेशयोः ।

मघा माघी च नक्षत्रे धान्यभेदे यथाक्रमम् ॥३॥

मघो ह्योपान्तरे मेघो मुस्ताजलदयोः पुमान् ।

मोघोऽस्त्री पाटलायां स्याद् हीननिष्फलयोस्त्रियु ॥४॥

लघुरगुरौ च मनोज्ञे निःसारौ वाच्यवत् स्त्रीवम् ।

शीघ्रे कृष्णागुरुणि च पृक्कानामौपधौ तु स्त्री ॥५॥

स्नाघा स्त्रियां प्रशंसायां परिचर्याभिलाषयोः ।

घत्रिकम् ।

अनघो निर्मलापापमनोज्ञेष्वभिधेयवत् ॥६॥

अमोघः सफले वाच्यवत् स्त्री पथ्या विडङ्गयोः ।
 उल्लाघोऽपि शुचौ कृष्णे दक्षनीरोगयोस्त्रिषु ॥७॥
 काचिघः काञ्चनेऽपि स्यात् क्लेमण्डे मूषिकेऽपि च ।
 निदाघो त्रीयकाले स्यादुष्णस्त्रेदाम्बुनोरपि ॥८॥
 पलिघः काचकलसे घटप्राकारगोपुरे ।
 परिघो योगभेदेऽस्त्रविशेषेऽर्गलघातयोः ॥९॥
 प्रतिघः प्रतिघाते स्यात् क्रोधेऽपि परिकीर्तितः ।
 महार्घस्तु महामूल्ये त्रिषु स्यात् लावके पुमान् ॥१०॥
 सर्वौघो गुरुवेगे च सर्वसन्नहने पुमान् ।

घान्तवर्गः समाप्तः ।

—
 उैककम् ।

उः पुमान् विषये ख्यातः स्रहायां विषयस्य च ॥१॥

उान्तवर्गः समाप्तः ।

—
 चैककम् ।

चश्चण्डेशे पुमानुक्तः कच्छपे चन्द्रचौरयोः ।

चदिकम् ।

१ अर्घ्या पूजाप्रतिमयोः कचः केशे गुरोः सुते ॥१॥

२ वन्धे शुष्कव्रणेषु पुंसि करिष्यान्तु कचः स्त्रियाम् ।

काचः शिक्ये मणौ नेत्ररोगभेदे मृदन्तरे ॥२॥
 काञ्ची स्यान् मेखलादान्नि प्रभेदे नगरस्य च ।
 कूर्चमस्ती भ्रुवोर्मध्ये कठिनश्मशुकैतवे ॥३॥
 क्रौञ्चो ह्योपविशेपे स्यात् पक्षिपर्वतभेदयोः ।
 चर्चा चिन्तास्यासकयोश्चर्चिकायाञ्च योपिति ॥४॥
 चञ्चा तु नलनिर्माणे तृणनिर्मितपूरूपे ।
 चञ्चुस्तोद्व्यां स्त्रियां पुंसि गोनाडीके व्यडम्बके ॥५॥
 त्वक् स्त्री चर्माणि वल्के च गुडत्वचि विशेषतः ।
 न्यङ् नीचमन्दयो नीचः पामरे वामनेऽपि च ॥६॥
 प्राच्छब्दो दिशि देशे च कान्ते च वाच्यलिङ्गकः ।
 पिचुर्ना कुष्ठभेदे च कर्पे त्वलेऽसुरान्तरे ॥७॥
 मोचः शोभाञ्जने पुंसि मोचां शाल्मनिरम्भयोः ।
 रुचिः स्त्री दीप्तौ शोभायामभिव्यङ्गाभिलाषयोः ॥८॥
 रुक् स्त्री शोभाद्युतीच्छासु वचः कीरे वचौपधौ ।
 सारिकायाञ्च वाग्वाचे भारत्यां वचने स्त्रियौ ॥९॥
 वोचिः स्वल्पे तरङ्गे स्यादवकाशे सुखे द्वयोः ।
 शुचि र्ग्रीष्माग्निशृङ्गारेष्वापाढे शुद्धमन्त्रिणि ॥१०॥
 ज्यैष्ठे च पुंसि धवले शुद्धेऽनुपद्यते त्रिपु ।
 शचीन्द्राण्यां शतावर्ष्यां योपितः करणान्तरे ॥११॥
 सूची तु सीवनद्रव्येऽप्याङ्गिकाभिनयान्तरे ।

चत्रिकम्

उदग्दिग्देशकालेषु वाच्यवत्त्रितयेऽव्ययम् ॥१२॥
 कणीचि. पुष्पितलतागुञ्जयोः शकटे स्त्रियाम् ।
 कवचो गर्हभाण्डे च सन्नाहे पटहेऽपि च ॥१३॥
 क्रकचः करपत्रेऽस्त्री ग्रन्थिलाख्यतरौ पमान् ।
 नमुचिस्तु पुमान् दैत्यभेदे कुसुमकार्मुके ॥१४॥
 नाराच्येपणिकाया ना लौहवाणाम्बुहस्तिनाः ।
 प्रपञ्चः सञ्चयेऽपि स्याद् विस्तारे च प्रतारणे ॥१५॥
 प्रत्यग्दिग्देशकालेषु वाच्यवत्त्रितयेऽव्ययम् ।
 मरीचि र्मुनिभेदे ना गभस्तावनपुसकम् ॥१६॥
 मारीचो राक्षसभेदे ककोले याजकदिजे ।
 मरीचो देवताभेदे विपञ्ची केलिवीणयोः ॥१७॥
 विकचः क्षपणे केतौ नाऽकेशे स्फुटितेऽन्यवत् ।
 विरिञ्चिर्ना विरिञ्चश्च वैकुण्ठे परमेष्ठिनि ॥१८॥
 सङ्कोचो मोनभेदे च वन्धे क्लीवन्तु कुङ्कुमे ।
 सम्यक् स्याद् वाच्यलिङ्गस्तु मनोज्ञे सङ्गतेऽपि च ॥१९॥

चचतुष्कम् ।

जलछचि. कङ्कत्रोतिमत्स्यशृङ्गाटयोरपि ।
 शिशुमारो च पुलङ्गे जलौकायाञ्च योपिति ॥२०॥
 मलिङ्गुचो मासभेदे चौरज्वलनयोः पुमान् ।

चपञ्चकम् ।

रतनारीचो नारीणां शीत्कारे च शुनि स्तरे ॥२१॥

चान्तवर्गः समाप्तः ।

कैककम् ।

क्वा क्वाद्ने स्त्रियां ख्याता निर्मलेऽन्यवदिष्यते ।
तरले क्वं प्रकीर्तितं माहात्म्ये परमेऽपि च ॥१॥

क्वदिकम् ।

अच्छः स्फटिकभङ्गूकनिर्मलेष्वच्छमध्ययम् ।
आभिमुख्येऽथ कच्छः स्यादनूपे तुन्नकद्रुमे ॥२॥
नौकाङ्गे पुंसि वाराह्यां चीरिकायाञ्च योपिति ।
स्याद् गुच्छः स्तवके स्तम्बे हारभेदकलापयोः ॥३॥
पिच्छा पूगच्छटाकोपमोचाशात्मनिवेष्टके ।
भक्तसम्भूतमण्डे च पङ्गावश्वपदामये ॥४॥
स्त्रियां पुंसि तु नाङ्गूले न व्रिया वर्द्धचूडयोः ।
पुच्छः पश्चात् प्रदेशेऽपि नाङ्गूले पुच्छमस्त्रियाम् ॥५॥
म्रच्छः पामरभेदे च पापरक्तेऽपभापणे ।

क्वचतुष्कम् ।

महाकच्छस्तु पुंसि स्यात् समुद्रे च प्रचेतसि ॥६॥

छान्तवर्गः समाप्तः ।

जैककम् ।

जो ना मृत्युञ्जये जन्या जातमात्रे जनार्दने ।
 त्वरिते जः समाख्यातो जयने जिः प्रकीर्तितः ॥१॥
 जूस्वरागमने प्रोक्तः सामान्यगमने स्त्रियाम् ।
 जूराकाशे सरस्वत्यां पिशाच्यां जवने स्त्रियाम् ॥२॥

जदिकम् ।

अजम्बागे हरिब्रह्म-धातुस्तरधरे नृपे ।
 अञ्जोऽस्त्री शङ्खे (ना) निचुले धन्वन्तरौ हिमकिरण ॥३॥
 क्लीव पद्मे अथाजिः स्त्री समभूमौ च संग्रामे ।
 ऊर्जस्तु कार्तिकोत्साहबलेषु प्राणनेऽपि च ॥४॥
 कञ्जः केशे विगिञ्चौ च कञ्ज पीयूषपद्मयो ।
 कुजा कात्यायनीदेव्यां कुजो नरकभौमयोः ॥५॥
 कुञ्जो वृक्षप्रभेदे ना न्युञ्जे स्याद् वाच्यलिङ्गकः ।
 कुञ्जोऽस्त्रिया निकुञ्जेऽपि हनौ दन्तेऽपिदन्तिनाम् ६॥
 खञ्जा कन्द प्रभेदे स्त्री कुटिलाङ्गौ तु वाच्यवत् ।
 खजा मन्थे प्रहस्तेऽथ खर्जूः कीटान्तरे स्मृता ॥७॥
 खर्जूरीपादपे कण्ड्यां गजोमाने मतङ्गजे ।
 वास्तुनः स्थानभेदेऽपि गञ्जा खनौ सुरागृहे ॥८॥
 गञ्ज स्यात्पुंसि रीदायाभाण्डागारे तु न स्त्रियाम् ।
 गुञ्जा तु काकचिञ्चाया पटहे च कलध्वनौ ॥९॥

द्विजः स्याद् ब्राह्मणक्षत्रवैश्यदन्ताण्डजेषु ना ।
 द्विजाः भाग्यां हरेणौ च ध्वजः स्यात् शौण्डिके पुमान् ॥१०॥
 न स्त्रियान्तु पताकायां खट्वाङ्गे मेढ्रचिह्नयोः ।
 निजं स्त्रीये च नित्ये च न्युक्तो दर्भमयस्रुचि ॥११॥
 कर्मरङ्गफले क्लीवं कुलाधोमुखयो स्त्रियु ।
 प्रजा लोके च सन्ताने पिञ्जा तलहरिद्रयोः ॥१२॥
 बले क्लीवे बधे पुंसि व्याकुले त्रिखयो भुजा ।
 द्वयोर्वाहौ करे मर्जुः स्त्री शुद्धौ धावकेऽपि च ॥१३॥
 रजो रेणौ परागे स्यादार्त्तवे च गुणान्तरं ।
 रज्जुर्वेण्यां गुणे योपित् राजिः स्त्री पङ्क्तिरेखयोः ॥१४॥
 रुजा रोगे च भङ्गेऽथ लाजः स्यादाद्र्तपङ्कले ।
 नपुसकमुपिरे च स्त्रियां पुंभूमि चाक्षते ॥१५॥
 ब्रजो गोष्ठाध्ववृन्देषु वाजो निखनपक्षयोः ।
 वेगे पुमानय क्लीवे घृतयज्ञान्नवारिषु ॥१६॥
 व्याजः शाव्येऽपदेशेऽथ बीजमङ्कुरकारणे ।
 हेतुतत्त्वाधानशुक्ले सर्जुर्वणिजि विद्युति ॥१७॥
 स्त्रियां सञ्जो विधौ रुद्रे खजः प्रखेदपुत्रयोः ।
 क्लीवं रक्तेऽथ सज्जः स्यात् सन्नद्धे सम्मृते त्रिषु ॥१८॥

जत्रिकम् ।

अण्डजो मृगनाभौ स्यात् सरटेऽहौ खगे प्रये ।

अङ्गजं रुधिरंऽनङ्गकेशपुत्रगदेषु ना ॥१६॥

अम्बुजो निचुले पुंसि कमले तु नपुंसकम् ।

कम्बोजो हस्तिभेदेऽपि शङ्खदेशविशेषयोः ॥२०॥

करजं स्याद् व्याघ्रनखे करञ्जनखयोः पुमान् ।

कारुजः शिल्पिनां चित्रे वामलूरे गजारभके ॥२१॥

काम्बोजोऽश्वान्तरे सोमवक्त्रे पुन्नागपादपे ।

काम्बोजी मापपर्ण्याञ्च बल्लखदिरे स्त्रियाम् ॥२२॥

कुटजो वृक्षभेदे स्याद्गस्त्रद्रोणयोरपि ।

गिरिजं त्वभ्रकेऽपि स्यात् शिलाजतुनि शैलजे ॥२३॥

लोहेऽपि गिरिजा गौरीमातुलुङ्गोश्च योपिति ।

जलज कमले शङ्खे नीरज कुष्टपद्मयोः ॥२४॥

परञ्जसैलयन्त्रे स्याच् कुरिकाफलफेनयोः ।

बलजं गोपुरे क्षेत्रे सस्यसङ्गरयोरपि ॥२५॥

बलजा वरयोपायां यूथ्यामपि वणिक स्त्रियाम् ।

वणिज्यायां पुमान् वाणिजिके च करणान्तरे ॥२६॥

वाङ्गजः क्षत्रिये कीरे स्वयञ्जाततिलेऽपि च ।

भूमिजो नरकेऽङ्गारे सीतादेव्यान्तु भूमिजा ॥२७॥

वनजा मुद्गपर्ण्यां ना मुस्तके क्लीवमम्बुजे ।

सहजस्तु निसर्गे ना सहोत्पत्ते शुनरन्धवन् ॥२८॥

समजः पशुवृन्दे ना विपिने तु नपुंसकम्

सामजस्तु गजे पुंसि सामोत्थे पुनरन्यवत् ॥२९॥
 छिमजा तु शची-गौर्योः पुंसि मैनाकपर्वते ।

जचतुष्कम् ।

अहिभुक् वर्हिणे तार्क्ष्ये पुंसि काश्मीरजं पुनः ।
 कुष्ठकुङ्कुमयोः स्त्रीवैऽतिविषायान्तु योपिति ॥३०॥
 क्षीराब्धिजन्तु सामुद्रलवणे मौक्तिकेऽपि च ।
 पुमान् तुपागकिरणे कमलायान्तु योपिति ॥३१॥
 ग्रहराजो रवौ चन्द्रे जघन्यजः कनीयसि ।
 वृषणे द्विजराजस्तु चन्द्रेऽनन्ते गरुत्मति ॥३२॥
 धर्मारजो यमे बुद्धे युधिष्ठिरनृपे पुमान् ।
 भारद्वाजो गुरोः पुत्रे व्याघ्राटाख्याविहङ्गमे ॥३३॥
 भारद्वाजी वनकार्यास्यां ना द्रोणऋषिभेदयोः ।
 अथ भृङ्गराज उक्तः पत्तिविशेषे च मार्करे भ्रमरे ॥३४॥
 यत्तराट् पुंसि धनद्रे मत्मानां रङ्गचत्वरे ।
 राजराजः कुवेरेऽपि सार्वभौमे सुधाकरे ॥३५॥

जपञ्चकम् ।

चटपभध्वज ण्योऽपि शङ्करे चार्धदन्तरे ।
 मुनिभेषजमागस्त्ये हरीतक्याञ्च लटने ॥३६॥

जपट्कम् ।

वसुन्धरीशज चन्द्रे षड्द्वीऽपि परिकीर्त्तितः ।

जान्तवर्गः समाप्तः ।

—
त्रैककम् ।

शो अण्टीशे सुरगुरौ दैत्यराजे ध्वनावपि ।

अद्विकम् ।

अजझा वाते तारवायौ नष्टेऽपि परिकीर्त्तितः ॥२

अजझाध्वनिविशेषेऽपि स्याद्भुक्कणवर्षणे ।

जान्तवर्गः समाप्तः ।

—
त्रैककम् ।

ॐ पुमान् स्याद् बलीवर्हे शुक्ले वाममतावपि ।

शो ब्रह्म बुध विदत्सु—

अद्विकम् ।

स्यादशो जडमूर्खयोः ॥ १ ॥

प्रज्ञय पण्डिते वाच्यलिङ्गो बुद्धौ तु योपिति ।

राज्ञी राजप्रियायाञ्च भार्याया भास्करस्य च ॥२

सज्ञा नामनि गायत्र्या चेतनारवियोपितो ।

अर्थस्य एचनायाञ्च एस्ताद्यैरपि योपिति ॥ ३ ॥

त्रिकम् ।

कृतज्ञः कुकुरे पुंसि मर्यादन्यभिधेयवत् ।
 क्षेत्रज्ञ आत्मनि च्छेके दैवज्ञो गणके पुमान् ॥ ४ ॥
 दैवज्ञे क्षणिकायां स्त्री सर्वज्ञः शिवबुद्धयोः ।
 ज्ञान्तवर्गः समाप्तः ।

टैककम् ।

टः पुमान् वामने पादे निखनेऽपि क्वचिन्मतः ।
 टा पृथिव्यां करङ्कटो ध्वनौ च परिकीर्तितः ॥१॥
 टो महेत्वर आख्यातः ख्याते त्रिभुवनेऽपि च ।

टद्विकम् ।

अट्टं भक्ते च शुष्के ना चोमेऽत्यर्थे गृहान्तरे ॥२॥
 इष्टमाशंसितेऽपि स्यात् पूजिते प्रेयसि त्रिपु ।
 सप्ततन्तौ पुमान् क्लीवं संस्कारे क्रतुकर्मणि ॥३॥
 इष्टिर्मताभिलाषे च सङ्गहश्लोकयागयोः ।
 कटः श्रेणौ द्वयोः पुंसि क्लिञ्जेऽतिशये शरे ॥४॥
 समये गजगण्डे च पिप्पल्यान्तु कटी मता ।
 कटुः स्त्री कटुरोहिण्यां लताराजिकयोरपि ॥५॥
 नपुंसकमकार्ये स्यात् पुलिङ्गे रसमात्रके ।
 त्रिपु तदन्तु सुगन्धोद्य मत्सरेऽपि खरेऽपि च ॥६॥
 कटन्तु महने कृच्छ्रे क्रुष्टं रोदनरावयोः ।

कुटः कोटे पुमानस्त्री घटे स्त्रीपुसयोगृहे ॥७॥
 कुटी स्यात् कुम्भदास्याञ्च मुरायां चित्रगुच्छके ।
 कूटोऽस्त्री निश्चले राशौ लौहमुद्गरदन्मयोः ॥८॥
 मायाद्रिशृङ्गयोस्तुच्छे सीरावयव-यन्त्रयोः ।
 अनृते चाथ कृष्टिः स्यादाकर्षे स्त्री बुधे पुमान् ॥९॥
 कौटिः स्त्री धनुषोऽग्रेऽथौ सङ्ख्याभेद-प्रकर्षयोः ।
 खटोऽन्धकृप कफयोः प्रहारान्तर-टङ्कयोः ॥१०॥
 खाटिस्त्वसङ्गृहेऽपि स्यात् किण्णे शवरथे स्त्रियाम् ।
 खेटः कफे ग्रामभेदे चर्मण्यस्त्ववति त्रिपु ॥११॥
 अथ गृष्टिः सक्तत्सतगवीवदरयोः स्त्रियाम् ।
 घटः समाधिभेदे भग्निरः कूटकुटेषु च ॥१२॥
 घटा घटन-गोष्ठीभघटनासु च योपिति ।
 घृष्टिः स्त्री घर्षण-सर्द्धा विष्णु क्रान्तासु ना किरौ ॥१३॥
 घोण्टा तु बदरीपूगवृक्षयोरपि योपिति ।
 चटुद्याटौ पिचिण्डेऽथ व्रतिनामासने पुमान् ॥१४॥
 जटालग्रकचे मूले मांस्या सत्ते पुनर्जटी ।
 जुष्टन्तु क्लीवमुच्छिष्टे सेविते वाचलिङ्गकम् ॥१५॥
 झटो निकुञ्जे कान्तारे व्रणादीनाञ्च मार्ज्जने ।
 तटं नपुंसकं क्षेत्रे प्रतीरे तु तट त्रिपु ॥१६॥
 त्वष्टा पुमान् देवशिल्पितर्णोरादित्यभिद्यपि

त्रुटिः स्त्री संशये स्वल्पे हृत्क्षौलाकालमानयोः ॥१७॥
 त्रोटिः स्त्री कट्फले चञ्चुं खगे मीनान्तरेऽपि च ।
 दिष्टं दैवे पुमान् काले दिष्टिर्मुत्परिमाणयोः ॥१८॥
 स्त्रियां दृष्टिः स्त्रियां बुद्धौ लोचने दर्शनेऽपि च ।
 घटो दिव्यतुलायां स्याद् घटी चीरे च वाससः ॥१९॥
 नटी नल्योपधौ स्त्री स्यात् शैलूपाशोकयोः पुमान् ।
 पटश्चित्रपटे वस्त्रेऽस्त्री पियालद्रुमे पुमान् ॥२०॥
 पटुर्दत्ते च नीरोगे चतुरेऽप्यभिधेयवत् ।
 पटोले तु पुमान् क्लीबे क्त्रालवणयोरपि ॥२१॥
 पट्टः पेषणपापाणे व्रणादीनाञ्च वन्धने ।
 चतुष्पथे तु राजादिशासनान्तर-पीठयोः ॥२२॥
 पटिः स्त्री पटभेदे स्याद् वाग्गुलौ कुम्भिकाद्रुमे ।
 पुष्टिः स्त्री पोषणे बुद्धौ फटा तु फणदन्तयोः ॥२३॥
 वटी त्रिपु गुणे पुंसि स्यान् न्यग्रोधकपर्दयोः ।
 भटः स्यात् पुंसि वीरे च विशेष पामरस्य च ॥२४॥
 मृष्टिः स्याद् भर्जने शून्यवाटिकायाञ्च योपिति ।
 म्लिष्टं त्रिष्वव्यक्तवाचि म्लाने मुष्टिर्द्वयोः पले ॥२५॥
 वह्नपाणौत्सरौ यष्टिः पुंसि स्याद् भुजदण्डके ।
 द्वयोर्धारलताभार्ग्यौ र्मधुक्ता-गस्त्रभेदयोः ॥२६॥
 रिष्टं क्षेमे शूभाभावे पुंसि खङ्गे च फेनिले ।

रिष्टिः खड्गे नाऽऽशुभे स्त्री लाटे। देशान्तरेऽंशुके ॥२७॥
 वाटे मार्गे वृत्तिस्थाने स्यात् कुटी-वास्तुनोः स्त्रियाम्।
 विटोऽद्वौ लवणे पिङ्गे मूपिके खदिरेऽपि च ॥२८॥
 विष्टिचिपु कर्मकरे स्त्र्याजूचेतनकर्मसु।
 व्युष्टिः फले समृद्धौ स्त्री व्युष्टं कल्पे त्रिपूपिते ॥२९॥
 सटा जटा-केशरयोः स्फुटो व्यक्तप्रफुल्लयोः।
 व्याप्ते त्रिपु स्फुटि र्यौपित् पाटस्फोटा मयेऽपि च ॥३०॥
 निर्भिन्नकर्कटीसस्येऽपि स्यात् सृष्टसु निर्मिते।
 युक्तनिश्चितयोः प्राज्ये त्रिपु सृष्टि सु निर्मितौ ॥३१॥
 स्वभावे चापि कथिता हृष्टो रोमाश्चितेऽपि च।
 जातहर्षे प्रहसिते विस्मितेऽप्यभिधेयवत् ॥३२॥

टत्रिकम्।

अथटः स्यात् खिले गर्भे कूपे कुहकजीविनि।
 अरिष्टो लशुने निम्बे फेनिले काककङ्कयोः ॥३३॥
 अरिष्टमशुभे तक्ते सृष्टिकागार आसवे।
 शुभे मरणाचक्रे चादिष्टमादेशिते त्रिपु ॥३४॥
 आजप्तोच्छिष्टयोः क्रीवमुत्कटस्त्रीव्रमत्तयोः।
 उद्भटः कच्छपे सूर्ये कर्कटे विहगान्तरे ॥३५॥
 राशिभेदे कुलीरे स्त्री बालुङ्क्यां शास्मलीफले।
 कर्दटः करहाटे स्यात् पङ्कपङ्कारयोरपि ॥३६॥

करटो गजगण्डे स्यात् कुसुम्भे निन्द्यजीविनि ।
 एकादशाहादिश्राद्धे दुर्दुरूटेऽपि वायसे ॥१७॥
 करटो वाद्यभेदेऽथ कार्पटो जतुकार्यिणोः ।
 कीकटः कृपणे निःस्त्रे त्रिपु पुभृन्नि नीवृत्ति ॥३८॥
 कुरुण्टी दारुपुत्र्यां नां श्रिण्व्यम्भानप्रभेदयोः ।
 कुक्कुट्यनृतचर्यायां पुंसि स्यात् चरणायुधे ॥२९॥
 निपाद्शूद्रयोः पुत्रे तृणोत्कायाञ्च कुक्कुभे ।
 कुनटी मनःशिलायां नैपाल्यामपि योषिति ॥४०॥
 कृपीटमुदरे तोये केशटो चर्य्यजौकणे ।
 चर्पटः स्फारविपुले चपेटे पर्पटेऽपि च ॥४१॥
 चक्राटो विषवैद्ये च घूर्त्तदीनारयोरपि ।
 चिपिटः खाद्यभेदे ना त्रिपु पिष्टिकविस्तते ॥४२॥
 चिरण्टी च सुवासिन्यां स्याद् द्वितीयवयःस्त्रियाम् ।
 जकुटं वार्त्ताकुपुष्ये जकुटो मलये शुनि ॥४३॥
 व्यङ्गटं शिष्यभेदेऽपि घौताञ्जन्याञ्च न द्वयोः ।
 त्रिकूटं सिन्धुलवणे त्रिकूटः पर्वतान्तरे ॥४४॥
 त्रिपुटा मल्लिकायाञ्च सूक्ष्मैलात्रिवृतोः स्त्रियाम् ।
 सतीलके च तीरे च त्रिपुटः समुदाहतः ॥४५॥
 द्रोहाटः कथितो गायाम्रभेदे मृगनुव्वके ।
 वैडानव्रतिके चाथ धाराटयातकाययोः ॥४६॥

निर्दृष्टस्तु दयाशून्ये कथिते निष्प्रयोजने ।
परापवादरक्ते च वाच्यलिङ्गोऽयमिष्यते ॥४७॥
निष्कुटस्तु गृहोद्याने स्यात् केदारकपाटयोः ।
पर्कटी नूतनफले पूगादेः श्लक्ष्णपादपे ॥४८॥
परीष्टिः परिचर्यायां प्राक्काम्येऽन्वेषणे स्त्रियाम् ।
पर्पटी पिष्टभेदे स्यात् पर्पटो भेषजान्तरे ॥४९॥
पात्रटः कर्पटे पुंसि कृशे स्यादभिधेयवत् ।
पिच्चटो नेत्ररोगे स्यात् क्लीवं सीसकरङ्गयोः ॥५०॥
वरटो द्वयो र्वरव्यां स्त्री चंस्यां तत्पतौ पुमान् ।
वञ्जटी पण्ययोषायां व्रीहिभेदेऽपि योषिति ॥५१॥
वेकूटः स्याद् वैकटिके मत्स्यभेदे च यूनि च ।
भावाटो भावके साधौ निवेशे कामुके नटे ॥५२॥
भाकूटः शैलश्रपयो भेदे स्यादथ मर्कटी ।
करञ्जभिच्छकशिखेयाः पुंसि वानरलूतयोः ॥५३॥
मोचाटः कृष्णजीरे च रम्भास्त्रि मलयोद्भवे ।
मौरटन्तु भवेद्विष्णुमूलाङ्गोठप्रसूनयोः ॥५४॥
सप्तरात्रात् परक्षीरे मूर्ध्विकायान्तु मौरटा ।
वर्णाटो गायने चित्रकरे स्त्रीकृतजीवने ॥५५॥
विकटा वज्रवाराह्यां त्रिपूरुविकारालयोः ।

शाकटं शकटस्येदमित्यर्थे तस्य वैदरि ॥५६॥

शैलाटो देवले सिंहे शुक्लकाच-किरातयोः ।

संसृष्टं त्रिषु संसर्गे संशुद्धे वसनादिना ॥५७॥

टचतुष्कम् ।

उच्चिद्गतसृणगडमत्स्यकोपनयोः पुमान् ।

करहाटः शिफाकन्दे पद्मस्य मदनद्रुमे ॥५८॥

स्यात्कार्यपुटः क्षणोन्नतानर्थकरेषु च ।

कामकूटस्तु वेद्यायाः प्रियविभ्रमयोः पुमान् ॥५९॥

कुटन्नटन्तु कैवर्त्तौमुस्तके पुंसि शोणके ।

कुण्डकीटस्तु चार्वाकवचनाभिज्ञपूरुषे ॥६०॥

पतितत्राक्षणी पुत्र-दासीकामुकयोरपि ।

खड्गगीटस्तु फलकासिधारव्रतधारिणोः ॥६१॥

गाढमुष्टिः कृपाणे ना कृपणे त्वभिधेयवत् ।

चक्रवाटः क्रियारोहे पर्यन्ते च शिखातरौ ॥६२॥

चतुःपष्टिः कनासह्याभेदयोर्वङ्गुचि स्त्रियाम् ।

नारकीटोऽश्मकीटे स्यात् स्वदत्ताग्निविहन्तरि ॥६३॥

परपष्टः परभृते वारनार्यान्तु योपिति ।

प्रतिकृष्टं मतं गर्भे द्विरावृत्त्या च कर्पिते ॥६४॥

प्रतिदृष्टः प्रेषिते स्यात् प्रत्याख्याते च वाच्यवत् ।

वर्कराटः कटाक्षे स्यात् तरुणादित्यरोचिषि ॥६५॥

नारीपयोधरोत्सङ्ग-कान्तदत्तनखक्षते ।

शिपिविष्टसु खलनौ शिवे दुश्चर्माण स्मृतः ॥६६॥

अथ श्रुतिकटः प्राञ्चलोहेऽहौ पापशोधने ।

टयञ्चकम् ।

दशनोच्छिष्टः पुंसि स्यान् निश्वासाधरचुम्बयोः ॥६७॥

टान्तवर्गः समाप्तः ।

टैककम् ।

ठो मण्डले चन्द्रविम्बे शून्ये च लोकगोचरे ।

ठदिकम् ।

कठो मुनौ तदाख्यातवेदाध्येतज्ञयोः स्वरे ॥१॥

कण्ठो गले सन्निधाने ध्वनौ मदनपादपे ।

काष्ठा दारुहरिद्रायां कालमानप्रकर्षयोः ॥२॥

स्थानमात्रे दिशि च स्त्री दारुणि स्यान् नपुसकम् ।

कुष्ठ रोगे पुष्करेऽस्त्री कुण्ठोऽकर्मण्यमूर्खयोः ॥३॥

कोष्ठः कुसूले चात्मीये मध्ये कुले शृङ्गस्य च ।

गोष्ठं गोस्थानके गोष्ठी सभासंलापयो स्त्रियाम् ॥४॥

ज्येष्ठः श्रेष्ठेऽतिवृद्धे च त्रिषु मासान्तरे पुमान् ।

ज्येष्ठा तु गृहगोधाख्यजन्तुनक्षत्रभेदयोः ॥५॥

निष्ठा निष्पत्तिनाशान्तयाञ्जानिर्वहणेषु च ।

प्रष्टस्त्रिष्वयगे श्रेष्ठे पुंसि चाण्डालि कौषधौ ॥६॥
 पाठश्च पठने ख्यातो विद्वकर्णान्तु योषिति ।
 पृष्टं चरमंगान्त्रेऽपि देहस्यावयवान्तरे ॥७॥
 वणठः स्यादकृतोद्वाहे खर्व्वे कुन्तायुधेऽपि च ।
 शठो मध्यस्यपुरुषे धूर्त्त-धूस्ररयोरपि ॥८॥
 श्रेष्ठो वरे कुवेरे च शोठो मूर्खेऽलसेऽपि च ।
 पष्ठो कात्यायनीतिथ्यो स्त्रिषु पष्ठाञ्च पूरणे ॥९॥
 षठः स्यात्प्रसभे प्रश्रयां हेठो वाधाविहेठयोः ।

ठत्रिकम् ।

अपठुः पुंसि काले च वामे स्यादन्यलिङ्गकः ॥१०॥
 अम्वष्टो देशभेदेऽपि विप्राद् वैश्यासुतेऽपि च ।
 अम्वष्टा चाम्बलोण्यां स्यात्पाठायूतिकयोरपि ॥११॥
 कमठः कच्छपे पुंसि भाण्डभेदे नपुंसकम् ।
 कनिष्ठोऽतियुवात्यल्पानुजे स्त्री दुर्वलाद्भुलौ ॥१२॥
 जरठः कर्कशे पाण्डौ कठिनेऽप्यभिधेयवत् ।
 नर्मठश्चुचुके पिङ्गे प्रतिष्ठा गौरवेक्षिनौ ॥१३॥
 स्याने च यागनिष्पत्ति-चतुरक्षरपद्ययोः ।
 प्रकोष्ठो मणिवन्धस्य कुर्परस्यान्तरेऽपि च ॥१४॥
 भूपकक्ष्यान्तरेऽपि स्याद् वरिष्ठं मरिचेऽपि च ।
 ताम्रे स्त्रीयं तित्तिरौ ना वरोस्तरयोरपि ॥१५॥

मकुष्ठो ब्रीचिभेदे ना मन्थरे पुनरन्यवत् ।

लाघिष्टोऽत्यल्पके भेले वैकुण्ठः कृष्णशक्रयोः ॥१६॥

श्रीकण्ठो देशभिद्युग्रे साधिष्टोऽतिदृढार्ययोः ।

ठचतुष्कम् ।

कलकण्ठः कलध्वाने चंसे पारावते पिके ॥१७॥

कालकण्ठस्तु दात्यूहे कलविङ्के च खञ्जने ।

मयूरे पीतसारे च स्यात् खण्डपरशौ पुमान् ॥१८॥

कालपृष्ठ कर्णचापे पुंसि कङ्कविच्छमे ।

स्याद् दन्तशठो जम्बीरे कपित्थे कर्मरङ्गके ॥१९॥

नागरङ्गेऽपि च पुमान् स्याच्चाङ्गेर्यान्तु योषिति ।

पूतिकाष्ठन्तु सरल-देवदारुमहीरुयोः ॥२०॥

सूत्रकण्ठः पुमान् विग्रे खञ्जरीटकपेऽतयोः ।

चारिकण्ठः पिके पुंसि चारान्वितगले त्रिषु ॥२१॥

ठान्तवर्गः समाप्तः ।

—
उैककम् ।

उः पुमान् वाडवाग्नौ स्याद् डाकिन्यां स्तो निगद्यते ।

उदिकम् ।

अण्डं मुष्के च घेग्नां स्यादिडा तु बुधयोषिति ॥२॥

सौरभेय्याश्च वचने वरुमत्यानपि स्त्रियाम् ।

काण्डः स्तम्भे तरुस्कन्धे वाण्डेऽवसरनीरथोः ॥२॥
 कुत्सिते वृक्षभिन्नाङ्गीवृन्दे रक्षसि न स्त्रियाम् ।
 क्रीडा केलिप्रकारे स्यात् खेलावज्ञानयोरपि ॥३॥
 कुण्डमग्न्यालये मानभेदे देवजलाशये ।
 कुण्डी कमण्डलौ जारात् पतिवत्नीसुते पुमान् ॥४॥
 पिठरे तु न ना च्छेडो ध्वनौ कर्णामये विषे ।
 च्छेडा वंशशलाकायां सिंघनादे च योऽपिति ॥५॥
 लोहितार्कपर्णफले घोषपुष्पे नपुंसकम् ।
 दुरासदे च कुटिले वाच्यलिङ्गः प्रकीर्तितः ॥६॥
 क्रीडः शनौ शृङ्करे ना नपुमानङ्करक्षसोः ।
 खण्डोऽस्त्री शकले नेत्रुविकारमणिदोषयोः ॥७॥
 खडः पानान्तरे भेदे गण्डः स्यात् पुंसि खड्गिनि ।
 ग्रहयोगप्रभेदे च वीथ्यङ्गे पिटकेऽपि च ॥८॥
 विह्ववीरकपोलेषु हयभूषणबुद्बुदे ।
 गडुः पृष्ठगुड्हे कुञ्जे गडो मीनान्तराययोः ॥९॥
 गुडः स्याद् गोलके चस्त्रिसन्नाद्येऽनुविकारयोः ।
 गुडा स्त्रुच्छास्त्र कथिता गुडिकायाञ्च योऽपिति ॥१०॥
 गोण्डः पामरजातौ च वृद्धनाभौ च तद्वति ।
 चण्डो ना तिनित्ताङ्गीवृक्षे यमकिङ्करदैत्ययोः ॥११॥
 चण्डी कात्यायनीदेव्यां हिंन्नकोपनयोऽपितोः ।

चण्डा धनहरोशङ्खपुष्पयोः स्तिष्वतिकोपने ॥१२॥
 तीत्रेऽपि चूडा वडभौ शिखायां बाहुभूषणे ।
 चोडः प्रावरणे भूमि देशभेदे जडा स्त्रियाम् ॥१३॥
 शूकशिख्यां हिमग्रस्तमूकाप्राज्ञेषु तु त्रिषु ।
 ताडस्तु ताडने घोषे मुष्टिमेयवृणादिषु ॥१४॥
 ताडी पत्रद्रुमे चाथ दण्डोऽस्त्री लगुडे पुमान् ।
 व्यूहभेदे प्रकाण्डेऽथे कोणमन्यानयोरपि ॥१५॥
 सैन्ये काले मानभेदे चण्डांशोः पाणिपार्श्विके ।
 दमे यमेऽभिमाने च नाडी नालि व्रणान्तरे ॥१६॥
 शिरायां गण्डदूर्वायां चर्घ्यायां कुहनस्य च ।
 तथा पट्टकालेऽपि नोडं स्थानकुलाययोः ॥१७॥
 पण्डः पण्डे धियि स्त्री स्यात् पाण्डु र्ना नृपतौ सिते ।
 पिण्डो बाले बले सान्ने देहागारैकदेशयोः ॥१८॥
 देहमात्रे निवापे च गोलसिद्धकयोरपि ।
 ओड्रपुष्पे च पुंसि स्यात् क्लीवमाजीवनायसोः ॥१९॥
 पिण्डी तु पिण्डीतगरेऽलाबुखर्जूरभेदयोः ।
 पीडा क्लृपाशिरोमालाऽपमर्हसरलद्रुषु ॥२०॥
 भाण्डं पात्रे वणिङ्मूलधने भूपाश्वभूषयोः ।
 मण्डः पञ्चाङ्गुले शाकभेदे क्लीवन्तु मण्डनि ॥२१॥
 आमलक्यां स्त्रियां मण्डायाऽस्त्रियां सारपिच्छयोः ।

मुण्डो दैत्यान्तरे राज्ञ्यहे नां मुण्डिते त्रिषु ॥२२॥
 मुण्डा मुण्डोरिकायां स्यात् स्त्रियामस्त्री तु मूर्ध्वनि ।
 रण्डा मूपिकपर्ण्यञ्च विधवायाञ्च योपिति ॥२३॥
 रोडः क्षोभे भवेत् पुंसि तत्रै तु वाच्यलिङ्गकः ।
 वण्डा तु पांशुलायां स्त्री त्रिषु हस्तादिवर्जिते ॥२४॥
 व्याडो चिंस्त्रपशौ सर्पे शुण्डा पानगृहे मता ।
 अप्यम्बुहस्तिनोवैश्याहस्तिहस्तसुरासु च ॥२५॥
 शौण्डो मत्ते च विख्यातः पिप्पल्यान्तु भवेत् स्त्रियाम् ।
 पण्डं पद्मदिसङ्घाते न स्त्री स्याद् गोपतौ पुमान् ॥२६॥
 उचिकम् ।

करण्डो मधुकीपासिकारण्डेषु दन्तादके ।
 कुष्माण्डुप्रमायां स्त्री पुंसि कर्कारे च गणान्तरे ॥२७॥
 भ्रूणान्तरेऽथ कोदण्डं चापे ना नीषुदन्तरे ।
 भ्रुव्यथो गारुडं क्षैडमन्त्रे मरुक्तेऽपि च ॥२८॥
 तरण्डो वाङ्गोसूत्रबहुकाष्ठादिके स्रवे ।
 नौकायामपिनस्त्रीस्यात् तिनित्तीडिम्वचिञ्चयोः ॥२९॥
 द्राविडो देशभिज्जाते सङ्घाभिद्वेधमुख्ययोः ।
 निर्गुण्डो नीलगोफाल्यां सिन्धुवारद्रुमेऽपि च ॥३०॥
 प्रचण्डो दुर्व्यहे श्वेतकरवीरे प्रतापिनि ।
 प्रकाण्डो नस्त्री विटपे मूलशाखान्तरे तरोः ॥३१॥

शस्ते पिचिण्ड उदरे पंशोरवयवे पुमान् ।
 पूत्यण्डो गन्धकोटेऽपि तथा जन्वन्तरे पुमान् ॥३२॥
 वरण्डोऽप्यन्तरावेदौ समूहमुखरोगयोः ।
 वारुण्डी द्वारपिण्ड्यां स्त्री फणिनां राजके पुमान् ॥३३॥
 नस्तियां सेकपात्रे च मलेऽक्षः श्रवणस्य च ।
 भेरुण्डा देवताभेदयन्त्रिण्यन्तरयोः स्त्रियाम् ॥३४॥
 भयानके वाचवत् स्यात् मारुण्डः क्रोडः सूर्ययोः ।
 मारुण्डोऽण्डे भुजङ्गीनां मार्गे गोमयमण्डले ॥३५॥
 वरण्डा सारिकावर्तिशस्त्रभेदेषु योपिति ।
 वितण्डा वादभेदे स्यात् कञ्ची शाके शिलाङ्गये ॥३६॥
 करवीर्यामपि स्त्री स्यात् शिखण्डे वर्हचूडयोः ।
 सरण्डस्तु पुमान् धूर्त्ते सरटे भूषणान्तरे ॥३७॥

उचतुष्कम् ।

अपोगण्डन्तु वलिभे विकलाङ्गे शिशावपि ।
 चक्रवाडेऽद्रिभेदे स्यात् चक्रवाडन्तु मण्डले ॥३८॥
 जनरण्डो जलावर्त्ते पयारेणौ भुजङ्गमे ।
 देवताङ्गः सैहिकेये जीमते च ऊतागने ॥३९॥
 अथ वातयुडा वात्यावातशोणितशोरपि ।
 पिच्छलस्फोटिकायाञ्च वामायामपि योपिति ॥४०॥

दान्तवर्गः समाप्तः ।

ढैककम् ।

ढो ढकायां पुमानुक्तः शुनि तस्य च लाङ्गुले ।

ढदिकम् ।

गूढं रहसि गुह्ये च न द्वयो संवृते त्रिषु ॥१॥

दृढं स्थूले नितान्ते च प्रगाढं बलवत्यपि ।

मादिः स्त्री पत्रभङ्गौ च दैन्यस्यापि प्रकाशने ॥२॥

मूढस्तु तन्द्रिते बाले रादा स्त्री सूक्ष्मशोभयोः ।

रूढं जाते प्रसिद्धे च वाढं दृढं प्रतिज्ञयोः ॥३॥

व्यूढः संचतविन्यस्तपृथुलेष्वभिधेयवत् ।

वोढा ना भारिके सूते पण्डः स्यात् पुंसि गोपतौ ॥४॥

आकृष्टाण्डे वर्षवरे तृतीयाप्रकृतावपि ।

सोढा तितिचासंयुक्ते शक्ते चाप्यभिधेयवत् ॥५॥

ढत्रिकम् ।

अधूढा कृतसापत्न्यनार्यामधूढ ईश्वरे ।

आपाढो प्रतिनां दण्डे भासे मलयपर्वते ॥६॥

स्त्री पूर्णिमायामालीढं पादन्यासेऽग्निने त्रिषु ।

उदूढः ऊढं स्थूले स्यादुपोढो निकटोदयोः ॥७॥

प्रगाढं कृच्छ्रदृढयोः प्रमीढो मूत्रिने घने ।

प्ररूढो जठरे बद्धमूले वाहूढ इत्ययम् ॥८॥

वस्ताञ्चले कपाटेऽग्नौ पञ्चरे सम्बलेऽपि च ।

विहृदेऽङ्कुरिते जाते विगूढो गर्हिते त्रिषु ॥८॥
 गुप्तेऽपि त्रिषु संरूढः प्रौढे चाङ्कुरिते त्रिषु ।
 समूढः पुञ्जिते भुम्भे सद्योजातेऽनुपश्रुते ॥९॥

ढचतुष्कम् ।

अध्यारूढः समारूढेऽत्यधिके चाभिधेयवत् ।
 खट्वारूढः श्रिते खट्वामविनीते च वाच्यवत् ॥११॥
 प्रत्यालीढस्तु चरणन्यासभेदेऽशिते त्रिषु ।
 ढान्तवर्गः समाप्तः ।

एककम् ।

णः पुमान् विन्दुदेवे स्याद् भूषणे गुणवर्जिते ।
 पानीयनिलये चापि केचिदाङ्गविषश्चितः ॥१॥
 णद्विकम् ।

अणुव्रीहिविशेषे स्यात् पुंसि सूक्ष्मेऽभिधेयवत् ।
 अणिराणिवदक्षाग्रकोलाश्रिसीमसु द्वयोः ॥२॥
 उष्णेऽग्नौ पुमान् दक्षाणीतयोरन्यलिङ्गकः ।
 ऊर्णा मेपादिलोम्नि म्यादन्तरावर्तके भ्रुवोः ॥३॥
 कर्णः पृथाज्येष्ठपुत्रे सुवर्णासौ श्रुतावपि ।
 क्षणः पर्वोत्सवाव्यापारेषु मानेऽप्यनेहसः ॥४॥
 कणा जीरककुम्भीरमक्षिकापिप्पलीषु च ।

कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे काणः काकैकचतुषोः ॥५॥

कीर्णं कृन्ने च वित्तिने हिंसितेऽप्यभिधेयवत् ।

कुणिसुन्नकवृत्ते ना कुकरे त्वभिधेयवत् ॥६॥

कृष्णः सत्यवतीपुत्रे वायसे केशवेऽर्जुने ।

कृष्णा स्याद् द्रौपदीनीलीकणाद्राक्षासु योषिति ॥७॥

मेचके वाच्यलिङ्गः स्यात् क्लीवं मरिचलोद्ययोः ।

कोणो वाद्यप्रभेदे स्याद् वीणादीनाञ्च वादने ॥८॥

एकदेशे गृक्षांदोनामश्रौ च लगुडेऽपि च ।

गणः प्रमथसह्यौघे चण्डासैन्यप्रभेदयोः ॥९॥

गुणो मौर्व्यामप्रधाने रूपादौ सूद इन्द्रिये ।

त्यागे शौर्यादिसत्त्वादिसन्ध्याद्यावृत्तिरञ्जुषु ॥१०॥

गुक्कादावपि वय्याञ्च गेषु ना गायने नटे ।

घ्राणं क्लीवं नासिकायां घ्राते स्याद् वाच्यलिङ्गकम् ॥११॥

घृणा जगुष्ठा-कृपयोरथ चूर्णो कपहेके ।

चूर्णो धूनौ क्षारभेदे चूर्णानिवासयुक्तिषु ॥१२॥

जर्णयन्त्रे च वृत्ते च जिष्णु ना वासवेऽर्जुने ।

जित्वरे वाच्यवत् जीर्णं परिपक्वापुराणयोः ॥१३॥

अणिः क्रमुकभेदेऽपि दुष्टद्वैवश्रुतौ स्त्रियाम् ।

त्राणन्तु त्रायमाणायां रक्षणे रक्षितेऽपि च ॥१४॥

ती। सामदन्वणे विपलाहाजिमस्कके ।

क्लीवं यवाग्रजे पुंसि तिग्मात्मत्यागिनोस्त्रिषु ॥१५॥
 त्वणी नील्यां निषङ्गे ना त्वंष्णा स्यात्तर्पलिषयोः ।
 दीर्णं विदारिते भीते दुणं चापेऽलिनि दुणः ॥१६॥
 दुण्यन्वुद्रोणीकच्छयोर्देषुर्दातरि दुर्मदे ।
 द्रोणीऽस्त्रियामादके स्यादादकानां चतुष्टये ॥१७॥
 पुमान् कृपोपतौ दग्धकाके स्त्री नीवृदन्तरे ।
 तथा काष्ठान्मुवाहिन्यां गवादन्यामपीष्यते ॥१८॥
 पणो वराटमाने स्यान् मूत्ये कार्पापणे ग्लहे ।
 क्रयशाकाट्टिकाद्यूनव्यवहारे मृतौ धने ॥१९॥
 पर्णं पत्रे किंशुके ना पाष्णिः स्यादुन्मदस्त्रियाम् ।
 स्त्रियां द्वयोः सैन्यपृष्ठे पादग्रन्थधरेऽपि च ॥२०॥
 प्राणो हन्मासते वीले काव्यजीवेऽनिले बले ।
 पुलिङ्गः पूरिते वाच्यलिङ्गः पुभूस्त्रि चात्मसु ॥२१॥
 पूणे शक्ते समये ना पूरितित्वभिधेयवत् ।
 फाणिर्गुडे करन्वे च स्त्रियां वाणी तु योषिति ॥२२॥
 व्यनावपि सरस्वत्यां भ्रूणः स्त्रीगर्भडिम्बयोः ।
 मणिः स्त्रीपुंसयोरश्रजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥२३॥
 कण्ठदेशस्त्रिनेऽजाया लिङ्गाग्रेऽलिञ्जरेऽपि च ।
 मोणः प्रुष्कफले नके मज्जिकादि करण्डयोः ॥२४॥

रणः कोणे क्णणे पुंसि समरे पुन्नपुंसकम् ।
 रेणुः स्त्रीपुंसयो धूलौ पुलिङ्गः पर्यटे पुनः ॥२५॥
 वर्षो द्विजादि-शुक्लादि-यशो गुणकथासु च ।
 सुतौ ना नखियां भेदरूपाक्षरविलेपने ॥२६॥
 वाणः स्याद् गोस्तने दैत्यभेदे केवलकाण्डयोः ।
 वाणा तु वाणमूले स्त्री नीलप्रिययां पुनर्द्वयोः ॥२७॥
 वोणा विद्युति वल्लक्यां वृष्णिः पापण्डचण्डयोः ।
 त्रिपु ना यादवे मेषे वेणी केशस्य बन्धने ॥२८॥
 नद्यादेरन्तरे देवताङ्गे वेणुर्नृपान्तरे ।
 त्वक्सारेऽपि च पुंसि स्यात् शाणी मासचतुष्टये ॥२९॥
 लोहादीनाञ्च निक्षेपे, शाणी प्रावरणान्तरे ।
 श्राणं पक्षे यदाग्वां स्त्री शीर्णं तुन्नविशीर्णयोः ॥३०॥
 श्रेणिः स्त्रीपुंसयोः पङ्क्तौ समानशिल्पिसंघतौ ।
 शोणः कृशानौ ग्योनाके लोहिताश्वे नदे पुमान् ॥३१॥
 त्रिपु कौकानदच्छाये स्याणुः कोले घरे पुमान् ।
 अस्त्री ध्रुवेऽथस्यूणा स्यात् शर्म्यां सन्धे गृहस्य च ॥३२॥
 णत्रिकम् ।

अरुणोऽव्यक्तारगेऽर्के सन्धारारगेऽर्कसारथौ ।
 निःशब्दे व्यपिने कुष्ठभेदे ना गुणिनि त्रिपु ॥३३॥
 अरुणाऽतिविषा-श्यामा-मञ्जिष्ठा-त्रिवृतासु च ।

अरणि वङ्गिमन्थे ना द्वयो निर्मोन्यप्रदारुणि ॥३४॥
 अभोक्षणं मृशे नित्येऽथ तद्दुक्तक्रिययोरपि ।
 इन्द्राणी करणे स्त्रीणां पौलोमीसिन्धुवारयोः ३५॥
 ईरिणन्तूपरे शून्येऽपीक्षण दर्शने दृशि ।
 ऊषण मरिचे क्लीव कणायामूपणा स्त्रियाम् ॥३६॥
 एषणी वणमार्गानुसारिण्याच्च तुलाभिदि ।
 करुणस्तु रसे वृत्ते कृपायां करुणा मता ॥३७॥
 कन्तृणं तृणभित्पृश्नयोः करणं चेतुकर्माणोः ।
 बालवा दौ हस्तलेपे नृत्यगीतप्रभेदयोः ॥३८॥
 क्रियाभेदेन्द्रियक्षेत्रकायसंवेशनेषु च ।
 कायस्थे साधने क्लीवं पुंसि शूद्राविशोः सुते ॥३९॥
 कल्याणमक्षये स्वर्गे मङ्गलेऽपि नपुंसकम् ।
 कङ्कणं करभूपायां रत्नमण्डलयोरपि ॥४०॥
 करेणुर्गजयोपाया स्त्रियां पुंसि मतङ्गजे ।
 कार्मण मन्त्रतन्त्रादियोजने कर्माङ्गेऽपि व ॥४१॥
 काकिणी पणतुर्यांशे मानदण्डेऽपि दृश्यते ।
 कृष्णलैकवराद्योः स्यादुन्मानस्याशकेऽपि च ॥४२॥
 कारण करणे चेतुवधयोश्च नपुंसकम् ।
 स्त्री यातनायां कुर्वाणा भृत्यकारकयोस्त्रिषु ॥४३॥
 कृपाणः खड्गे कुरिकाकर्त्तव्यैरपि योपिति ।

कृपणस्तु क्रमौ पुंसि मन्दकुक्षितयोस्त्रिषु ।
 क्षेपणं प्रेरणे नौकादण्डजालभिदोः स्त्रियाम् ॥४४॥
 ग्रहणं स्त्रीकारादरकरोपरागोपलब्धिवन्दिषु ।
 स्याद्ग्रामणीः प्रधानेऽधिपतौ च त्रिषु नापिते पुंसि ॥४५॥
 ग्रामीणा नीलिकायां स्त्री ग्रामोद्भूतेऽभिधेयवत् ।
 गोकर्णेऽथतरे सर्पे सारङ्गे च गणान्तरे ॥४६॥
 अद्भुष्टानामिकोन्माने गोकर्णे मूर्ध्विकोपधौ ।
 चरणेऽस्त्री वङ्गचाटौ मूले गोत्रे पदेऽपि च ॥४७॥
 भ्रमणे भक्षणे वापि नपुंसक उदाहृतः ।
 जरुणं जिरकेऽपि स्यात् कृष्ण सौर्वचलेऽपि च ॥४८॥
 तरुणं कुलपुष्ये नास्वुकेयूनि तु त्रिषु ।
 तरणि शुभ्रमणौ पुंसि कुमारीनौकयोः स्त्रियाम् ॥४९॥
 दक्षिणे दक्षिणोद्भूतसरलच्छन्दवर्त्तिषु ।
 आरामे त्रिषु यज्ञादिविधिदाने दिशि स्त्रियाम् ॥५०॥
 द्विविणं न द्वयोर्विन्ते काञ्चने च पराक्रमे ।
 दारुणो रसभेदे नात्रिषु स्यात्तु भयावहे ॥५१॥
 दुग्धणो मुद्गरेऽपि स्याद्दुहिणे च परश्वधे ।
 दुर्बलं त्रिष्वसद्वर्णे क्वीवमैलेयहृष्ययोः ॥५२॥
 दौर्बलीणं मृष्टपर्णे स्याद्दूर्वायां स्वरसेऽपि च ।
 धर्मणस्तु पमान् वृक्षभेद-सर्पप्रभेदयोः ॥५३॥

धरणं मानभेदेऽपि धारणे धरणीभुवि ।
 धर्षणं स्यात् परिभवे रतेऽसत्यान्तु धर्षणी ॥५४॥
 धरुणः सम्मते नीरे खर्लोके परमेष्ठिनि ।
 धारणी नाडिकायां स्याद् वृद्धोक्तमन्त्रभिद्यपि ॥५५॥
 धारणाऽङ्गे च यागस्य न पुंसि स्याद्विधारणे ।
 धिषणस्त्रिदशाचार्य्ये धिषणा धियि योषिति ॥५६॥
 निःश्रेणिरधिरोद्धिण्यां खर्जूरीपादपे स्त्रियाम् ।
 निर्याणं वारणापाङ्गदेशे मोक्षेऽध्वनिर्गमे ॥५७॥
 निर्माणं निर्मितौ सारे समञ्जसे नपुसकम् ।
 निर्व्वाणमस्तङ्गमने निर्वृतौ गजमज्जने ॥५८॥
 सङ्गमे चापवर्गे च प्रवणे ना चतुष्पथे ।
 क्रमभिन्नमहीभागोदरप्रक्षेपु च त्रिपु ॥५९॥
 प्रघणस्ताम्रकुम्भे स्यादलिन्दे लोहमुद्गरे ।
 प्रमाणं नित्यमर्यादाशास्त्रेषु सत्यवादिनि ॥६०॥
 इयन्तायाञ्च हेतौ च क्लीवैकत्वे प्रमातरि ।
 पत्रोर्णं घौतकौपेये क्लीवं स्यात् शोणके पुमान् ॥६१॥
 पक्षिणो पूणिमायां स्याद् विहग्यां शाकिनीभिदि ।
 आगामिवर्त्तमानाद्युक्तरात्रावपि स्त्रियाम् ॥६२॥
 प्रवेणिः स्त्री कुथावेण्याः पुराणं पञ्चलक्षणे ।
 पणे पुंसि त्रिपु प्रत्ने पूरणः पूरके त्रिपु ॥६३॥

क्लीवं पिण्डप्रभेदे च पूरणी शास्त्रलिद्रुमे ।
 पटारम्भकसूत्रेषु प्रोक्षणं सेचने वधे ॥६४॥
 वरुणस्तरुभेदेऽसु पश्चिमाशापतावपि ।
 वरणस्तु पुमान् तिक्तशाकप्राकारयोरपि ॥६५॥
 क्लीवं कन्यादिवरणे वेष्टने स्त्री नदीभिदि ।
 वारणं प्रतिषेधे स्याद् वारणस्तु मजङ्गजे ॥६६॥
 ब्राह्मणं ब्रह्मसङ्घाते वेदभागे नपुंसकम् ।
 भूमिदेवे तु पुलिङ्गः स्फञ्जिकाष्टकयोः स्त्रियाम् ॥६७॥
 वारुणी गण्डदूर्वायां प्रतीचीसुरयोरपि ।
 भरणी घोपके ऋक्षे भरणं वेतने भृतौ ॥६८॥
 भ्रमणी कारुण्डिकायां क्रोडाढ्यायामधीगतुः ।
 भीषणो रसे शन्नक्यां ना गाढे दारुणे त्रिषु ॥६९॥
 मसृणोऽकर्कशे स्निग्धे त्रिषूमायान्तु योपिति ।
 मत्कुणो निर्व्विपाणेभे निश्मय्युपुरुषेऽपि च ॥ ७०॥
 उदङ्गे नारिकेले च मार्गणो याचके शरे ।
 याञ्जान्विषणयोः क्लीवं यन्त्रणं रक्षणे स्मृतम् ॥ ७१॥
 बन्धने स्यान् नियमने रक्षणः शब्दने खरे ।
 रमणं पटोलमूले नार्यां स्त्री ना धवे स्तरे ॥ ७२॥
 रोषणः पारदे हेमघर्षणो-परयोः पुमान् ।
 क्रोधाने वाच्यन्निङ्गः स्याद् रीचिणी कण्डरुमिदि ॥ ७३॥

तडित् कटुभरा सोमवल्केषु लोहितागवोः ।
 लवण सैन्धवादौ ना सिन्धुरलोभिटो रसे ॥७४॥
 तद्युक्ते वाच्यलिङ्गः स्यान् नदीभेदत्विषोः स्त्रियाम् ।
 लक्षणं नाम्नि चिह्ने च सारस्यां लक्षणा मता ॥७५॥
 लक्षणा त्वोपधीभेदे सारस्यामपि योपिति ।
 रामभ्रातरि पुंसि स्यात् सश्रीके चाभिधेयवत् ॥७६॥
 विषाणो नीरकाकोल्यामजशृङ्गाञ्च योपिति ।
 कुष्ठानामौषधे क्लीव पशुशृङ्गेभदन्तयोः ॥७७॥
 विषणिः पण्यवीथ्याञ्च भवेदापण्यपण्ययोः ।
 शरणं शृङ्गरक्षित्रो र्वधरक्षणयोरपि ॥७८॥
 श्रवणं स्यात् श्रुतौ कर्णे नक्षत्रे न नपुंसकम् ।
 श्रवणो यतिभेदे ना निन्द्यजीविनि तु त्रिषु ॥७९॥
 स्त्रिया सुदर्शनामांस्योर्मुण्डीरीशवरीभिदोः ।
 श्रावणो मासि पापण्डे दध्याल्यां श्रावणा मतरा ॥८०॥
 शिङ्गाण काचपात्रे स्यात् लौहनासिकयोर्मले ।
 श्रीपर्णी काश्लरीकुम्भोः क्लीवे पद्माग्रिमन्थयोः ॥८१॥
 सङ्कीर्णं निचितेऽपि स्याद् शृङ्गे चापि वाच्यवत् ।
 सरणिः पङ्क्तौ मार्गे स्त्री सारणो राक्षसान्तरे ॥८२॥
 सग्भेदे ना प्रसारिण्यां स्वल्पनद्याञ्च सारणी ।
 सुपेणः करमर्दे स्याद् विष्णु सुग्रीववैद्ययोः ॥८३॥

सुवर्णा ना स्वर्णकर्पे सुवर्णाख्यमखान्तरे ।
 स्त्री कृष्णागुरुणि क्लीवं काञ्चने हरिचन्दने ॥८४॥
 सुपर्णाः स्वर्णचूर्णे च गरुडे कृतमालके ।
 सुपर्णा कमलिन्याञ्च वैनतेयस्य मातरि ॥८५॥
 हरेणुर्ना सतीले स्त्री रेणुका कुलयोपिताः ।
 हरणं यौतकादीनां द्रव्ये भुजे हतावपि ॥८६॥
 हरिणः पुंसि सारङ्गे विगदे त्वभिधेयवत् ।
 हरिणी हरितायाञ्च नारीभिर्दृत्तभेदयोः ॥८७॥
 सुवर्णप्रतिमायाञ्च हर्षणेऽक्षिरुगन्तरे ।
 हर्षके योगभेदे च आह्वदेवेऽपि च क्षचित् ॥८८॥
 हिरणं रेतसि स्वर्णे वराटे च नपुंसकम् ।

णचतुष्कम् ।

अङ्गारिणी हसन्याञ्च भास्करत्यक्तदिग्यपि ॥८९॥
 आयर्व्वणिर्नाऽयर्व्वज्जन्नाङ्गणे च पुरोधसि ।
 आतर्पणं प्रीणने स्यान्मङ्गलालेपनेऽपि च ॥९०॥
 आरोहणं स्यात्सोपाने समारोहे प्ररोहणे ।
 उत्क्षेपणन्तु व्यजने धान्यमर्दनवस्तुनि ॥९१॥
 स्यादुद्धरणमुद्धारवान्तान्नाम्बूलनेष्वपि ।
 कार्यापणेऽस्त्री कार्पिके पण्ये इशकेऽपि च ॥९२॥
 अथ कामगुणे रागे विषयाभोगधोरपि ।

चीर्णपर्णस्तु निम्बेऽपि खर्जुरीभूरुहे पुमान् ॥८३॥
 चूडामणिः शिरारत्ने काकचिञ्चाफले पुमान् ।
 जुङ्गराणेऽपि चाध्वर्यावपि स्यात् जातवेदसि ॥८४॥
 तण्डुरीणः कीटमात्रे वर्वरे तण्डुलोदके ।
 त्रायमाणा वार्षिके स्त्री रक्ष्यमाणेऽभिधेयवत् ॥८५॥
 तैलपर्णी मलयजे श्रीवासे सिद्धकेऽपि च ।
 टाक्षायणी त्वपर्णायामश्विन्याद्युडु पु स्त्रियाम् ॥८६॥
 अथ देवमणिर्भर्गेऽश्यावर्त्ते कौस्तुभे च ना ।
 नारायणेऽच्युतेऽभीरु गोर्ष्या नारायणी मता ॥८७॥
 अथो निगरण क्लीव भोजने स्याद् गले पुमान् ।
 अथ निःसरणं मृत्युपायमोक्षेषु निर्गमे ॥८८॥
 स्यान् निस्तरणमुपाये निस्तारे तरणेऽपि च ।
 निरूपण स्यादालोके विचारे च निदर्शने ॥८९॥
 पर्वरीणस्तु पर्णस्य शिराया द्यूतकम्वले ।
 पर्णवृन्तरसेऽपि स्यात् पर्वरीणन्तु पर्वणि ॥९०॥
 प्रवारण निषेधे स्यात् काम्यदाने च न द्वयोः ।
 पगीरणः स्यात् कमठे दण्डे च पट्टशाटके ॥९१॥
 परायणमभीष्टे स्यात् तत्पराश्रययोरपि ।
 परवाणि पुमान धर्माध्यक्षवत्सरयोरपि ॥९२॥
 पारायणं समासङ्गे कात्स्न्ये पारगतावपि ।

पिलुपर्णी विम्बिकायां मूर्त्वायामोषधिभिदि ॥१०३॥

अथ पुष्करिणी चेभ्यां सरोजिन्यां जलाशये ।

मधुपर्णी च गाम्भार्यां नीलीसंज्ञौषधावपि ॥१०४॥

मीनाम्नीणस्तु पुलिङ्गे दर्दुराम्ने च खञ्जने ।

रक्तरणुस्तु सिन्दूरे पलाशकोरके पुमान् ॥१०५॥

रागचूर्णः पुमान् दन्तधावने मकरध्वजे ।

रेरिद्याणस्तु पुसि स्यात् मक्षादेवेऽसुगेऽपि च ॥१०६॥

लम्बकर्णः स्मृतेऽङ्गोटाटपादपे युगलेऽपि च ।

विदारणं विडम्बे च भेदे क्लीवं रणे द्वयोः ॥१०७॥

अथ वैतरणी नद्यां प्रेतानां यातुमातरि ।

शरवाणिः शरमुखे पाथिके शरजीविनि ॥१०८॥

पुमानथ शिखरिणी रसालावृत्तभेदयोः ।

नारीरत्ने मन्बिकायां रोमावल्यामपि स्त्रियाम् ॥१०९॥

अथ संसरणं क्लीवमसम्बाधचमूगतौ ।

घण्टापथे च संसारे रणारम्भे च कुञ्चचित् ॥११०॥

समीरणः स्यात् पवने पथिके च फणिज्झके ।

हस्तिकर्णश्यासूके पलाशगणभेदयोः ॥१११॥

णपञ्चकम् ।

अथघण्टामित्येतत् प्रतिरोधेऽप्यनादरे ।

अवतारणं भूतादिग्रहे यस्त्वाञ्चलेऽर्चने ॥११२॥

प्रविदारणमाख्यातं सम्यरायेऽवदारणे ।
 परिभाषणं सनिन्दोपालम्भने नियमेऽपि च ॥११३॥
 उक्तो मत्तवारणस्तु प्रक्लिन्नकटकञ्जरे ।
 क्लीवं प्रासादवीथीनां कुन्दवृत्तवृतावपि ॥११४॥
 मण्डूकपर्णी मञ्जिष्ठा ब्राह्मण्या ना तु शोणके ।
 लामर्द्धरणं रोमाञ्चे ना हते च विभीतके ॥११५॥
 वातरायण उन्मत्ते निष्प्रयोजनपूरुषे ।
 काण्डे च करपात्रे च कूटे च परसंक्रमे ॥११६॥

णपटकम् ।

दोहदलक्षणमुक्तं वयसः सन्धौ च गर्भे च ।
 यौवनलक्षणमप्याख्यातं लावण्यकुचयोः ॥११७॥

णान्तवर्गः समाप्तः ।

तैकिकम् ।

तस्यौरामृतपुच्छेषु क्रीडि स्त्रिच्छेऽपि कुत्रचित् ।
 अपुमान् तरणे पुण्ये कथितः शब्दवेदिभिः ॥१॥

तद्विक्रम् ।

अस्तं त्रिप्तेऽप्यवसिते त्रिपु ना पश्चिमाचन्ते ।
 अन्तं स्वरूपे नागे ना नस्त्री ग्रेपेऽन्तिके त्रिपु ॥२॥
 अर्चितं पीडाधनुस्कोट्योः व्याप्तो लब्धे स्वसत्ययोः

आप्तिः स्त्री योगसम्प्राप्त्योरितं स्मृते गते त्रिषु ॥३॥
 ईतिर्दिम्बे प्रवासेऽतिवृष्ट्यादिपट्सु च स्त्रियाम् ।
 उक्तमेकाक्षरच्छन्दस्युक्तः स्याद् भाषिते त्रिषु ॥४॥
 उक्तिः स्त्री रक्षणे सूता वृत्तिः कल्याणवर्त्मनाः ।
 जुगुप्सासर्द्धयोः स्त्री स्यादतमृच्छशीले जले ॥५॥
 सत्ये दोषे पूजिते स्यादतुर्वर्पादिपट्सु च ।
 आर्त्तवे भासि च पुमानेतः कर्बूर आगते ॥६॥
 क्षत्ता शूद्रात् क्षत्रियाजे प्रतीहारे च सारथौ ।
 भुजिष्यातनयेऽपि स्यात् नियुक्तवेधसोः पुमान् ॥७॥
 कर्त्ता तु कारके वाच्यलिङ्गे ना परमेष्ठिनि ।
 क्रतुर्यज्ञे मुनौ पुंसि कान्तिः शोभेच्छयोः स्त्रियाम् ॥८॥
 कान्ता नार्यां प्रियङ्गौ स्त्री शोभने त्रिषु माधवे ।
 लोहे च चन्द्रसूर्यायः पर्यायान्तःशिलासु च ॥९॥
 क्षितिर्निवासे मेदिन्यां कालभेदे क्षये स्त्रियाम् ।
 कीर्त्तिः प्रसादयशसोर्योपित्कुन्तो गवेधुकायां स्यात् ॥१०॥
 प्रासायुधे च कुन्तो गुग्गुलुपृथयेश्च शक्यक्याम् ।
 कृतं युगेऽलमर्थेऽपि विहिते चिंसिते त्रिषु ॥११॥
 कृत्तन्तु चेष्टिते क्षिन्ने कृतिः करणचिंसयोः ।
 कृत्तित्थर्मत्वचोर्भूर्जे कृत्तिकायां द्वयं स्त्रियाम् ॥१२॥
 केतुर्ना रुक्पताकाविग्रहोत्पातेषु लक्षणे ।

गर्त्तस्त्रिगर्त्तभेदे स्यादवटे च कुकुन्दरे ॥१३॥
 ग्रस्तं ग्रासीकृतेऽपि स्यात्कुम्भवर्णपदोदिते ।
 गतिः स्त्री मार्गदशयो ज्ञाने यात्राभ्युपाययोः ॥१४॥
 नाडोत्रणे सरण्याच्च गतं विज्ञातयातयोः ।
 गातु-र्ना कोकिले भृङ्गे गन्धर्व्वे त्रिषु रोषणे ॥१५॥
 गीतिष्कन्दसि गाने स्त्री गीतं शब्दितगानयोः ।
 गुप्तिः स्व्यवकरस्याने कारागारे च रक्षणे ॥१६॥
 गुप्त स्याद् रक्षिते गूढे घातः काण्डप्रहारयोः ।
 घृतमाज्ये जले क्लीव प्रदीप्ते त्वभिधेयवत् ॥१७॥
 चित क्त्वे त्रिषु चिता चित्यायां सद्यतौ स्त्रियाम् ।
 चित्तिश्चित्यावृन्दयोः स्त्री जात व्यक्तौघजन्मसु ॥१८॥
 क्लीव त्रिलिङ्गमुत्पन्ने जातिः स्त्री गोत्रजन्मनोः ।
 अग्नन्तिकामलक्योश्च सामान्यच्छन्दसोरपि ॥१९॥
 जातीफले च मालत्या ज्ञातिस्तातसगोत्रयोः ।
 पुमानथ ततं व्याप्ते विस्तृते च त्रिलिङ्गकाम ॥२०॥
 क्लृवं वीणादिवाद्ये स्यात् पुलिङ्गसु सदागतौ ।
 तातोऽनुकम्पेज जनके तित्तो रससुगन्धयोः ॥२१॥
 तित्ता तु कटुरोहिण्या पर्पटे तु नपुंसकम् ।
 त्वस्त धूलौ च पापे च जटायाच्च नपुंसकम् ॥२२॥
 चेता युगेऽग्निचितये दत्तं विश्राणितेऽविते ।

दन्तोऽद्रिकटके कुञ्जे दशनेऽनौपधौ स्त्रियाम् ॥२३॥

दान्तस्तु दमितेऽपि स्यात् तपःक्लेशसङ्घे त्रिषु ।

दिति दैत्यजनन्याञ्च खण्डनेऽपि च योषिति ॥२४॥

दीप्तं निर्भासिते दग्धे ज्वलितेऽथ द्रुतं त्रिषु । . .

शीघ्रे विलीने विद्रावे द्युतिः स्त्री रश्मिशोभयोः ॥२५॥

दिति अर्मापुटे मत्स्ये ना धातु नैन्द्रियेषु च ।

शब्दयोनिमहाभूततद्गणेषु रसादिषु ॥२६॥

मनःशिलादौ श्लेष्मादौ विशेषाद् गैरिकेऽस्त्रि च ।

धाता हिरण्यगर्भे ना पालके त्रिष्वथो धुतम् ॥२७॥

त्यक्ते विधूते धूतन्तु कम्पिते भर्त्सिते त्रिषु ।

धूर्त्तन्तु खण्डलवणे धूसूदरे ना विते त्रिषु ॥२८॥

धृति नैष्टौ स्त्रियां तुष्टौ योगभिद्वैर्यधारणे ।

नतं तगरपाद्यां स्यात् क्लृवं कुटिलनम्रयोः ॥२९॥

त्रिषु नीति नयेऽपि स्यात् प्रापणेऽपि च योषिति ।

पक्तिः स्त्री गौरवे पाके पत्तिर्ना पदगे स्त्रियाम् ॥३०॥

गतावेकरथैकेभत्यथपञ्चपदातिके ।

पङ्क्तिर्दशाक्षरच्छन्दोदशसङ्ख्यालिषु स्त्रियाम् ॥ ३१ ॥

पति र्धवे ना त्रिष्वीशे प्राप्तं लब्धे समञ्जसे ।

पातोनापतने चाते त्रिषु प्राप्ति र्मद्योदये ॥३२॥

लाभेऽपि च स्त्रियां प्रातिः पूर्त्तिप्रदेशयोः स्त्रियाम् ।

पोतिर्नाथे स्त्रियां पाने प्रीतं हृषितनर्म्माणोः ॥३३॥
 पोतं पाने हरिद्रायां स्त्रियां गौरैऽभिधेयवत् ।
 प्रीति र्योगान्तरे प्रेम्णि स्मरपत्नोमुदोः स्त्रियाम् ॥३४॥
 पुस्तं क्लीवं पुस्तके च खेप्यादिशिष्यकर्मणि ।
 सुतं तुरङ्गमगतौ क्लीवं पुंसि त्रिमात्रके ॥३५॥
 पूतं त्रिषु पवित्रे च शठिते वज्रलीकृते ।
 पूर्त्तं त्रिषु पूरिते स्यात् क्लीवं खातादिकर्मणि ॥३६॥
 प्रोतं नपुसकं वल्ले खचिते वाच्यलिङ्गकम् ।
 प्रेतो भूतान्तरे पुंसि मृते स्याद् वाच्यलिङ्गकः ।
 पोतः शिशौ वह्निने च गृहस्थाने च वाससि ॥३७॥
 वृतिस्तु वरणेऽपि स्याद् वेष्टनेऽपि च योषिति ।
 भर्त्ता स्वामिनि पुंसिस्यात् त्रिषु धातरि पोष्टरि ॥३८॥
 भक्ति विभागे सेवायां स्त्रियां भ्रान्तिस्तु योषिति ।
 मिथ्यामतौ च भ्रमणे भित्तिः कुक्षप्रदेशयोः ॥३९॥
 भीतिर्भये स्त्रियां भीतं भयेऽथ भीयुते त्रिषु ।
 भूति र्भस्मनि सम्पत्तिरस्तिशृङ्गारयोः स्त्रियाम् ॥४०॥
 भूतं क्षादौ पिशाचादौ जन्तौ क्लीवं त्रिषूचिते ।
 प्राप्ते वृत्ते समे सत्ये देवयोन्यन्तरे तु ना ॥४१॥
 कुमारैऽपि भृतिः स्त्री स्यान् मूल्येऽपि भरणेऽपि च ।
 मतन्तु सन्मते ज्ञाते मतिः स्त्रीच्छाधियोः स्मृतौ ॥४२॥

मन्तुः पुस्यपराधेऽपि मनुष्येऽपि प्रजापतौ ।
 माता गौर्यादिजननी गोत्राह्वण्यादिभूमिषु ॥४३॥
 मितिर्मानेऽप्यवच्छेदे मुक्तिर्मेत्ते च मोक्षणे ।
 मात्रादयः स्त्रियां मुक्तः प्राप्तमोक्षे च मोक्षिते ॥४४॥
 त्रिषु स्त्री मौक्तिके मूर्त्तिः कायकाठिन्ययोःस्त्रियाम् ।
 मूर्त्तं स्यात् त्रिषु मूर्च्छाले कठिने मूर्त्तिमत्यपि ॥४५॥
 मृतन्तु याचिते मृत्यौ स्त्रीवं मृत्युमति त्रिषु ।
 यतिः स्त्री पाठविच्छेदे निकारयतिनोः पुमान् ॥४६॥
 यन्ता हस्तिपके मृते युक्तिः स्त्री न्याययोगयोः ।
 युते युक्तेऽप्यथग्भूते स्त्रीवं हस्तचतुष्टये ॥४७॥
 रक्तेऽनुरक्ते नील्यादिरञ्जिते लोहिते त्रिषु ।
 क्लोवन्तु कुङ्कुमे ताम्रे प्राचीनामलकेऽसृजि ॥४८॥
 रतिः स्त्री स्मरदारेषु रागे सुरतगुह्ययोः ।
 रत्न वर्त्मनि नद्यां स्त्री रतं सुरतगुह्ययोः ॥४९॥
 रतस्त्रिय्वनुरक्ते स्यात् तत्परे चाभिधेयवत् ।
 रिक्तं शून्ये वने रीतिः स्त्रियां स्यन्दप्रचारयोः ॥५०॥
 पिप्तले लोहकिष्टे च लता प्रियङ्गुगाखयोः ।
 पृक्वाज्यातिशयतीव्रकीलता कर्पूरिकासु च ॥५१॥
 माधवीदूर्वयो र्लिप्तं विलिप्तविपदिग्धयोः ।
 भक्ते लृता तन्तुनाभे पिपीलिकागदान्तरे ॥५२॥

वक्त्रा तु जनके पुंसि वापकेऽप्यभिधेयवत् ।
 वक्त्रा तु पण्डितेऽपि स्याद् वाग्मिन्यप्यन्यलिङ्गकः ॥५३॥
 व्यस्तन्तु व्याकुले व्याप्ते व्यक्तः स्फुटमनीषिणोः ।
 वस्ति द्वयोर्निरूचे नाभ्यधो भूम्नि दशासु च ॥५४॥
 वर्त्तिर्भेषजनिर्माणे नयनाञ्जनलेखयोः ।
 गात्रानुलेपनीदीपदशादोषेषु योषिति ॥५५॥
 वार्त्ता तु वर्त्तने वातिङ्गणे कृष्याद्युदन्तयोः ।
 निःसागरोन्मयोः क्लृवं वृत्तिमन्नीरुजोस्त्रियु ॥५६॥
 व्याप्त ख्याते समाक्रान्ते व्याप्ति व्यापनलम्भयोः ।
 स्त्रियां वित्तिर्विचारे च लाभसम्भावयोः स्त्रियाम् ॥५७॥
 वित्तं क्लृवं धने वाच्यलिङ्गं ख्याते विचारिते ।
 वीतमसारगजे स्याद्दुःशकर्मण्यसारतुरगे च ॥५८॥
 वीतिर्गतौ च दीप्तौ प्रजनाशनधावनेषु स्त्री ।
 वृत्तिर्विवरणजीवकौशिक्यादिप्रवर्त्तने ॥५९॥
 वृन्तप्रसवबन्धेऽस्त्री घटीधाराकुचाग्रयोः ।
 वृत्तोऽधीतेऽप्यनीतेऽपि वर्त्तुलेऽपि वृत्ते मृते ॥६०॥
 दृढेऽन्यलिङ्गवान् क्लृवं हृन्द्यारिचवृत्तिषु ।
 शक्तिरस्त्रान्तरे गौर्यामुत्साहादौ बले स्त्रियाम् ॥६१॥
 शस्त्रं चमप्रशस्त्रे च शान्तिः स्त्री मङ्गले शमे ।
 शास्त्रा समन्तभद्रं नाशासके पुनरन्यवत् ॥६२॥

शान्तेऽभियुक्तरसयोः पुंसि त्रिपु शमान्विते ।
 अव्ययं वारणे शान्तं शान्तं शितञ्च दुर्वले ॥६३॥
 निशिते च शिति भूर्जे नासितासितयोस्त्रिपु ।
 शीतं हिमगुणे क्लीवं शीतलालसयोस्त्रिपु ॥६४॥
 वानीरे वज्रवारे नाशुक्तं पूताम्लनिष्ठुरे ।
 श्रुतिः श्रोत्रे च तत्कर्मण्यान्नायवात्तयोः स्त्रियाम् ॥६५॥
 शुक्तिः कपालशकले शङ्खे शङ्खनखेऽपि च ।
 नख्यथावर्त्तदुर्नाममुक्तास्फोटेपु च स्त्रियाम् ॥६६॥
 श्रुतमाकर्णिते शास्त्रे श्वेता द्वीपाद्रिभेदयोः ।
 श्वेता वराटिकाकाष्ठपाटलाशङ्खिनीपु च ॥६७॥
 क्लीवं रूप्येऽन्यवत् शुक्ले सन् साधौ धोरशस्तयोः ।
 मान्ये सत्ये विद्यमाने त्रिपु साध्वजुमयोः स्त्रियाम् ॥६८॥
 सातिर्दानेऽवसाने स्त्री स्वान्तं चेतसि गच्छरे ।
 स्थितं प्रतिज्ञातवति चोर्ध्वनिश्चलयेऽस्त्रिपु ॥६९॥
 स्थितिः स्त्रियामवस्थाने मर्यादायाञ्च सीमनि ।
 सितमवसिते च वद्वे धवले त्रिपु शक्रेरायां स्त्री ॥७०॥
 सीता लाङ्गलपद्मतिवैदेहीस्वर्गगङ्गासु ।
 सुतस्तु पार्थिवे पुत्रे ह्यपत्ये तु सुता स्मृता ॥७१॥
 सुतिः स्वर्गाज्जतानिद्राविश्रम्भे शयने स्त्रियाम् ।
 सुतस्तु सारथी तक्षिणश्चक्षियाद्ब्राह्मणीसुते ॥७२॥

वन्दिपारदयोः पुंसि प्रकृत्ये प्रेरिते त्रिषु ।
 स्यतिः स्त्रीवनसन्तत्योः स्त्रियां स्यूतः प्रसेवके ॥७३॥
 ना त्रिपूते स्मृति र्धर्मशास्त्रस्मरणयोः स्त्रियाम् ।
 ह्यतिः स्त्री गमने मार्गे सेतुर्नालौ कुमारके ॥७४॥
 हस्तः करे करिकरे सप्रकाष्ठकरेऽपि च ।
 ऋक्षे केशात्परो व्राते हित पथ्ये गते घृते ॥७५॥
 हेतिः स्यादायुधज्वालाख्यतेजःसु योऽपिति ।

तत्रिकम् ।

अमृत यज्ञशेषे स्यात् पीयूषे सलिले घृते ॥७६॥
 अयाचिते च मोक्षे च ना धन्वन्तरिदेवयोः ।
 अमृता मागधीपथ्यागुडूच्यामलकीषु च ॥७७॥
 अनृत कृपावसत्येऽप्यजितो ना हरौ त्रिषु ।
 अनिर्जिते चाच्युतस्तु हरौ पुंसि त्रिषु स्थिरे ॥७८॥
 अर्हितं याचितेऽपि स्यात् वातव्याधौ च हिंसिते ।
 अक्षतं न द्वयोः पण्डे लाजेषु त्रिष्वहिंसिते ॥७९॥
 यवेऽपि क्वचिद्व्यक्तो हरौ स्मरहरे पुमान् ।
 परमात्ममहदायोः क्लृव स्यादस्फुटे त्रिषु ॥८०॥
 अनन्तः केशवे शंभे पुमाननवधौ त्रिषु ।
 अनन्ता च विशल्याया शारिवाटूर्व्वयोरपि ॥८१॥
 कणादुरालभापथ्यापार्व्वत्यामलकीषु च ।

विश्वम्भरागुडूच्याः स्यादनन्तं सुरवर्त्मनि ॥८२॥
 अस्नानमशुभे चुल्ल्यां मरणेऽनवधावपि ।
 क्षेत्रेऽप्यथायतिः पुंसि हिमदीधितिकालयोः ॥८३॥
 अर्हंस्तु क्षपणे बुद्धे पुंसि मान्येऽन्यलिङ्गकः ।
 अर्हन्तश्चापि सुगते क्षपणेऽपि च दृश्यते ॥८४॥
 अगस्तिः कुम्भयोनौ च वङ्गसेनतरौ पुमान् ।
 अर्ब्बती कुम्भदास्याञ्च वडवायाञ्च योषिति ॥८५॥
 अङ्गतिः पुस्त्यश्चोत्तवृहन्नवङ्गिष्यथादितिः ।
 भूदेवमात्रोरंक्षतिस्त्र्यागे रोगेषुभे स्त्रियौ ॥८६॥
 आपातः पुंसि पतने तदात्वे च प्रकीर्तितः ।
 आप्रातं शिङ्घिते क्रान्तेऽप्याख्यातं भापिते तिङ्घि ॥८७॥
 आध्मातः शब्दिते दग्धे वातरुग्भेदसंयुते ।
 आश्रुतः स्नानके स्नानेऽप्यादृतः सादरेऽर्चिते ॥८८॥
 आचितः शकटोन्मये पलानामयुतद्वये ।
 पुनिङ्गः सङ्गृहीतेऽपि च्छन्नेऽपि स्यात्त्रिनिङ्गकः ॥८९॥
 आहतं गुणिते चापि ताडिते च मृष्टपार्थके ।
 स्यात्पुरातनवस्त्रेऽपि नववस्त्रे च नाऽऽनके ॥९०॥
 आनर्त्तो देशभेदेऽपि नृत्यस्थाने जले रणे ।
 आवर्त्तश्चिन्तने वारिभ्रमे चावर्त्तने पुमान् ॥९१॥
 आस्फोतस्तु पुमानर्कपत्रे स्यात्कोविदारके ।

आस्फोता गिरिकर्ण्यञ्च वनमल्ल्याञ्च योषिति ॥८२॥
 आयस्तस्तेजिते क्षिप्ते क्लेशिते कुपिते हते ।
 आयतिस्तु स्त्रियां दैर्घ्ये प्रभावागमिकालयोः ॥८३॥
 आयतिस्तु स्त्रियां स्नेहे वशित्वे वासरे बले ।
 आकृतिस्तु स्त्रियां रूपे सामान्यवपुषोरपि ॥८४॥
 आसत्तिः सङ्गमे लाभे स्त्रियामापत्तिरापदि ।
 प्रापणेऽपि च योषित् स्यादुदन्तः साधुवार्त्तयोः ॥८५॥
 उपितं व्युपिते दग्धे ऽप्युदात्तस्तु स्वरान्तरे ।
 दयात्यागादिसम्पन्ने काव्यालङ्कारकृत्ययोः ॥८६॥
 उत्तम शुष्कमासेऽथ त्रिषु तप्ते परिस्रुते ।
 उचितन्तु भवेन् न्यस्ते मिते ज्ञाने समञ्जसे ॥८७॥
 उद्धृतं स्यात् त्रिषूत्क्षिप्ते परिभुक्तोऽङ्गितेऽपि च ।
 उत्थितं स्यात् त्रिषूत्पन्ने प्रोद्यते वृद्धिमत्यापि ॥८८॥
 उद्घातस्तु पुमान् पादस्त्रलने समुपक्रमे ।
 पवनाभ्यासयोगाय कुम्भकादित्रयेऽपि च ॥८९॥
 उत्तुङ्गे मुद्गरेऽपि स्यादुदितन्तुक्त उद्गते ।
 उच्छ्रितं त्रिषु सञ्जाते समुन्नतप्रवृद्धयोः ॥९०॥
 उन्मत्त उन्मादवति धूर्त्वरमुचुकुन्दयोः ।
 उद्दान्तो निर्मादगजे पुमानुद्गमिते त्रिषु ॥९१॥
 एधतुः पुरुषेऽमौ ना कलित विदिताप्तयोः ।

कपोतः स्याच्चित्रकण्ठपारावतविहङ्गयोः ॥१०२॥
 अथ क्रन्दितमाङ्गाने रुदितेऽपि नपुंसकम् ।
 क्षारितः स्वाविते क्षारे चाभिगस्तेऽपि च त्रिषु ॥१०३॥
 कापोतो रुचके क्लीवे कपोतौ घेऽञ्जनान्तरे ।
 किरातो म्लेच्छभेदे स्याद् भूजिस्वेऽल्पतनावपि ॥१०४॥
 स्त्रियां चामरधारिण्यां कुट्टिनीदुर्गयोरपि ।
 कृतान्तो यमसिद्धान्त दैवाकुशलकर्मसु ॥१०५॥
 गर्जितं वारिवाहादिध्वनौ नामत्तकुञ्जरे ।
 ग्रथितं गुम्फिते क्रान्ते हिंसिते च त्रिलिङ्गकम् ॥१०६॥
 गभस्तिः किरणे सूर्ये ना स्वाहायान्तु योपिति ।
 गम्भुत् स्त्री स्वर्णनडयोर्गोपतिः शिवपण्डयोः ॥१०७॥
 नृपभास्करयोः पुंसि चेष्टितं गतिचेष्टयोः ।
 जगत्स्यात् पिष्टपे क्लीवं वायौ ना जङ्गमे त्रिषु ॥१०८॥
 जगती भुवने क्षमायां छन्दोभेदे जनेऽपि च ।
 जयन्ती वृक्षभिद्रोर्योऽरिन्द्रपुत्रीपताकयोः ॥१०९॥
 पुमानैन्द्रौ हरे भीमे ज्वलितं दग्धउज्वले ।
 जामाता दुहितुः पत्न्यौ सूर्यावर्त्ते धवे पुमान् ॥११०॥
 जीमूताऽऽट्टौ धृतिकरे देवताङ्गे पयोधरे ।
 जीवातुरस्त्रियां भक्ती जीविते जीवनौपधे ॥१११॥
 जीवन्ती जीवनीशम्यां गडूची वन्दयोरपि ।

जृम्भितं करणे स्त्रीणामीहा स्फुटितयोरपि ॥११२॥
 त्वरितं प्रजवे शीघ्रे त्रिगर्त्तो गणितान्तरे ।
 देशेऽपि ना घुर्घुरिका कामुकाङ्गनयोः स्त्रियाम् ।
 तृणता धनुषि तृणत्वे दंशितमपि जातदंशे स्यात् ॥११३॥
 कवचाचिते द्विजाति विप्राण्डजयोश्च पुलिङ्गः ।
 दुर्जातं व्यसने क्लृप्तेऽसम्यग् जातेऽन्यलिङ्गकम् ॥११४॥
 दुर्गतिर्नरके नैःस्व्ये स्त्री दृष्टान्त उदाहृतौ ।
 शास्त्रे च मरणे धीमान् पण्डिते च बृहस्पतौ ॥११५॥
 निर्वृतिः स्यादलक्ष्म्यां स्त्री दिशाम्पालान्तरे पुमान्
 निकृतं विप्रलब्धे स्यात् शठे विप्रकृते त्रिषु ॥११६॥
 निर्मुक्तं ल्यक्तसङ्गे स्यान् मुक्तकञ्चुकभोगिनि ।
 निरस्त स्त्रियु निच्छ्रुते प्रोपितेपौ द्रुतोदिते ॥११७॥
 सन्त्यक्ते च प्रतिहते निमित्तं हेतुलक्ष्मणीः ।
 निवातो दृढसन्नाहे वातशून्येऽपि चाश्रये ॥११८॥
 निशान्त स्त्रियु शान्ते स्यात् क्लृवन्तु भवनेपसाः ।
 निकृति भर्त्सने ह्येपे शठे शायेऽपि च स्त्रियाम् ॥११९॥
 निर्वृतिः स्वस्थितायस्तं गमने च सुखे स्त्रियाम् ।
 नियतिर्नियमे दैवे स्त्री एतन् पातुके खगे ॥१२०॥
 प्रहृतं वितते क्षुणे पर्यस्तः पतिते हते ।
 प्रभूतमुद्गते प्राज्ये पण्डितः सिद्धके कवौ ॥१२१॥

पलितं शैलजे तापे केशपाके च कर्दमे ।

प्रसृतः सम्प्रचारे स्याद् विनीते वेगिते त्रिपु ॥१२२॥

अर्द्धाञ्जलौ तु पुलिङ्गे जङ्घायां प्रसृता मता ।

प्रसृतं कुसुमे क्लीवं त्रिपु सञ्जातसृतयोः ॥१२३॥

प्रणीतः संस्कृताग्नौ ना यज्ञपात्रान्तरे स्त्रियाम् ।

त्रिपु क्षिप्रोपसम्पन्नविहितेषु प्रवेशिते ॥१२४॥

प्रतीतः सादरे ज्ञाते हृष्टप्रख्यातयो स्त्रिपु ।

प्रमीतं वाच्यलिङ्गं स्यात्प्रोक्षितेऽपि मृतेऽपि च ॥१२५॥

परितो वाच्यलिङ्गः स्यान् मृते भूतान्तरे पुमान् ।

पर्वतः पादपे पुंसि शाकमत्स्यप्रभेदयोः ॥१२६॥

देवमुन्यन्तरे शैले प्रपातो निर्धरेऽतटे ।

पर्याप्तन्तु यथेष्टे स्यात् ढ्रुपौ शक्ते निवारणे ॥१२७॥

पञ्चता पञ्चभावेऽपि मरणेऽपि च योपिति ।

पक्षतिस्तु भवेत् पक्षमूले च प्रतिपत्तियौ ॥१२८॥

प्रसृतिरुद्भवेऽपि स्यात्तनये दुहितर्यपि ।

प्रतति विस्तृतौ वल्ल्यां पङ्क्तिः पङ्क्तिवर्त्मनोः ॥१२९॥

प्रवृत्तिस्तु प्रवाहे स्यादुदन्ते च प्रवर्त्तने ।

अवन्त्यादौ च पर्याप्तिः प्रक्रामप्रार्प्तिरक्षणे ॥१३०॥

प्रकृतिर्गुणसाम्ये स्याद्मात्वादि स्वभावयोः ।

योनौ लिङ्गे पौरवर्गेऽमी पक्षत्याद्यः स्त्रियाम् ॥१३१॥

पार्वती शक्तकी दुर्गा गोपालपुत्रिकासु च ।
 प्रार्थितं याचिते शत्रुसरुद्धेऽभिहिते त्रिषु ॥१३२॥
 पितृन् विहङ्गमे पुंसि पतनेच्छौ पुनस्त्रिषु ।
 पिशित मासे मांस्या स्त्री पिण्डितं गणिते घने ॥१३३॥
 पीडितं करणे स्त्रीणां यन्त्रिते बाधितेऽपि च ।
 पुटितं स्याद् हस्तपुटे पाटितस्यूतयोरपि ॥१३४॥
 पृषन्मृगे पुमान् विन्दै न द्वयोः पृषतोऽपि ना ।
 अनयोश्च त्रिषु श्वेतविन्दुयुक्तेऽप्युभावपि ॥ १३५ ॥
 प्रोक्षित निहते सिक्ते वृहती वसनान्तरे ।
 क्न्दोभित्क्षुद्रवार्त्ताकी वारिधानीषु वाचि च ॥१३६॥
 कण्टकारी महत्याश्च भवत् युष्मत् सतो स्त्रिषु ।
 स्त्री वाणभेदे भरतो नाव्यशास्त्रे मुनौ नटे ॥१३७॥
 रामानुजे च दौष्मन्तौ भाखान् भास्वरस्वर्ययोः ।
 भारतं ग्रन्थभेदे स्याद् वर्षभेदेऽथ भारती ॥१३८॥
 वचने च सरस्वत्या पक्षिवृत्तिप्रभेदयोः ।
 भासन्त सुन्दराकारे त्रिषु ना भासपक्षिणि ॥१३९॥
 भावित वासिते प्राप्ते भूभृन् नाऽद्रौ महीपतौ ।
 महती वक्त्रकीभेदे राज्ये स्यात् तु नपुंसकम् ॥१४०॥
 तत्त्वभेदे पुमान् वद्धे वाच्यवन्मथित पुनः ।
 क्रीव निर्जलघोले स्यात् त्रिव्यालेडितघृष्टयोः ॥१४१॥

मरुद्देवे समीरे ना ग्रन्थिपर्णे नपुसकम् ।
 नुपितं हृतखण्डितयो मूर्च्छितमपिसोच्छ्रयेचमूढे च ॥१४२॥
 रजतं त्रिषु शुक्ले स्यात् क्लीवं चारे च दुर्वर्णे ।
 रमति नायके नाके पुंसि स्याद् रेसितं पुनः ॥१४३॥
 रूतस्तनितयोः क्लीवं स्वर्णादिखचिते त्रिषु ।
 रेवती हलिपत्न्यां स्यात् ताराभिन्नात्भेदयोः ॥१४४॥
 रैवतस्तु सुवर्णालौ गैलभेदेऽपि शङ्करे ।
 रोहितं कुङ्कुमे रक्ते च्छजुशक्रशरासने ॥१४५॥
 पुंसि स्यान् मीनमृगयो भेदे रोहितककुम्भे ।
 रोहित् मृग्यां जनाभेदे स्त्री नाऽर्के लनितं त्रिषु ॥१४६॥
 ललिते चेष्टितेऽपि स्याद् चारभेदे तु न द्वयोः ।
 लोहितं रक्तगोशीर्षे कुङ्कुमादिकुचन्दने ॥१४७॥
 पुमान् नदान्तरे भौमे वर्णे च त्रिषु तद्वति ।
 वर्द्धितं प्रसृते छिन्ने पूरिते वदति गर्वि ॥१४८॥
 सचिधे पुंसि वदतुः पधिके वृषभे पुमान् ।
 वनिता जानरागस्त्रीस्त्रियोः स्त्री त्रिषु याचिते ॥१४९॥
 सेविते वापितं बीजाकृतमुण्डितयो स्त्रिषु ।
 वसतिः स्यात् स्त्रियां वासे यामिन्याञ्च निकेतने ॥१५०॥
 व्यायत व्यागते दीर्घे दृढे चातिशयेऽन्यवन् ।
 व्याघातो योगभेदे स्यादन्तगायप्रचारयोः ॥१५१॥

॥सिता करिणीनार्यो वासित भाविते रुते ।
 ॥सन्तो माधवीयूथ्योरुद्धे नाऽवहिते त्रिषु ॥१५२॥
 वेविक्तं त्रिष्वसम्पृक्ते रक्षःपूतविवेकिषु ।
 असुनन्दे ना विहस्तः पण्डे ना व्याकुले त्रिषु ॥१५३॥
 वेनीतः सुवहाशे स्याद् वणिज्यपि पुमान् त्रिषु ।
 जितेन्द्रियेऽपनीते च निभृते विनयान्विते ॥१५४॥
 विश्वस्तो जातविश्वासे विश्वस्ता विधवास्त्रियाम् ।
 विद्युत् तडिति सन्ध्यायां स्त्रिया त्रिषु तु निष्प्रभे ॥१५५॥
 विवृता क्षुद्ररुग्भेदे विस्तृते त्वभिधेयवत् ।
 विनेताऽऽदेशके राज्ञि ना विधाता तु वेधसि ॥१५६॥
 स्मरे ना विनता तार्क्ष्यजनन्यां पिटकाभिदि ।
 विनतः प्रणते भुग्ने शिञ्जिते चाभिधेयवत् ॥१५७॥
 विकृत त्रिषु बीभत्से रागितेऽसङ्गतेऽपि च ।
 विच्छित्ति रङ्गरागे च विच्छेदे हारभेदे स्त्री ॥१५८॥
 विदित बुधितार्थितयो विपत्तिरपि यातनापदोर्योऽपि ।
 वृत्तान्तःप्रक्रियत्या स्यात्कात्स्न्यवार्त्ताप्रभेदयोः ॥१५९॥
 प्रस्तावे वेष्टित रुद्धे शालके करणान्तरे ।
 वेक्षित गमने क्लिव कुटिले विधुते त्रिषु ॥१६०॥
 शकुन्त कीटभेदे स्यात् भासपत्तिविहङ्गयोः ।
 श्रीमान् तिलकवृत्ते ना मनोज्ञे धनिके त्रिषु ॥१६१॥

श्रीपतिः पुंसि पृथिवीनाथे च मधुच्छदने ।
 शुद्धान्तोऽन्तःपुरे क्ष्माष्टद्रुहः कक्षान्तरेऽपि च ॥१६२॥
 स्ववन्ती तु तरङ्गिण्यां गुल्मस्थानौषधीभिर्देाः ॥
 संवर्त्तः प्रलये मुन्यन्तरे कर्षफलेऽपि च ॥१६३॥
 खलितं चलिते भ्रंशे संचतं सङ्गते दृढे ।
 संस्रुतः कृत्रिमे शक्ते भूपितेऽप्यन्यलिङ्गकः ॥१६४॥
 स्त्रीवन्तु लक्ष्मणोपेते स्यपतिः कञ्चुकिन्यपि ।
 जीवेष्टि याजके शिल्पिभेदे ना सत्तमे त्रिषु ॥१६५॥
 सङ्घातः स्यात् पुंसि घाते संचतौ नरकान्तरे ।
 संवित्तिः प्रतिपत्तौ स्यादधिवादे जनस्य च ॥१६६॥
 सन्ततिः स्यात् पङ्क्तौ गोत्रे पारम्यर्थ्ये च पुत्रयोः ।
 समितिः सम्पराये स्यात् सभायां सङ्गमेऽपि च ॥१६७॥
 समाप्तिरवसाने स्यात् समर्थनेऽथ सम्मतिः ।
 अभिलाषेऽप्यनुज्ञायां संवित्त्वाद्यास्तु योपिति ॥१६८॥
 स्यापितं निश्चिने न्यस्ते स्तिमितो निश्चलाद्द्रुयोः ।
 सिकता स्त्री सिकतिले वानुकायान्तु भूमनि ॥१६९॥
 सुरतं स्यान्निधुवने देवत्वे सुरता मता ।
 सुकृतन्तु शुभे पुण्ये क्लीवं सुविहिते त्रिषु ॥१७०॥
 सुव्रता सुखसन्दाहाशोभनव्रतयोरपि ।
 सुनीतिः शोभननये ध्रुवमातरि योपिति ॥१७१॥

स्रुतं मङ्गलेऽपि स्यात् प्रियसत्यवचस्यपि ।
 हृत्ति दिशि स्त्रियां पुंसि हयवर्णविशेषयोः ॥१७२॥
 अस्त्रियां स्यात् तृणे चाथ हर्मितं क्षिप्रदग्धयोः ।
 हरिता स्त्री च दूर्वायां हरिद्वर्णयुतेऽन्यवत् ॥१७३॥
 असुन्यङ्गारधान्याच्च मल्लिकाशाकिनीभिदोः ।
 हारीतः पत्त्रिभेदे स्यान् मुनिभेदे च कैतवे ॥१७४॥
 हृत्तितं विस्मिते प्रीते प्रहते हृष्टरोमणि ।

तचतुष्कम् ।

अवसितमृद्वेज्ञानेऽप्यवमानगतेचवाच्यलिङ्गस्यात् १७५
 अर्थपति. पुल्लिङ्गे घनाधिनाये च नरनाथे ।
 अवदातं सिते गौरे विशुद्धेऽप्यन्यलिङ्गकम् ॥१७६॥
 अवगोतन्तु निर्वादे दुष्टगर्हितयोरपि ।
 अन्तर्गत विस्मृते स्यान् मध्याप्राप्ते च वाच्यवत् ॥१७७॥
 अङ्गारितन्तु दग्धे स्यात्पलाशकलिकोद्गमे ।
 अपावृत्तस्तु पिहिते स्यतन्ते चापि वाच्यवत् ॥१७८॥
 अत्याहित महाभोतौ जीवनापेक्षकर्मणि ।
 अभिनोतस्त्रिषु न्याये संस्क्रुतामर्षिणोरपि ॥१७९॥
 अभिजानः कुलीने स्यान् न्याय्यपण्डितयोरपि ।
 अभियुक्तः परै रुद्धे तत्परैऽप्यभिधेयवत् ॥१८०॥

अतिमुक्तस्तु निःसङ्गे वासन्त्यां तिनिशोऽपि च ।
 अपध्वस्तः परित्यक्ते निन्दितेऽप्यवचूर्णिते ॥१८२॥
 अधिच्छिन्नः प्रणिहिते कुत्सिते भर्त्सिते त्रिषु ।
 अंशुमान् भास्करे शालपर्ण्यामंशुमती स्मृता ॥१८२॥
 भवेदपचितिः पूजाव्ययनिष्कृतिहानिषु ।
 अयानुमतिरूनेन्दुपूर्णमानुजयोरपि ॥१८३॥
 अभिशक्तिः प्रार्थनापवादयोश्च त्रयं स्त्रियाम् ।
 आयुष्मान्योगभेदे ना वाच्यवच्चिरजीविनि ॥१८४॥
 उपाहितोऽनलोत्पाते पुमानारोपिते त्रिषु ।
 उपाकृतोऽध्वरहतपणौ नोपद्रुते त्रिषु ॥१८५॥
 उदास्थितः प्रतीहारि प्रव्रज्यावसिते चरे ।
 स्यादुन्निखितमुत्कीर्णे तनूकृते च वाच्यवत् ॥१८६॥
 उद्घाहितमुदीर्णे स्याद् बहुघाहितयोस्त्रिषु ।
 भवेदुपचितं दिग्धे समृद्धे चान्यलिङ्गकम् ॥१८७॥
 उज्जृम्भितं त्रिपून्फले चेष्टायाश्च नपुंसकम् ।
 उपरक्तो व्यसनार्त्ते राज्ञ्यस्तेन्दुमृर्ययोः ॥१८८॥
 उपसत्तिः सङ्गमात्रे सेवायामपि योपिति ।
 ऋष्यप्रोक्ता शतावर्यतिवलाशुकशिविषु ॥१८९॥
 ऐरावतोऽभ्रमातङ्गे नारङ्गे लकुचद्रुमे ।
 नागभेदे च पुंसि स्याद् विद्युत्तङ्गेदयोः स्त्रियाम् ॥१९०॥

नपुसकं महेन्द्रस्य ऋजुदीर्घशरामने ।

कलधौत सुवर्णे स्याद् रजते च नपुसकम् ॥१८१॥

भवेत् कुहरितं क्लीवं पिकालापे रतध्वनौ ।

कुमुदान् कुमुदप्राये देगे स्याद् वाच्यलिङ्गकः ॥१८२॥

कुमुदती कुमुदिन्यां कुशपत्न्याञ्च योषिति ।

कृष्णवृन्ता पाटलायां मापपर्ण्याञ्च योषिति ॥१८३॥

अथ गन्धवती पृथ्वी पुरीभिद् व्यासमाहृषु ।

सुरायाञ्च गरुत्मांस्तु पक्षिमात्रे खगाधिपे ॥१८४॥

भवेद् गृहपतिः पुंसि गृहस्थेऽपि च सत्रिणि ।

चन्द्रकान्तस्तु पुंसि स्यान् मणिभेदे च कैरवे ॥१८५॥

चर्मण्वती नदीभेदे कदलीपादपे स्त्रियाम् ।

चित्रगुप्तस्तु पुंसि स्याद् यमे तस्य च लेखके ॥१८६॥

दिवाभीतः कुम्भिले स्याद् उलूके कुमुदाकरे ।

दिवाकीर्त्तिस्तुपुंसि स्यान् नापितान्तावसायिनेः ॥१८७॥

दीपवान् सिन्धुनदयो दीपवत्यापगाभुवाः ।

दृशदती नदीभेदे कात्यायन्यामपि स्त्रियाम् ॥१८८॥

स्याद् धूमकेतुरुत्प्रातभेदे वैश्वानरे पुमान् ।

नन्द्यावर्त्तः पुमान् वेश्मप्रभेदे तगरद्रुमे ॥१८९॥

नदीकान्तः समुद्रे स्यात् हिज्जले सिन्धुवारके ।

नदीकान्ता स्त्रियां जम्ब्वां काकजङ्घौपधावपि ॥२००॥

नागदन्तो द्विपरदे गृहान्निर्गतदारुणि ।
 नागदन्तो तु कुम्भायां श्रीहस्तिन्यामपि स्त्रियाम् ॥२०१॥
 निष्कासितो निर्गमितेऽप्याहिते धिक्कृतेऽपि च ।
 अथ निस्तुपितं त्यक्ते त्वग्विहीने लघुकृते ॥२०२॥
 निराकृतिरनाकारेऽस्वाध्याये त्रिषु वारणे ।
 स्त्रियां परिगतं प्राप्ते विस्मृतज्ञातचेष्टिते ॥२०३॥
 अथ प्रणिहितं न्यस्ते प्राप्तेऽपि च समाहिते ।
 अथ पञ्चवितं साक्षारक्ते सपञ्चवे तते ॥२०४॥
 भवेत् प्रतिक्षतं द्विष्टे प्रतिस्त्रलितरुद्धयोः ।
 प्रतिक्षिप्तं वारिते स्यान् प्रापिते पञ्चकं त्रिषु ॥२०५॥
 परिवर्त्तो विनिमये कूर्मराजे ऽपवर्त्तने ।
 परिस्तुता स्त्री वारण्यां स्यन्दे स्यादभिधेयवत् ॥२०६॥
 प्रधूपिता क्लेशितायां सूर्यगन्तव्यदिश्यपि ।
 पर्युषितः पुंसि प्रेते प्रत्यक्तप्रस्तुनि त्रिषु ॥२०७॥
 पञ्चगुप्तस्तु चार्वाकदर्शने कमठे पुमान् ।
 प्रजापतिर्ना दक्षादौ महीपाले विधातरि ॥२०८॥
 प्रतिपत्तिः प्रवृत्तौ च प्रागल्भ्ये गौरवेऽपि च ।
 सम्प्राप्तौ च प्रबोधे च पद्प्राप्तौ च योषिति ॥२०९॥
 अथ प्रप्रजिता नांसी मुण्डीरी तापसीषु च ।
 प्रतिकृतिरच्चायां प्रतिनिधिप्रतिकारयोश्च स्त्री ॥२१०॥

पाशुपतो वक्रपुष्पे पशुपत्यधिदैवते च तद्भक्ते ।
 पारिजातः सुरतरौ पारिभद्रतरावपि ॥२११॥
 पारावती गोपगीति नदीभिल्लवली फले ।
 पारावतः कालरवे तथा मर्कटतिन्दुके ॥२१२॥
 पुष्पदन्तस्तु दिङ्मागभेदे विद्याधरान्तरे ।
 पुरस्कृतोऽभिशस्तारिग्रस्ताये कृतपूजिते ॥२१३॥
 भगवान् ना जिने गौर्यां स्त्रियां पूज्ये तु वाच्यवत् ।
 अथ भोगवती नागपुरी नद्योरक्षौ पुमान् ॥२१४॥
 रङ्गमाता तु कुट्टन्यां वृक्षरोगान्तरे पुमान् ।
 लक्ष्मीपतिः पुमान् वासुदेवे नरपतावपि ॥२१५॥
 व्यतीपातो महेत्याते योगभेदापमानयोः ।
 वनस्पतिर्ना दुमात्रे विना पुष्यं फलिद्रुमे ॥२१६॥
 विनिपातो निपाते स्याद् दैवादिव्यसने पुमान् ।
 विजृम्भितन्तु चेष्टाया क्लोवं त्रिपु विकस्वरे ॥२१७॥
 विवस्वांस्तु सुरे ह्यर्थे तन्नगर्यां विवस्वती ।
 वैजयन्तो महेन्द्रस्य ध्वजप्रासादयोः पुमान् ॥२१८॥
 वैजयन्ती पताकायां जयन्तीपादपे स्त्रियाम् ।
 भवेत् शनधृतिः पुंसि शक्रे च परमेष्ठिनि ॥२१९॥
 शुभदन्ती सुदत्यां स्यात् पुष्पदन्तेभयोपिति ।
 समुद्रतं समुद्रोष्णेऽप्यविनीते च वाच्यवत् ॥२२०॥

सदागति नार्कवातनिर्वाणेषु सदीश्वरे ।
 सरखांस्तु नदे चाब्धौ नान्यवद् रसिक्रे स्त्रियाम् ॥२२१॥
 वाणी स्त्री रत्नवाग्देवी गोनदीषु नदीभिदि ।
 मनुपत्न्यामपि सत्यवती व्यासस्य मातरि ॥२२२॥
 नारदर्चीकयोः पत्न्यां स्त्रियां पुंसि नृपान्तरे ।
 समुद्रान्ता तु कापोसी पृक्षादुरालभासु च ॥२२३॥
 समाहितः समाधिस्थेऽप्युक्तसिद्धान्त आहिते ।
 निर्विवादीकृतेऽपि स्यात् प्रतिज्ञाते च वाच्यवत् ॥२२४॥
 समाघाते वधे युद्धे सह्यावान् पण्डिते पुमान् ।
 सह्यायुक्तेऽन्यनिङ्गोऽथ सुधासृतिः पुमान् मखे ॥२२५॥
 चन्द्रे सुभाषिते बुद्धे पुमान् सृक्ते नपुंसकम् ।
 मृर्यभक्तसु वम्भुके पुंसि त्रिष्वर्कपृजके ॥२२६॥
 सेनापतिः कार्तिकेयेऽप्यनीकाविकृते पुमान् ।
 हिमारातिः पुमान् वीतिहोत्रे किरणमानिनि ॥२२७॥
 चैमवत्यभया स्वर्णलीर्योः येतवचो मयोः ।

तपञ्चकम् ।

अवलोकितो नालोकनाथे त्रिषु निरीक्षिते ॥२२८॥
 अपराजित ईशान्द्रव्यन्तरे नाऽजिते त्रिषु ।
 गिरिकर्णो जयाद्युर्गान्नपणीषु योऽपिनि ॥२२९॥

उपधूपित आसन्नमरणे परिधूपिते ।
 स्याद् गणाधिपतिः पुंसि शङ्करेऽपि गजानने ॥२३०॥
 भवेत् पिपतिषन् पित्सौ त्रिषु पुंसि विहङ्गमे ।
 पृथिवीपतिस्तु भूपे ऋषभाख्यौपधौ पुमान् ॥२३१॥
 मूर्धाभिपिक्तो भूपाले मन्त्रिणि क्षत्रियेऽपि च ।
 याद् साम्पतिरन्मोघौ पश्चिमाशापतौ पुमान् ॥२३२॥
 वसन्तदूतश्रूते स्यात् पिकपञ्चमरागयोः ।
 वसन्तदूती पाटल्यामतिमुक्ते च योपिति ।

तपङ्कम् ।

अर्द्धपारावतश्चित्रकण्ठे तित्तिरपक्षिणि ॥२३३॥

तसप्रकम् ।

सनुद्रनवनीतं स्यात् क्लीवं पीयूषचन्द्रयोः ।

तान्तवर्गः समाप्तः ।

यैककम् ।

य रक्षणे मङ्गले च साध्वसे च नपुंसकम् ।

शिलोच्चये पुमानेव क्वचित्तु भयरक्षके ॥१॥

यदिकम् ।

अर्थो विषयार्थनयो र्धनकारणवस्तुषु ।

अभिधेये च शब्दाना निवृत्तौ च प्रयोजने ॥२॥

आस्यात्वालम्बनास्थानयत्नापेक्षासु योपिति ।
 कन्या नृन्मयभित्तौ स्यात् तथा प्रावेरणान्तरे ॥३॥
 कायः स्यादतिदुःखेऽपि निष्पाके च द्रवस्य च ।
 कुयः स्त्रीपुंसयोर्वर्णकम्बले पुंसि वर्हिषि ॥४॥
 कोथो ना नेत्ररोगस्य भेदे च शटिते त्रिपु ।
 ग्रन्थो ग्रन्थनाधनयोः स्यात् शास्त्राक्षरसङ्ख्यायोः ॥५॥
 ग्रन्थिस्तु ग्रन्थिपर्णे ना बन्धे रुग्भेदपर्वणोः ।
 गाथा श्लोके सङ्खतान्यभाषायां गेयवृत्तयोः ॥६॥
 तीर्थं शास्त्राध्वरक्षेत्रोपाय नारीरजःसु च ।
 अवतारर्षिजुष्टाम्बुपात्रोपाध्यायमन्त्रिषु ॥७॥
 तुल्यमञ्जन भेदे स्यान् नीलीसूक्ष्मैलयोः स्त्रियाम् ।
 दुःस्यः स्याद् दुर्गते मूर्खे दुःखेन तिष्ठति त्रिपु ॥८॥
 प्रस्थोऽस्त्रियां मानभेदे सानावुन्मितवस्तुनि ।
 पाथोऽर्केऽग्नौ जले क्लीवं पृथुः स्यान् महति त्रिपु ॥९॥
 त्वक्पर्ण्यां कृष्णजीरे स्त्री पुमानग्नौ नृपान्तरे ।
 प्रोथोऽस्त्री हयघोषायां ना कव्यामध्वगे त्रिपु ॥१०॥
 मन्यः स्यात् पुंसि मन्याने साक्तवे च दिवाकरे ।
 यूथं तिर्यक् समूहेऽस्त्री पुष्पभेदे तु योपिति ॥११॥
 रथः पुनानवयवे स्रन्दने वेतसेऽपि च ।
 वीथी पङ्क्तौ गृहाङ्गे च रूपकान्तरवर्त्मनाः ॥१२॥

संख्यश्चरेऽवस्थिते स्त्री स्थितौ सादृश्यनाशयोः ।
 सार्यो वणिकसूहे स्यादपि सङ्घातमात्रके ॥१३॥
 सिक्थो भक्तपुलाके ना मधूच्छिष्टे नपुंसकम् ।

यत्रिकम् ।

अतिथिः कुशपुत्रे स्यात् पुमानागन्तुके त्रिपु ॥१४॥
 अश्वत्यः पिप्पलद्रौ स्यादश्वत्या पूर्णमातिथौ ।
 अव्यथो निर्व्यथे सर्पे चारटीपथ्ययोः स्त्रियाम् ॥१५॥
 उन्माथः कूटयन्त्रे स्यान्मारणे घातकेपुमान् ।
 उपस्थः शोफसि क्रोडे तथा मदनमन्दिरे ॥१६॥
 उद्रथो रथकोले स्यात् ताम्रचूडाख्यपक्षिणि ।
 क्ष्वयुर्ना क्षुते कासे कायस्यः परमात्मनि ॥१७॥
 नरजातिविशेषे ना हरितक्यान्तु योपिति ।
 कापथः कुत्सितपथे उशीरे क्लीवमिष्यते ॥१८॥
 गोशय्योर्ना करीपे स्याद् गोष्ठे गोजिह्विकौपथौ ।
 दमशस्तु पुमान् दण्डे दमे च परिकोर्त्तितः ॥१९॥
 निगीथस्तु पुमानर्द्धरात्रे स्याद् रात्रिमात्रके ।
 निर्ग्रन्थो नग्नकेऽपि स्यान् निखवालिशयोरपि ॥२०॥
 प्रमथा स्यात् हरितक्यां हरपारिपदे पुमान् ।
 वरूथो रथगुप्तौ स्यात् वरूथं चर्मवेश्मनोः ॥२१॥

मन्मथः कामचिन्तायां कपित्थे कुसुमायुधे ।
 वयःस्या तु स्त्रियां ब्राह्मीगुडूच्यामलकीषु च ॥२२॥
 रुक्षमैलायान्च काकोल्यां पथ्यायां तरुणे त्रिषु ।
 वनयुः पुंसि वमने गजस्य करशीकरे ॥२३॥
 विदिथे। योगिकृतिनोः शमथः शान्तिमन्त्रिणोः ।
 पङ्गुन्यातु वचायां स्त्री स्यात्करञ्जान्तरे पुमान् ॥२४॥
 समर्थस्तु हिते शक्ते सम्बद्धेऽप्यन्यलिङ्गकः ।
 सिद्धार्थस्तु पुमान् शाक्यसिंहे च सितसर्पपे ॥२५॥

य चतुष्कम् ।

अनौकस्यो रणगते हस्तिशिक्षाविचक्षणे ।
 राजरक्षिणि चिह्ने च वीरमर्द्दनकेऽपि च ॥२६॥
 भवेदिति कथाऽपार्थवाच्चयद्देयनष्टयोः ।
 चतुष्पथं चतुर्मार्गे सङ्गमे ब्राह्मणेऽपि ना ॥२७॥
 अथ चित्ररथः सूर्यगन्धर्वान्तरयोः पुमान् ।
 दशमीस्यो नष्टवीर्ये स्यविरेऽप्यलिङ्गकः ॥२८॥
 बाणप्रस्थो मधुकेऽपि स्यात्तृतीयाश्रमे पुमान् ।
 भवेदुदरथिः पुंसि समुद्रे च वियनाणौ ॥२९॥

यान्तवर्गः समाप्तः ।

द्वैककम् ।

दः पुमान्त्रले दत्ते स्त्रियां शोधनदानयोः ।

क्वेदोपतापरचासु पुमांसु दातरि स्मृतः ॥१॥

दद्विकम् ।

अब्दः संवत्सरे वारिवाहमुस्तकयोः पुमान् ।

अब्दः स्त्रियां स्यान्निगडे प्रभेदे भूषणस्य च ॥२॥

कन्दोऽस्त्री गृहकरणे शस्यमूले जलधरे पुमान् ।

कुन्दो माघेऽस्त्री मुकुन्दभूमिनिध्यन्तरेषु वा ॥३॥

लोदः स्यात्पुंसि रजसि पेपणे च प्रकीर्तितः ।

गदो भ्रातरि विष्णोः स्यादामये नाऽऽयुधे गदा ॥४॥

क्वदः पलाशे गरुति ग्रन्थिपर्णतमालयोः ।

क्वन्दो वशेऽभिप्राये धोदा पुत्रीमनीषयोः ॥५॥

नन्दिर्युताङ्ग आनन्देऽस्त्री नन्दिकेश्वरे पुमान् ।

नदी सरिति शोणादौ ना नन्दा स्यादलिञ्जरे ॥६॥

गौर्यां तिथिविशेषे स्त्रीनिधिराजभिदोः पुमान् ।

निन्दा स्यादपवादेऽपि कुत्सायामपि योषिति ॥७॥

पदं शब्दे च वाक्ये च व्यवसायप्रदेशयोः ।

पादतच्चिह्नयोः स्यान्त्राणयोरङ्गवस्तुनाः ॥८॥

श्लोकपादेऽपि च क्लीवं पुलिङ्गः किरणे पुनः ।

पादो ब्रह्मे तुरीयांशे शैलप्रत्यन्तपर्वते ॥९॥

चरणे च मयूखे च वन्दालतान्तरे स्मृता ।
 भिक्षुक्यामपि वन्द्याञ्च विन्दुर्दन्तक्षतान्तरे ॥१०॥
 भ्रुवोर्मध्ये रूपकार्यप्रकृतौ पृषते पुमान् ।
 वेदितर्यन्यलिङ्गः स्याद् भद्रं कल्याणशर्मणोः ॥११॥
 भेदो द्वैधे विशेषे स्यादुपजापे विदारणे ।
 मन्दो रेतसि कस्तूर्यां गर्वे चर्षेभदानयोः ॥१२॥
 मन्दोऽतीक्ष्णो च मूर्खे च खैरे चाभाग्यरोगिणोः ।
 अल्पे च त्रिषु पुंसि स्यात् क्षस्तिजात्यन्तरे जनैः ॥१३॥
 मृदुः स्यात् कोमलेऽतीक्ष्णे रदो दन्ते विन्नेखने ।
 विदा ज्ञाने च निर्दिष्टा मनीषायाञ्च योषिति ॥१४॥
 वेदः श्रुतौ च वृत्ते च वेदिः स्यात् पण्डिते पुमान् ।
 स्त्रियामद्गुलिमुद्रायां स्यात् परिष्कृतभूतले ॥१५॥
 शादः स्यात् कर्दमे शष्ये स्वादुर्मिष्टमनोजयोः ।
 हृदस्तु कथितः सूपकारे च व्यञ्जनान्तरे ॥१६॥
 स्वेदस्तु स्वेदने घर्मे हृद् क्लीबं तु क्वचित्तयोः ।

दक्षिकम् ।

अङ्गदः कपिभेदे ना केयूरे तु नपुंसकम् ॥१७॥
 अङ्गदा याम्यदिग्दन्तिर्हास्तन्यामपि योषिति ।
 अरेहर्षि...

अर्हन्दुः स्यादतिप्रौढस्त्रीयोन्यङ्गुलियोजने ।
 अर्बुदो मांसपुरुषे दशकोटिषु न स्त्रियाम् ॥१९॥
 महीधरविशेषे नाऽथास्यदं पदकृत्ययोः ।
 आसन्दो वासुदेवे स्यात् खट्वा भेदे च योऽपिति ॥२०॥
 आक्रन्दः क्रन्दने ज्ञाने मित्रदारुणयुद्धयोः ।
 भ्रातर्यपि च पुंसि स्यादासौदो गन्धर्षयोः ॥२१॥
 ककुद् स्त्री ककुदोऽप्यस्त्री वृषाङ्गे राड्ध्वजे वरे ।
 क्षणदो गणके रात्रौ क्षणदा क्षणदं जले ॥२२॥
 कपर्दः खण्डपरशो जटाजूटे वराटके ।
 कर्णान्दुरुन्धिप्रिकायां कर्णपाश्यामपि स्त्रियाम् ॥२३॥
 क्रथाद् रक्तसि पुंसि स्यान्-मांसाग्निन्यन्यलिङ्गकः ।
 कामदा कामधेनौ स्त्री कामदातरि वाच्यवत् ॥२४॥
 कुमुद् त्रिषु स्यात् कृपणे कैरवे तु नपुंसकम् ।
 कुमुदं कैरवे रक्तपद्मे स्त्री कुम्भिकौपधौ ॥२५॥
 गान्धार्यं पुंसि दिङ्नागे नागे शाखामृगान्तरे ।
 कुसीदं जीवने वृद्ध्या स्त्रीषु त्रिषु कुसीदिके ॥२६॥
 कौमुदः स्यात् कार्तिकिके चन्द्रिकायान्तु कौमुदी ।
 गोप्यदं गोपदशभ्रे गवाच्च गतिगोचरे ॥२७॥
 गोविन्दो वासुदेवे स्याद् गवाध्वजे बृहस्पतौ ।
 गोनर्हमपि कैवर्तीमुस्तकेपुंसि सारसे ॥२८॥

जलदो मुस्तके मेघे जीवदो वैद्यविद्विषोः ।
 तरद् स्त्रियां भवेऽपि स्यात् कारण्डवविहङ्गमे ॥२८॥
 तोयदो मुस्तके मेघे पुमानाज्ये नपुंसकम् ।
 दरद् स्त्रियां प्रपातेऽपि भयपर्वतयोरपि ॥३०॥
 दारदो विपभेदे स्यात् पारदे हिङ्गुले पुमान् ।
 दायादस्तु भवेत्पुंसि सपिण्डे तनयेऽपि च ॥३१॥
 दृपद् निष्पेपणशिलापट्टप्रस्तरयोः स्त्रियाम् ।
 धनदस्तु कुबेरे स्यात्पुलिङ्गो दातरि त्रिषु ॥३२॥
 ननदं स्यात्पुष्परसौशीरमांसीषु न द्वयोः ।
 नर्मदः केलिसचिवे नर्मदा सरिदन्तरे ॥३३॥
 निर्वादः स्यात् लोकावाद्परिनिष्ठितवादयोः ।
 निपादः स्वरभेदे स्यात् चण्डाले धीवगन्तरे ॥३४॥
 प्रमदः सम्भदे मत्ते स्त्रियामुत्तमयोपिति ।
 प्रसादोऽनुग्रहे काव्यगुण स्वास्थ्यप्रसक्तिषु ॥३५॥
 प्रणादस्तु पुमान् तारशब्दे च श्रवणामये ।
 प्रासादो देवनृपयो-र्गृहेऽथ वरदा स्त्रियाम् ॥३६॥
 कन्यायां वाच्यलिङ्गस्तु प्रसन्ने च समङ्गके ।
 भसद् स्त्री भासुरे योनौ मर्यादा सीमनि स्थितौ ॥३७॥
 माकन्दः सङ्कारे स्त्री धात्रीनगरभेदयोः ।
 मकन्दो निधिभिद्विष्ण रत्नभेदेषु कुन्दुरौ ॥३८॥

मेनादस्तु पुमान् केकिमार्ज्जारकागलेषु च ।
 विशदः पाण्डरं व्यक्ते शरद् स्त्री वत्सरेऽप्यृतौ ॥३८॥
 शारदोऽब्दे स्त्रियां तोयपिप्पलीसप्तपर्णयोः ।
 शस्ये क्लीवं शरज्जाते नूतना प्रतिभे त्रिषु ॥४०॥
 पड्भिन्दुः स्यात्कीटभेदपुण्डरीकाक्षयोः पुमान् ।
 सम्यद् भूतौ गुणोत्कर्षे हारभेदेऽपि च स्त्रियाम् ॥४१॥
 सविद् स्त्रियां प्रतिज्ञायामाचारज्ञानसङ्गरे ।
 सम्भाषणे क्रियाकारे सङ्केते नास्ति तोषणे ॥४२॥
 सम्भेदः स्फुटने सङ्गे सुनन्दारोचनोमयोः ।

दचतुष्कम् ।

अभिष्यन्दीऽतिवृद्धौ स्यादास्रवेऽक्षिगदेऽपि च ॥४३॥
 अष्टापदोऽस्त्री कनके शारीणा फलकेऽपि च ।
 अष्टापदी चन्द्रमह्यां शरभे मर्कटे पुमान् ॥४४॥
 अपवादस्तु निन्दायामाज्ञाविश्रम्भयोरपि ।
 अभिमर्दस्तु पुंसि स्यादवमर्दे सप्तराये च ॥४५॥
 एकपदं तत्काले नपुंसकं वर्त्मनि स्त्री स्यात् ।
 कटुकन्दः पुमान् शिथौ शृङ्गवेररसेनयोः ॥४६॥
 कसुविन्द रत्नभेदे मुस्ताकुल्माषयोः पुमान् ।
 अथ कौकनटं रक्तकुमुदे रक्तपङ्कजे ॥४७॥
 चतुष्पदी तु पद्ये नाप्यौ च करणान्तरे ।

भवेज्जनपदो जानपदोऽपि जनदेशयोः ॥४८॥
 तमोनुदग्नीन्द्रको ना प्रतिपद् स्त्री तिथौ मतौ ।
 परिवादोऽपवादे स्यात् वीणावादनवस्तुनि ॥४९॥
 प्रियंवदः खेचरे ना प्रियवाचि तु वाच्यवत् ।
 पीठमर्द्दोऽतिधृष्टे स्यान् नायकस्य प्रियेऽपि च ॥५०॥
 पुटभेदो नदीवक्त्रे पत्तनातोद्ययोरपि ।
 नद्यानादः कुञ्जरे स्याद् वर्षुकाब्दे मद्याखने ॥५१॥
 मुचुकुन्दो वृक्षभेदे मान्धातुतनयेऽपि च ।
 मेघनादस्तु वरुणे तनये रावणस्य च ॥५२॥
 विशारदः पाण्डनेऽपि धृष्टे विष्णुपदन्तु खे ।
 क्षीरोदे च स्त्रियां गङ्गारविसंक्रान्तिभेदयोः ॥५३॥
 गशविन्दुः पुमान् वासुदेवे राजान्तरेऽपि च ।
 शतानन्दो मुनेर्भेदे देवकीनन्दनेऽपि च ॥५४॥
 गतहृदा स्त्रियां वज्रे सैदामन्याञ्च कीर्त्तिना ।
 समर्थ्यादः समीपे ना मर्थ्यादासहिते त्रिषु ॥५५॥

दपञ्चकम् ।

भवेदुपनिपद् धर्मो वेदान्ते विजने स्त्रियाम् ।
 सद्यस्रपादः कारुण्डे मार्त्तण्डे यज्ञपूरुषे ॥५६॥

दान्तवर्गः समाप्तः ।

धैककम् ।

धो ना धर्मे कुवेरे च क्लीवन्तु वसुनि स्मृतम् ।
 धो धा च ब्रह्मणि ख्यातो धा च स्याद् धारकेऽपि च ॥१॥
 धी ज्ञानभेदे बुद्धौ च धुः स्मृता धूनने स्त्रियाम् ।
 धद्विकम् ।

अर्द्ध समाशे खण्डे नाऽश्वि-र्ना सरसि वारिधौ ॥२॥
 अश्व स्यात् तिमिरे क्लीव चक्षुर्धौनेऽभिधेयवत् ।
 आधिः पुमाश्चित्तपीडा प्रत्याशा बन्धकेषु च ॥३॥
 व्यसने चाप्यधिष्ठानेऽपीड्यमातपदीप्तयोः ।
 ऋद्धं सम्यन्नधान्ये च सुसमृद्धे च वाच्यवत् ॥४॥
 ऋद्धिः स्यादोपधीभेदे समृद्धावपि योपिति ।
 गन्ध. प्रति वेद्याहीदलेशसम्बन्धगन्धके ॥५॥
 गाध. स्थाने च लिप्सायां गोधा तल्लनिहाकथे ।
 दधि क्षीरान्तरावस्याभावे श्रीवासवासयोः ॥६॥
 दग्धः स्रष्टेऽन्यलिङ्गः स्यात् स्थितार्कदिशि च स्त्रियाम् ।
 दिग्धो विपाक्तवाणे स्यात् पुंसि लिप्तेऽन्यलिङ्गक ॥७॥
 दुग्ध प्रपूरिते क्षीरे दुग्धो क्षीराविकौपधौ
 दोग्धाऽर्थोपजीविकवौ वत्सगोपालयोः पुमान् ॥८॥
 नद्धा बद्धे तथोद्धृत्ते बन्धस्त्राधौ च बन्धने ।
 बन्धुः स्यात् पुंसि बन्धूके मित्रे भ्रातरि वान्धये ॥९॥

वाधा दुःखे निषेधे च बुधः सौम्ये च पण्डिते ।
 बुद्धौ जिने लब्धवर्णे पुंसि स्याद् बुधितेऽन्यवत् ॥१०॥
 बोधिः पुंसि समाधेश्च भेदे पिप्पलपादपे ।
 मधु पुष्परसत्तौद्रमथे ना तु मधुद्रुमे ॥११॥
 वसन्तदैत्यभिश्चैत्रे स्याज् जीवन्त्यान्तु योपिति ।
 मिहं चित्ताभिसङ्घेपे क्लृप्तमानस्यनिद्रयोः ॥१२॥
 मुग्धस्तु सुन्दरे मूढे मेधा बुद्धौ क्रतौ पुमान् ।
 राधो मासान्तरे राधा चित्रभेदे च धन्विनाम् ॥१३॥
 गोपी विशाखामलकीविष्णु क्रान्तासु विद्युति ।
 लुब्ध आकाङ्क्षिणि व्याधे वधूः स्त्री सारिवौपधौ ॥१४॥
 स्तुपाशटीनवोदासु भार्यापृष्ठाङ्गनासु च ।
 व्याधिः कुष्ठे च रोगे ना व्याधो मृगयुदुष्टयोः ॥१५॥
 तारामयेणे च विधुर्ना कर्पूरेन्दुविष्णुषु ।
 विहं स्याद् वेधिते क्षिप्ते सदृशे वाधिते त्रिषु ॥१६॥
 विधिर्ना नियतौ काले विधाने परमेष्ठिनि ।
 विधा गजान्ने ऋद्धौ च प्रकारे वेतने विधौ ॥१७॥
 बुद्धौ जीर्णे प्रबुद्धे च त्रिषु क्लृप्तान्तु गैलजे ।
 बुद्धिस्तु वर्द्धने योगेऽप्यष्टयर्गोपधान्तरे ॥१८॥
 कल्पान्तरे चाभ्युदये सन्तुहावपि योपिति ।
 अदाऽऽदरे च काङ्क्षायां आहं अहान्विते त्रिषु ॥१९॥

हव्यकव्यविधौ क्लीवं शूङ्खं स्यात्त्रिपु केवले ।
 निर्दोषे च पवित्रे च सन्धा स्थितिप्रतिज्ञयोः ॥२०॥
 खड्गा संहर्षणेऽपि स्यात् साम्ये क्रमसमुन्नतौ ।
 सन्धिः पुमान् सुरङ्गायां भगे सङ्घटनेऽपि च ॥२१॥
 रूपकाणां मुखाद्यङ्गेष्ववकाशे च कीर्तितः ।
 स्तम्भः स्यान् नृपतावंशे सम्परायंसमूहयोः ॥२२॥
 काये तरुप्रकाण्डे च भद्रादौ कन्दसो भिदि ।
 साधु र्वाङ्गुलिके चारौ सज्जने चाभिधेयवत् ॥२३॥
 सिद्धो व्यासादौ भेदे योगस्य देवयोनेश्च ।
 त्रिपु निष्यन्ने स्निग्धं स्नेहयुक्ते चिकणेऽपि स्यात् ॥२४॥
 सिन्धु र्वमयुदेशाब्धिनदे ना सरिति स्त्रियाम् ।
 सिद्धिः स्त्री योगनिष्पत्तिपादुकान्तर्द्विद्विषु ॥२५॥
 सुधा स्त्री लेपने मूर्च्छयां स्तुहीगङ्गेऽप्यकान्तरे ।

धत्रिकम् ।

अवधिस्त्ववधाने स्यात् सीन्नि काले विले पुमान् ॥२६॥
 अगाधमतलत्पर्णे त्रिपु श्भ्रं नपुसकम् ।
 आनङ्गं मुरजादौ च क्लीवं स्यात् सन्दिने त्रिपु ॥२७॥
 प्राविद्धो वाच्यनिङ्गः स्यात् कुटिले च पराहते ।
 आवन्तो ददयन्ते स्यान् प्रेक्षयन्तङ्कारयोक्तयोः ॥२८॥

उत्सेधस्तच्छ्रये न स्त्री क्लीवं संहननऽपि च ।
 उपाधि धर्माचिन्तायां कुटुम्बव्यापृते क्ली ॥२६॥
 विशेषणे पुस्युपाधिः पुसि व्याजरथाङ्गयोः ।
 कवम्भोऽस्त्री क्रियायुक्तव्यपमूर्द्धकलेवरे ॥२७॥
 क्लीवं जले पुस्युदरे वाङ्गरक्षोविशेषयोः ।
 दुर्विधो वाच्यलिङ्गः स्याद् दुर्गतेऽपि खलेऽपि च ॥२८॥
 न्यगोधस्तु पुमान् व्यामवटयोश्च शमीतरौ ।
 न्यग्रोधी त्वपचित्रायां निरोधोनाशरोधयोः ॥२९॥
 निपधः कठिने देशे तद्राजे पर्वतान्तरे ।
 परिधिर्ना यज्ञियदुशाखायामपसूर्यके ॥३०॥
 प्रसिद्धो भूपिते ख्याते प्रणिधिर्नाथने चरे ।
 मागधी स्त्री कणायूथ्यो वाच्यवत् मगधोङ्गवे ॥३१॥
 पुसि वैश्यात् क्षत्रियाजे शुक्लजीरकवन्दिनोः ।
 विबधोविवधस्यापि पर्याहारेऽध्वभारयोः ॥३२॥
 विश्रम्भोऽनुङ्गटेऽपि स्याद् गाढविश्वस्तयोस्त्रियु ।
 विबुधो जे सुरे वीरुध नताविटपयोः स्त्रियाम् ॥३३॥
 नन्नद्धो वर्मिने व्यर्द्धे सम्बाधः सङ्गटे भगे ।
 सन्निधिसु पुमान् सन्निधानेऽपीन्द्रियगोचरे ॥३४॥
 ससिद्धिः प्रकृतौ सिद्धौ सद्दोषायामपि स्त्रियाम् ।
 सम्भोधा बोधने क्षेपे समाधिर्ना समर्थने ॥३५॥

ध्याननीवाकनियमे काव्यस्य च गुणान्तरे ।

सुगन्धिः स्याद्विष्टगन्धे त्रिषु क्लीवन्तु बालुके ॥३८॥

धचतुष्कम् ।

अवरोधस्तिरोधाने राजदारेषु तद्गृहे ।

अवष्टब्धोऽविदूरे स्यादाक्रान्ते चावलम्बिते ॥४०॥

अनुबन्धः शिशौ दोषोत्पादे मुख्यानुयायिनि ।

विनश्यरे प्रकृत्यादौ प्रवृत्तस्यानुवर्तने ॥४१॥

अनुबन्धो तु चिक्यायां तृष्णयामपि योषिति ।

अनिरुद्ध उपानाथे पुंसि चानर्गलेऽन्यवत ॥४२॥

आशाबन्धः समाश्रये तथा मर्कटजालके ।

इष्टगन्धः सुगन्धौ स्यात् त्रिषु क्लीवन्तु बालुके ॥४३॥

इक्षुगन्धा कोकिलाले क्रौड्यां काशे च गोक्षुरे ।

उपलब्धि र्मनौ प्राप्तावपि ज्ञाने च योषिति ॥४४॥

उग्रगन्धाऽजमोदायां वचायां क्लिककौषधैः ।

कालस्कन्धस्तमाले स्यात् तिन्दुके जीवकद्रुमे ॥४५॥

तीक्ष्णगन्धा वचाराजिकयोः शोभाञ्जने पुमान् ।

तृष्णमोधा चित्रकोले कृकलासेऽपि योषिति ॥४६॥

परिव्याधस्तु पुंसि स्याद् वेतसे च द्रुमोत्पले ।

ब्रह्मबन्धुरधिच्छिप्ते निर्देशे ब्राह्मणस्य च ॥४७॥

महौपधन्तु शुण्यां स्याद् विषायां लशुनेऽपि च ।
 समुन्नद्धः समुद्भूते पण्डितमन्यगर्विते ॥४८॥

धपञ्चकम् ।

योजनगन्धा कस्त्र्यां सितायां व्यासमातरि ॥
 धान्तवर्गः समाप्तः ।

नैककम् ।

नः पुमान् सुगते वन्द्ये द्विरण्डे प्रस्तुतेऽपि च ।

नदिकम् ।

अग्नि वैश्वानरेऽपि स्याच् चित्रकाख्यौपधौ पुमान् ॥१॥

अन्नं भुक्ते च भक्ते स्याद् इनः पत्यौ नृपार्कयोः ।

उन्नं क्लिन्ने च सुरते कृत्स्नं सर्वाम्बुकुक्षिपु ॥२॥

घनं स्यात् कांस्यतालादिवाद्यमध्यमनृत्ययोः ।

ना मुस्ताब्दौघदार्येषु विस्तारे लोहमुद्गरे ॥३॥

त्रिपु सान्द्रे दृढे चाद्य चिह्नं लक्ष्मपताकयोः ।

चीनो देशांशुकत्रीक्षिभेदे तन्तौ मृगान्तरे ॥४॥

कृन्तु रक्षसि स्त्रीयं क्वादिते वाच्यलिङ्गकम् ।

क्लिन्नं कृत्ते त्रिलिङ्गं स्याद् गुरुक्ष्यामपि योपिनि ॥५॥

जनो लोके महर्षीकात् परलोके च पामरे ।

सोम नीवध्नोरुतपत्तावेपधीभिदि ॥६॥

जङ्घुः स्यात् पुंसि राजर्षिभेदे च मधुसूदने ।
ज्यानिर्जीर्णौ च हानौ च तटिन्यामपि योषिति ॥७॥
जिनेऽर्हति च बुद्धे च पुंसि स्याज् जित्वरे त्रिषु ।
ज्योत्स्ना चन्द्रातपेऽपि स्यात्ज्योत्स्नायुक्तनिशि स्मृता ॥८॥
ज्योत्स्नीपटोलिकायां स्याज्ज्योत्स्नायुक्तनिशि स्त्रियाम् ।
तनुः काये त्वचि स्त्री स्यात् त्रिष्वल्पे विरले कृशे ॥९॥
दान गजमदे त्यागे पालनच्छेदशुद्धिषु ।
दानुर्दातरि विक्रान्ते दीना स्त्री मूषिकस्त्रियाम् ॥१०॥
वाच्यवद् दुर्गते भीते द्युम्नं वित्ते बलेऽपि च ।
धनुः पुमान् पियालद्वौ राशिभेदे शरासने ॥११॥
धन् स्याद् गोधने वित्ते धाना मृष्टयवे स्त्रियाम् ।
धन्याकेऽभिनवोङ्गिन्ने धुनी नद्यां न दे पुमान् ॥१२॥
नग्नो वन्दित्पणयोः पुंसि त्रिषु विवाससि ।
न्यून गर्ह्येनयोः पानं पीतिभाजनरक्षणे ॥१३॥
भानुर्ना किरणे सूर्येभिनन्नं स्यात् त्रिषु दारिते ।
सङ्गतेऽन्यत्र फुल्ले च मानश्चित्तेन्नतौ ग्रहे ॥१४॥
क्लीव प्रमाणे प्रस्थादौ मीनो राश्वन्तरे ज्ञपे ।
मुनिः पुंसि वशिष्ठादौ वक्रसेनतरौ जिने ॥१५॥
मृतस्त्रा मृत्सातुवर्येः स्त्री यानं स्याद् वाहने गतौ ।
योनिः स्त्रीपुंसयोश्च स्यादाकरे सारमन्दिरे ॥१६॥

रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि मणावपि नपुमकम् ।
 रास्ता तु स्याद् भुजङ्गाद्यामेलापर्णामपि स्त्रियाम् ॥१७॥
 लग्नं राशुदये क्लीवं सक्तलज्जितयोस्त्रियु ।
 वस्तस्त्ववक्रये पुंसि वेतने स्यान् नपुंसकम् ॥१८॥
 वनं नपुंसकं नीरे निवासालयकानने ।
 वङ्गिर्वैश्वानरेऽपि स्याच्चित्रकाख्यौपधौ पुमान् ॥१९॥
 वानं शुष्कफले शुष्के स्यूतिकर्मकंटे गतौ ।
 विन्नं विचारिते लब्धे वृष्टौ नां मूलरुद्रयोः ॥२०॥
 श्या पुमान् कुकुरे ख्यातः स्थानभेदे च वास्तुनः ।
 शीनोमूर्खे चाजगरे श्येनः पत्रिणि पाण्डरे ॥२१॥
 स्वप्नः स्वापे प्रसुप्तस्य विज्ञाने दर्शने पुमान् ।
 सानुरस्त्री वने प्रस्ये वात्यामार्गाग्रकोविद् ॥२२॥
 स्थानं सादृश्येऽवकाशे स्थितौ वृद्धिचयेतरे ।
 स्थानं स्तिग्धे प्रतिध्वाने घनत्वालस्ययोरपि ॥२३॥
 स्नानं स्नानीयेऽभिपवे स्नानं प्रसवपुष्पयोः ।
 स्नाना पुत्र्यां वधस्थानगलशुण्डिकयोः स्त्रियाम् ॥२४॥
 स्नानुः पुत्रेऽनुजेऽर्के ना सूनः किरणस्त्वयोः ।
 स्नानुर्हृद्विलासिन्यां स्नानावस्त्रे गदे स्त्रियाम् ॥२५॥
 द्वयोः कपोलावयवे क्षीनं गर्ह्योऽनयोस्त्रियु ।

नत्रिकम् ।

अञ्जनं कज्जले चाक्तौ सौवीरे च रसाञ्जने ॥२६॥
पुसि ज्येष्ठादिंगजयो रञ्जना वानरीभिदि ।
अञ्जनी लेष्यनार्याञ्चावनं प्रीतौ च रक्षणे ॥२७॥
अयनं पथि भानोरप्युदग्दक्षिणतो गतौ ।
अपानन्तु गुदे क्लीवं पुसि स्यात् तस्य मारुते ॥२८॥
असनं क्षेपणे क्लीवं पुसि स्याज्जीवकद्रुमे ।
अङ्गनं प्राङ्गणे याने कामिन्यामङ्गना मता ॥२९॥
अर्जुनः ककुभे पार्थे कार्त्तवीर्यमयूरयोः ।
मातुरेकसुतेऽपि स्यात् पुलङ्गे धवलेऽन्यवन् ॥३०॥
नपुंसकं त्वणे नेत्रगदे चाप्यर्जुनी गवि ।
उपायां वाङ्गदानद्यां कुट्टिन्यामपि च क्वचित् ॥३१॥
अम्लानो महासहायां नाऽन्यलिङ्गस्तु निर्मले ।
अर्शोघ्नी तालमूल्यां स्यादर्शोघ्नः शूरणेऽपि च ॥३२॥
असिक्रो स्यादवृद्धान्तःपुरप्रेष्यानदीभिदोः ।
अशनिः स्त्रीपुसयोः स्याच्च चञ्चलायां पवावपि ॥३३॥
अरलिर्ना सप्रकोष्ठतताङ्गुलिकरेऽपि च ।
कफोणावष्यथाऽली स्याद् वृश्चिके भ्रमरेऽपि च ॥३४॥
अर्थो पुमान् र्याचक्रे स्यात् सेवके च विवादिनि ।
अध्वा ना पथि संस्थाने स्यादवस्कन्दकालयोः ॥३५॥

अर्वा तुरङ्गमे पुंसि कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः ।
 आसनं द्विरदस्कन्धे पीठे यात्रानिवर्त्तने ॥३६॥
 आसनी विपणौ स्थित्यामासनो जीरकद्रुमे ।
 आदानं ग्रहणेऽपि स्यादलङ्कारे च वाजिनाम् ॥३७॥
 आपन्नः सविपत्तौ च प्राप्ते वाच्यवदीरितः ।
 आत्मा पुंसि स्वभावे च प्रयत्नमनसोरपि ॥३८॥
 धृतावपि मनीषायां शरीरब्रह्मणोरपि ।
 आलानं करिणां बन्धस्तम्भे रज्जौ च न स्त्रियाम् ॥३९॥
 ईशानं ज्योतिषि क्लीवं पुंसिङ्गः स्यात्त्रिलोचने ।
 उत्तानमगभीरे स्यादूर्ध्वास्यशयिते त्रिषु ॥४०॥
 उत्थानमुद्यमे तन्त्रे पौरुषे पुस्तके रणे ।
 प्राङ्गणोद्गमहर्षेषु मलवेगेऽपि न द्वयोः ॥४१॥
 उद्यानं स्यान्निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।
 उदानोऽप्युदरावर्त्ते वायुभेदे भुजङ्गमे ॥४२॥
 उद्धानमुद्गते वाच्यलिङ्गं चुल्ल्यां नपुंसकम् ।
 ओदनं न स्त्रियां भक्ते बलायामोदनी स्त्रियाम् ॥४३॥
 कामनः कामुके कामेऽभिहृषेऽशोकपादपे ।
 कम्पनं न द्वयोः कम्पे कम्पे स्यादभिधेयवत् ॥४४॥
 कठिनमपि निष्ठुरे स्यात्स्त्वम्भेऽपि त्रिषु नपुंसकं स्यात्स्याम् ।
 कठिनी खटिकायामपि कठिना गडशर्करायाञ्च ॥४५॥

क्रन्दनरोदनेऽपि स्यादाह्वानेऽप्यथ कल्पना ।
 करिणः सज्जनायां स्त्री क्लीवं क्लृप्तौ च कर्त्तने ॥४६॥
 कर्त्तनं न द्वयो ऋदे नारीणां सूत्रनिर्मितौ ।
 कर्माऽस्त्री व्याप्यक्रिययोः कदनं मर्हपापयोः ॥४७॥
 काञ्चनः काञ्चनाले स्याच् चम्पके नागकेशरे ।
 उदुम्बरे च धुस्त्ररे हरिद्रायाञ्च काञ्चनी ॥४८॥
 क्लोवेऽब्जकेशरे हेम्नि कामिनी भीरुवन्दयोः ।
 कामी तु कामुके चक्रवाके पारावतेऽपि च ॥४९॥
 कानीनः कन्यकाजाततनये व्यासकर्णयोः ।
 काकिनी पणपादेऽपि मानपादे वराटके ॥५०॥
 काननं विपिने गेहे परमेष्ठिमुखेऽपि च ।
 कुहनं मृत्तिकाभाण्डविशेषे काचभाजने ॥५१॥
 कुहना दम्भचर्याया मीर्ष्यालौ कुहनस्त्रियु ।
 कृती स्यात् पण्डिते योग्ये केतनन्तु निमन्त्रणे ॥५२॥
 कृहे केतौ च कृत्येऽथ केशी केशवति त्रियु ।
 कृत्ये ना चौरपुष्ययां स्त्री कौलीनं गुह्यजन्ययोः ॥५३॥
 कुकर्माणि कुलीनत्वे युद्धे पञ्चहिपक्षिणाम् ।
 कौपीन स्यादकार्येऽपि चौरगुह्यप्रदेशयोः ॥५४॥
 खलिनी खलवृन्दे स्यात् तालपर्णामपि स्त्रियाम् ।
 खञ्जनः खञ्जरीटे स्त्री सर्पयां खञ्जनं गतौ ॥५५॥

खङ्गीना गण्डके मञ्जुघोषे खङ्गधरे त्रिषु ।
 गर्जनं निनदे कोपे गहनं कलिले त्रिषु ॥५६॥
 नपुसकं गङ्गरे स्याद् दुःखकाननयोरपि ।
 गन्धनमुत्साधे स्यात् प्रकाशने स्रचनेचहिंसायाम् ॥५७॥
 ग्रामीणः शुनि काके पुंसि त्रिषु सम्भृते ग्रामैः ।
 ग्रावा तु प्रस्तरे पृथ्वीधरे पुंस्यथ गृञ्जनम् ॥५८॥
 विषदिग्धपशोर्मांसे क्लीवं पुंसि रसेानके ।
 गोस्तनो चारभेदे ना द्राक्षायां गोस्तनी स्त्रियाम् ॥५९॥
 गोमी शृगाले पुंसि स्यात् त्रिषु गोमत्युपासके ।
 घट्टना चलनावृत्त्यो चन्दनी तु नदीभिदि ॥६०॥
 चन्दनोऽस्त्री मलयजे भद्रकात्या नपुंसकम् ।
 चलन भ्रमणे कम्पे कम्पे तु वाच्यलिङ्गकम् ॥६१॥
 चलनी वस्त्रघर्षर्यां वारीभेदेऽपि च क्वचित् ।
 चक्री तैलिकभित्-कोककुलालाजाऽहि सूचके ॥६२॥
 चर्मी फलकपाणौ स्याद् भूर्जे भृङ्गरिटावपि ।
 चर्माकृतौ च फलके चेतना संविदि स्त्रियाम् ॥६३॥
 वाच्यवत् प्राणयुक्तेऽथ कृद्ग शाव्यापदेशयोः ।
 कर्दनं यमने क्लीवं निम्बान्मुखपयोः पुमान् ॥६४॥
 कर्दनञ्च दन्ते पक्षेऽपिधाने क्कदनं भिदि ।
 कर्तने च जनुः पुंसि जन्तौ चैशानरेऽपि च ॥६५॥

जवनं स्यात्तु वेगेऽपि ह्ये ना वेगिनि त्रिषु ।
 जननी तु दयामात्रेर्जननं वंशजन्मनोः ॥६६॥
 जयनं स्यात्तुरङ्गादिसन्नाहे विजयेऽपि च ।
 जघनञ्च स्त्रियाः श्रेणिपुरोभागे कटावपि ॥६७॥
 ज्ञानी स्यात्पुंसि दैवज्ञे ज्ञानयुक्तेऽन्यलिङ्गकः ।
 जीवनं वर्तने जीवप्राणधारणयोर्जले ॥६८॥
 जीवनी जीवनाचापि जीवन्तीमेदयोः क्रमात् ।
 तपनोऽरुष्करेऽपि स्याद् भास्करे निरयान्तरे ॥६९॥
 तलुनः पवने यूनि युवत्यां तलुनी स्मृता ।
 तलिनं विरले स्तोके स्वर्केऽपि वाच्यलिङ्गकम् ॥७०॥
 तमोघ्नः सूर्यवज्रोन्दुबुद्धशङ्करविष्णुषु ।
 त्यागी दातरि शूरेऽथ तेवनं केलिकानने ॥७१॥
 क्रीडायां तेमनन्वाट्टीकरणे व्यञ्जनेऽपि च ।
 तेजनः पुंसि वंशे स्यात् तेजनी तृणपूलके ॥७२॥
 तोदनं व्यथने तोत्रे टंशनं दंशवर्मणोः ।
 दर्शनं नयनस्वप्नबुद्धिधर्मापलब्धिषु ॥७३॥
 शास्त्रदर्पणयोश्चाथ दमनः पुष्पवीरयोः ।
 दशनः शिखरे दन्ते कवचे तु नपुंसकम् ॥७४॥
 दहनसिचके भङ्गातकेऽथौ दुष्टचिह्नि ।
 दशनं ज्योतिषि क्लीवं पुलङ्गः स्याद् विरोचने ॥७५॥

देवनं व्यवहारे स्याज् जिगीषाक्रीडयोरपि ।
 देवनोऽस्तेषु पुंसि स्याद् ध्वजीतु पृथिवीधरे ॥७६॥
 रथवाह्मणयोश्चापि भुजङ्गमतुरङ्गयोः ।
 धन्वी धनुर्धरेऽपि स्यादर्जुने ककुभद्रुमे ॥७७॥
 धन्वा तु मरुदेशे नाक्वीवं चापे स्थलेऽपि च ।
 धमनो नाऽनले भस्त्राध्मापकक्रूरयोस्त्रियु ॥७८॥
 धमनी तु गिराहृद्विलासिन्योश्च योपिति ।
 धावनं गमने शुद्धौ पृश्निपर्ण्यान्तु धावनी ॥७९॥
 धाम देहे गृहे रक्षौ स्थाने जन्मप्रभावयोः ।
 नन्दनं वासवोद्याने नन्दनो हर्षके सुते ॥८०॥
 नन्दी हरप्रतीहारे गर्दभाण्डे वटद्रुमे ।
 नन्दिन्युमायां गङ्गायां ननान्दृधेनुभेदयोः ॥८१॥
 नलिनी पद्मिनी व्योमनिम्नगाकमलाकरे ।
 नपुंसककं नीलिकायां न पुंसि सरसीरुहे ॥८२॥
 निदानं कारणे वत्सदामादिकारणक्षये ।
 निधनं स्यात् कुले नाशे प्रधनं दारणे रणे ॥८३॥
 पवनं कुम्भकारस्य पाकस्थाने नपुंसकम् ।
 निष्पावमरुतोः पुंसि प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥८४॥
 प्रधानं स्यान् महामात्रे प्रकृतौ परमात्मनि ।
 प्रशायामपि च क्वीवमेकत्वे तृप्तमे सदा ॥८५॥

पद्मिनी पद्मसङ्घाते स्त्रीविशेषे सरोऽम्बुजे ।
 प्रसन्ना स्त्री सुरायां स्याद्स्वच्छसन्तुष्टयोस्त्रिषु ॥८६॥
 प्रहर्षो वाच्यवज्जाते स्त्रीवन्तु फलपुष्पयोः ।
 पत्रो ग्येने पत्ररये काण्डदुरथिकाद्रिषु ॥८७॥
 पर्व्वं क्लीवं महे ग्रन्थौ प्रस्तावे लक्षणान्तरे ।
 दर्शप्रतिपदोः सन्धौ विषुवत् प्रभृतिष्वपि ॥८८॥
 पद्मसूत्रादिसूक्ष्मांशे किञ्चक्ते नैत्रलोमनि ।
 पाठीनी मीनभेदे स्यात् पाठके गुग्गुलद्रुमे ॥८९॥
 पावनन्तु जले कृच्छ्रे ना व्यासे पावके त्रिषु ।
 पाचनं दशमूल्यादौ प्रायश्चित्ते च नाऽनले ॥९०॥
 वाच्यवत् पाचयितरि हरीतक्यान्तु योपिति ।
 णशो व्याधे च वरुणे पिशुनं कुङ्कुमे स्मृतम् ॥९१॥
 कपिवक्त्रे च काके ना सूचकद्रूयोस्त्रिषु ।
 पृक्षायां पिशुना स्त्री स्यात् पीतनं पीतदारुणि ॥९२॥
 कुङ्कुमे हरिताल च पुमानाम्रातके मतः ।
 पूतना तु हरीतक्या दानवीरोगभेदयोः ॥९३॥
 पूतना तु स्त्रियां सेनामात्रसेनाविशेषयोः ।
 प्रेमा ना वासवे वार्ते प्रेमाऽस्त्री स्त्रीहर्षणो ॥९४॥
 फालिन्यग्निशिखायाञ्च फल्यां स्त्रीफलनि त्रिषु ।
 फाल्गुनस्तु गुडाकेशे नदीजार्ज्जुनभूरुहे ॥९५॥

तपस्यसंज्ञमासे तत्-पूर्णमायान्तु फाल्गुनी ।
 ब्रह्म तत्त्वतपोवेदेन द्वयोः पुंसि वेधसि ॥१६॥
 ऋत्विग्योगभिदोर्विप्रे वन्धनं वधवन्धयोः ।
 वन्दनी नतिजोवातुकटी याचनकर्म्मसु ॥१७॥
 वाहिनी स्यात्तरङ्गिण्यां सेनासैन्यप्रभेदयोः ।
 वाणिनी नर्त्तकी मत्ताविदग्धवनितासु च ॥१८॥
 बुधानस्तु गुरौ विज्ञे बोधनं गन्धदीपने ।
 बोधनी बोधपिप्पल्यो भस्म स्यात् काञ्चने भूतौ ॥१९॥
 भण्डनं कवचे युद्धे खलीकारेऽपि न द्वयोः ।
 भट्टिनी द्विजभार्यायां नाट्योक्त्या राजयोपिति ॥२०॥
 भवनं स्याद् गृहे भावे भाजनं योग्यपात्रयोः ।
 भावना तु न ना ध्याने पर्यालोचेऽधिवासने ॥२०१॥
 भुवनं विष्टपेऽपि स्यात् सलिले गगने जने ।
 भोगी भुजङ्गमेऽपि स्याद् ग्रामपात्रे नृपे पुमान् ॥२०२॥
 विहाय महिषीमन्यराजयोपिति भोगिनी ।
 मदनः स्मरवसन्तद्रुभेद् धस्त्ररसिक्थके ॥२०३॥
 मलनः पठवासे ना कर्द्दमे तु नपुंसकम् ।
 मन्दिनं दूषिते कृष्णे ऋतुमत्यान्तु योपिति ॥२०४॥
 मण्डनं भूपणे क्लीवं स्यात् त्रिखलङ्कुरिष्णुनि ।
 मनं गण्डगोले स्यात् तपस्ये परमेष्ठिनि ॥२०५॥

मङ्गुलं तार्किके रस्ये गृहे देहे जलाशये ।
 मसूनोऽस्त्री जित्वरे स्यान् मेपादौ महिषेऽपि च ॥१०६॥
 मार्जनं न पुमान् माष्टौ पुंसि स्यात्तोद्धशाखिनि ।
 मालिनी मातृकावृत्तभिदे मालिकयोपिति ॥१०७॥
 गौरी चम्पा नगर्याश्च मन्दाकिन्यां नदीभिदि ।
 माधुनोऽस्त्री कलङ्के स्यादिन्दौ विषयगामिनि ॥१०८॥
 मानिनी तु स्त्रियां फल्यां मानी मानवति त्रिषु ।
 मिथुनं न द्वयोः राशिभेदे स्त्रीपुंसयुग्मके ॥१०९॥
 मुण्डनं वपने चाणे मेहनं मूत्रशिश्रयोः ।
 मैथुनं सुरतेऽपि स्यात् सङ्गतेऽपि नपुंसकम् ॥११०॥
 यमनं बन्धने चोपरतौ क्लीवं यमे पुमान् ।
 यवनो देशभेदे ना वेगवेगाधिकाश्चयोः ॥१११॥
 यवन्योपधिभेदे स्त्री वाच्यवद् वेगिनि स्मृता ।
 यापनं वर्तने कालक्षेपे निरसनेऽपि च ॥११२॥
 युवा स्यात् तरुणे श्रेष्ठे निसर्गवल्लशालिनि ।
 युञ्जानः सारथौ विप्रे योजनं परमात्मनि ॥११३॥
 चतुष्क्रोश्याच्च योगेऽथ रसन स्वदने ध्वनौ ।
 जिह्वायाच्च नपुंसि स्याद् राक्षसायां रसना स्त्रियाम् ॥११४॥
 रञ्जनो रागजनके रञ्जनं रक्तचन्दने ।
 शुण्डारोचनिकानीली मञ्जिष्ठासु च रञ्जनी ॥११५॥

रजनी नीलनीरात्रिहरिद्राजतुकांसु च ।
 गन्धनं साधने प्राप्तौ राधना भाषणे स्त्रियाम् ॥११६॥
 राजाप्रभौ च नृपतौ क्षत्रिये रजनीपतौ ।
 यक्षे शक्रे च पुंसि स्याद् रागो रक्तविक्रामुके ॥११७॥
 रोचनी त्रिवृतादन्याः रोचनी कर्कशे सृता ।
 गोचना रक्तकक्षारे गोपित्तवारयोपितीः ॥११८॥
 रोचनः कृटशास्त्रल्यां पुंसि स्याद् रोचके त्रिपु ।
 रोदनं क्रन्दनेऽस्येऽपि दुरालभौषधौ स्त्रियाम् ॥११९॥
 रोक्षी रोक्षितकेऽथत्यवटपादपयोः पुमान् ।
 लङ्घनन्पुपवासे स्याच् चङ्क्रमे मवनेऽपि च ॥१२०॥
 ललना कामिनी नारीभेदजिह्वासु योपिति ।
 लक्ष्म चिह्ने प्रधानेऽथ लाञ्छनं नामचिह्नयोः ॥१२१॥
 लेखनं छर्दने भूर्जे लिपिन्यासेऽथवर्जनम् ।
 हिंसात्यागयोर्वपनं बीजाधाने च मुण्डने ॥१२२॥
 वसनं क्वादने वस्त्रे वसनं छर्दनेऽर्दने ।
 वर्द्धनं वृद्धिर्वर्द्धिष्णु ष्छेदे घव्यान्तु वर्द्धनी ॥१२३॥
 व्यञ्जनं तेमने चिह्ने श्मश्रुण्यवयवेऽहनि ।
 व्यसनन्त्वशुभे सक्तौ पानस्त्रीमृगयादिपु ॥१२४॥
 दैवानिष्टफले पापे विपत्तौ निष्फलोद्यमे ।
 वर्त्तनो वामने क्लीवं वृत्तौ स्त्रीपेपणाध्वनीः ॥१२५॥

न पुंसि त्वलनालायां तर्कुपिण्डे च जीवने ।
 वर्त्तिष्णौ त्रिषु वज्रो तु वृद्धे देवाधिपे पुमान् ॥१२६॥
 वचक्रु स्तु पुमान् विप्रे वावदूकेऽभिधेयवत् ।
 वर्णी स्याल्लेखके चित्रकरेऽपि ब्रह्मचारिणि ॥१२७॥
 वर्धे देहप्रमाणातिसुन्दराकृतिषु स्मृतम् ।
 वर्त्मनेत्रच्छदे मार्गे वाजी वाणाश्वपत्तिषु ॥१२८॥
 वामनो नीचे खर्वे च त्रिषु पुंसि तु दिग्गजे ।
 हरारङ्गाटवृद्धेऽथ वासनं धूपनेऽपि च ॥१२९॥
 वारिधान्याञ्च वस्त्रे च प्रत्याशाज्ञानयोः स्त्रियाम् ।
 वाग्मी पटौ सुराचार्ये विज्ञानं ज्ञानकर्माणोः ॥१३०॥
 वितृन्नं सुनिषण्णे च शैवाले च नपुसकम् ।
 वितानो यज्ञ उल्लोचे विस्तारे पुन्नपुसकम् ॥१३१॥
 क्लीर्ववृत्तविशेषे स्यात्त्रिलिङ्गामन्दतुच्छयोः ।
 विमानं व्योमयाने च सार्वभौमगृहेऽपि च ॥१३२॥
 घोटके यानमात्रे च पुन्नपुसकयो र्मतम् ।
 विक्लिन्ना जरया जीर्णे शीर्णे चार्द्रे च वाच्यवत् ॥१३३॥
 विपन्नं विपदाक्रान्ते त्रिषु पुंसि भुजङ्गमे ।
 विच्छिन्नञ्च समालम्ब्ये विभक्ते चाभिधेयवत् ॥१३४॥
 विलग्नं न स्त्रियां मध्ये त्रिषु स्यात् लग्नमात्रके ।
 विपन्नस्तु शिरीषे ना गुडूची त्रिवृतेः स्त्रियाम् ॥१३५॥

व्युत्थानं स्वातन्त्र्यकृत्ये विरोधाचरणेऽपि च ।
 वृजिनं कल्मषे क्लीवं केशे ना कुटिले त्रिषु ॥१३६॥
 वृषा कर्णे महेन्द्रे ना वेदना ज्ञानदुःखयोः ।
 वेष्टनं कर्णशङ्कुल्यामुष्णोपे मुकुटे वृत्तौ ॥१३७॥
 व्योम वारिणि चाकाशे भास्करस्यार्चनाश्रये ।
 शकुनिः पुंसि विद्महे सौवले करणान्तरे ॥१३८॥
 शयनं सुरते निद्राशय्ययोश्च नपुंसकम् ।
 शमनं शान्तिवधयोः शमनः श्राद्धदैवते ॥ १३९ ॥
 श्वसनं श्वसिते पुंसि मारुते मदनद्रुमे ।
 शकुनस्तु पुमान् पक्षिमात्रपक्षिविशेषयोः ॥१४०॥
 शुभशंसिनिमित्ते च शकुनं स्यान् नपुंसकम् ।
 शङ्खिनी श्वेतवृन्दायां चौरपुष्पां बधूभिदि ॥१४१॥
 शङ्खी हरौ समुद्रे ना शङ्खवत्यभिधेयवत् ।
 शतघ्नी शस्तभेदे स्याद् वृश्चिकाल्यां करञ्जके ॥१४२॥
 शासनं राजदत्तार्थ्यां लेखाज्ञाशास्त्रशास्त्रिषु ।
 शाखीस्यात्पादपे वेदे तुरुष्काख्यजनेपुमान् ॥१४३॥
 शिखी वङ्गैः वलीवर्द्धे शरे केतुश्रे द्रुमे ।
 मयूरे कुकुटे पुंसि शिखावत्यन्यलिङ्गकः ॥१४४॥
 शिल्पी तु वाच्यवत् कारौ स्त्रियां कोलदलौपधौ ।
 शृङ्गी शृङ्गयुते नागे वृक्षपर्वतयोरपि ॥१४५॥

शूली स्याच्छङ्करे पुंसि शूलरोगिणि वाच्यवत् ।
 श्लेष्मघ्नीमल्लिकायाञ्च ज्योतिष्मत्याञ्च योपिति ॥१४६॥
 शोभने योगभेदे ना सुन्दरे वाच्यलिङ्गकः ।
 सवनन्वध्वरे स्नाने सोमनिर्दलनेऽपि च ॥१४७॥
 स्नानं ध्वनिमात्रे स्यान् मेघशब्दे च कुन्धिते ।
 समानः सत्समैकेषु त्रिषु ना नाभिमारुते ॥१४८॥
 सन्तानः सन्ततौ गोत्रे स्यादपत्ये सुरद्रुमे ।
 स्पर्शने मारुते पुंसि दाने स्पर्शे नपुसकम् ॥१४९॥
 संस्थानमाद्यतौ मृत्यौ सन्निवेशे चतुष्यथे ।
 स्यन्दनन्तु सुतौ नीरे तिनिशे ना रथेऽस्त्रियाम् ॥१५०॥
 सज्जनन्तु भवेत् क्लीवमुपरक्षणघट्टयोः ।
 वाच्यलिङ्गकुलीनेस्यात् कल्पनायान्तु योपिति ॥१५१॥
 सन्धानं स्यादभिषवे तथा सङ्घटनेऽपि च ।
 सम्पन्नं साधितेऽपि स्यात् सम्पत्तिसहितेऽन्यवत् ॥१५२॥
 सन्धिनी वृषभाक्रान्ताऽकालदुग्धोसंयोः स्त्रियाम् ।
 सद्म स्यान् मन्दिरे नीरे संव्यानं क्वादनेऽंशुके ॥१५३॥
 सदनं मन्दिरे तोये स्वामी प्रभुविंशाखयोः ।
 सादी तुरङ्गमातङ्गरयारोक्षेपु दृश्यते ॥१५४॥
 स्थापनं रोपणे पुंसवने पाठौषधौ स्त्रियाम् ।
 सावने यज्ञकर्मान्ते यजमानप्रचेतसोः ॥१५५॥

साधनं नृतसंस्कारे सैन्ये सिद्धौपधौ गतौ ।
 निवर्त्तनोपाय मेद्रे दापनेऽनुगमे धने ॥१५६॥
 साम स्त्रीवमुपायस्य भेदे वेदान्तरेऽपि च ।
 सीमाऽघाटस्थितिचेत्रेष्वण्डकोपेऽपि च स्त्रियाम् ॥१५७॥
 सूचना व्यधने दृष्टौ गन्धनेऽभिनयेऽपि च ।
 सेचनं रक्षणे सेके नौकायाः सेकभाजने ॥१५८॥
 सेनानीः स्यात् पुमान् कार्तिकेये सेनापतावपि ॥
 सेवनं स्त्रीवनोपास्थोर्हली रामे च कर्षके ॥१५९॥
 हस्तिनी गजयोषायां जाति भेदे च योपितः ।
 हसनं न द्वयोर्हसेऽङ्गारधान्याच्च योपिति ॥१६०॥
 दायनो न स्त्रियां वर्षे पुंस्यर्चिर्वीहि भेदयोः ।
 द्वादिनी वज्रतडितो र्चिण्डनं भ्रमणे रते ॥१६१॥

नचतुष्कम् ।

अवलम्बोऽस्त्रियाम् मध्ये त्रिषु स्यात् लग्नमात्रके ।
 अनूचानो विनीते स्यात् साङ्गवेदविचक्षणे ॥१६२॥
 अपाचीनोऽवागर्थे विपर्यस्तो च वाच्यवत् ।
 अभिपन्नाऽपराद्धेऽभियस्तेचापद्गते त्रिषु ॥१६३॥
 अवदानं खण्डने स्यादतिवृत्ते च कर्माणि ।
 अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयद्विसयोः ॥१६४॥

अनीकिनी स्त्रियां सेनामात्रसेनाप्रभेदयोः ।
 अधिष्ठानं पुरे चक्रे प्रभावेऽध्यासनेऽपि च ॥१६५॥
 अन्वासनं स्नेहवस्तावुपास्तावनुशोचने ।
 अर्यमा तु पुमान् सूर्ये पितृ देवान्तरेऽपि च ॥१६६॥
 अयर्व्याज्राह्मणे पुंसि वेदे तु स्यान् नपुंसकम् ।
 भवेदभिजनः ख्यातौ जन्मभूम्यां कुलध्वजे ॥१६७॥
 कुलेऽपि च पुमानायोधनं युद्धे वधेऽपि च ।
 स्यादाकलनमाकाङ्क्षा परिसङ्ख्यानबन्धने ॥१६८॥
 आतञ्चनं प्रतीवापजवनाप्यायनेषु च ।
 आराधनञ्च पचने प्राप्तौ सन्तोषणेऽपि च ॥१६९॥
 आच्छादनं सम्पिधाने वस्त्रे प्रवृत्तिमात्रके ।
 आस्कन्दनं तिरस्कारे रणे संशोषणेऽपि च ॥१७०॥
 आवेशनं शिल्पिशाले भूतावेशप्रवेशयोः ।
 आत्मयोनिः पुमान् कामदेवे च परमेष्ठिनि ॥१७१॥
 उपधान विषे गण्डौ प्रणयेऽपि नपुंसकम् ।
 उत्सादनं समुक्तेखोदाघनोदत्तनेषु च ॥१७२॥
 स्यादुत्पतनमुत्पत्तौ तथोर्द्ध्वगमनेऽपि च ।
 उद्वर्तनमुत्पतने विलेपने घर्षणे क्लीवम् ॥१७३॥
 उदयनमुदये क्लीवं वत्सशागस्थयोः पुंसि ।
 उद्गाहनं द्विसीत्ये स्याद् रज्जायुद्गाहिनी मता ॥१७४॥

उपासनं शराभ्यासिऽप्युपास्तावासनेऽपि च ।
 कपोतनो गर्हभाण्डशिरीपाम्नातकोपु च ॥१७५॥
 अश्वत्ये च कलापी तु स्रक्षवर्हिणयोः पुमान् ।
 कलध्वनिः पुमान् पारावते पिकमयूरयोः ॥१७६॥
 कञ्चुप्यन्तःपुराध्यक्षे पिङ्गेऽहौ जोङ्गकद्रुमे ।
 कात्यायनो वररुचौ विशेपे च मुनेः पुमान् ॥१७७॥
 कापायवस्त्रे विधवार्द्धजरत्युमयोः स्त्रियाम् ।
 कुम्भयोनिरगस्त्ये स्याद् वशिष्ठद्रोणयोः पुमान् ॥१७८॥
 कुचन्दनन्तु पत्राङ्गे द्रुमेदे रक्तचन्दने ।
 कुण्डली वरुणे केकिभोगिनोश्च सकुण्डले ॥१७९॥
 केशरी तुरगे सिंहे पुत्रागे नागकेशरे ।
 क्रौञ्चादनस्तु पिप्पल्यां चिञ्चोटकमृणालयोः ॥१८०॥
 खड्गधेनुः स्त्रियां खड्गपुत्रिकागण्डकस्त्रियोः ।
 गवादनीन्द्रवारुण्यां गवां घासादनाश्रये ॥१८१॥
 गदयित्तुः पुमान् कामे जल्पके कामुकेऽपि च ।
 घनाघनो वर्षुकाब्दे मत्तघातुककुञ्जरे ॥१८२॥
 शक्रे च घोपयित्तुस्तु विप्रकोकिलयोः पुमान् ।
 चित्रभानुः पुमान् वैश्वानरे चाहस्करेऽपि च ॥१८३॥
 चालकी तु करीरे स्यान् नारङ्गे किष्कुपर्वणि ।
 जलाटनो लोहपृष्ठे जलौकायां जलाटनी ॥१८४॥

तपस्वी तापसे चानुकस्ये चिष्वययोपिति ।
 मांसिका कटुरोहिण्यो स्तरस्वी शूरवेगिनाः ॥१८५॥
 तपोधन स्तापसे स्यान् मुण्डिर्यान्तु तपोधना ।
 द्विजन्मा दशने विप्रे दुर्नाम क्लीवमर्शसि ॥१८६॥
 स्याद् दीर्घकोपिकायां स्त्री देवसेना तु वज्रिणः ।
 सुतायामपि सेनायां देवतानाञ्च योपिति ॥१८७॥
 नागञ्जनेभ सुन्दर्यां नागयष्टौ च योपिति ।
 भवेत् निधुवलं कस्ये सुरते च नपुंसकम् ॥१८८॥
 निर्वासनं हिंसने स्यान् नगरादे र्वहिष्कृतौ ।
 निर्भर्त्सनं खलीकारेऽलक्तकेऽपि नपुंसकम् ॥१८९॥
 निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ।
 निशमनं दर्शने स्यादालोचने च नद्वयोः ॥१९०॥
 निशमनमुक्तं दृष्टौ श्रुतौ निरसनं वधे प्रतिक्षेपे ।
 निष्ठीवने प्रजननं योनौ जन्मन्यपि क्लीवम् ॥१९१॥
 प्रसहनमपि भङ्गे स्यात् क्षेपे पञ्चाननः शिवे सिद्धे ।
 प्रहसनमपि प्रहासे रूपभेदे च परिहासे ॥१९२॥
 प्रणिधानं प्रयत्ने स्यात् समाधौ च प्रवेशने ।
 प्रयोजनं कार्यक्षेत्राः पलाशी वृक्षरक्षसाः ॥१९३॥
 अथ प्रवचनं वेदे प्रकृष्टवचनेऽपि च ।
 प्रतिपन्नोऽन्यलिङ्गः स्याद् विज्ञानेऽङ्गीकृतेऽपि च ॥१९४॥

प्रस्फोटनन्तु स्पर्षे स्यात् ताडने च विकासने ।
 प्रतिमानं प्रतिच्छाया गजदन्तान्तरालयोः ॥१८५॥
 प्रतियत्नस्तु संस्कारलिप्सोपग्रहणेषु च ।
 प्रत्यर्थी वाच्यलिङ्गः स्यात् शत्रौ च प्रतिवादिनि ॥१८६॥
 परिज्वा तु पुमानिन्दौ याज्ञिके परिचारके ।
 प्रसाधनी तु कङ्कत्यां सिद्धौ वेशे प्रसाधनम् ॥१८७॥
 पयस्विनी नदीधेन्वो विभावर्याञ्च योषिति ।
 अथ पुण्यजनो यत्ते राक्षसे सज्जनेऽपि च ॥१८८॥
 पृथग्जनस्तु पुलिङ्गः कथितो नीचमूर्खयोः ।
 फलकी मत्स्यभेदे ना वाच्यवत् फलकान्विते ॥१८९॥
 वारकी शत्रुचित्राश्रपणजीविपयोधिषु ।
 भूतात्मा पुंसि निद्विष्टो देहे च परमेष्ठिनि ॥२००॥
 महाधनं महामूल्ये सुवस्त्रे सिल्लकेऽपि च ।
 महासेनः कार्तिकेये महासेनापतावपि ॥२०१॥
 मदयित्तुः कामदेवे पुमान् मद्ये नपुंसकम् ।
 महामुनिरगस्त्ये ना कुस्तुम्बुरुणि नदयोः ॥२०२॥
 मातुलानी कलाये स्याद् भङ्गायां मातुलस्तियाम् ।
 मालुधानो मातुलाद्यौ मालुधानी लतान्तरे ॥२०३॥
 मेधावी ना शुक्रे ब्राह्मणं स्त्रियां मेधान्विते त्रिषु ।
 शयनविषेऽपि स्याज् जराश्याधि जिदौपधे ॥२०४॥

पुलिङ्गः पक्षिराजे च विडङ्गाख्यौपधेऽपि च ।
 राजादनं क्षीरिकायां पियाले किंशुकैऽपि च ॥२०५॥
 ललाम स्यात् प्रभावे च लाञ्छनध्वजवाजिपु ।
 शृङ्गे प्रधाने भूपायामपि बालधिगुण्डयोः ॥२०६॥
 लाङ्गली नारिकेलद्रौ रेवतीरमणे पुमान् ।
 वनया गन्धमार्ज्जारै वञ्चक-व्याघ्रयोः पुमान् ॥२०७॥
 वर्द्धमानः प्रश्नभेदे शरावैरण्ड विष्णुपु ।
 विस्त्रापनः स्यात् कुहके गन्धर्व्वनगरे क्षरे ॥२०८॥
 विसर्जनं परित्यागे दाने सम्प्रेषणेऽपि च ।
 विरोचनः प्रह्लादस्य तनयेऽर्केऽग्निचन्द्रयोः ॥२०९॥
 विचेठनन्तु हिंसायां मर्द्दने च विडम्बने ।
 भवेद् विहननं विघ्नहिंसयो स्तूलपिञ्जने ॥२१०॥
 विषयी विषयासक्तौ वाच्यवत् क्लीवमिन्द्रिये ।
 पुंसि स्यान् नृपतौ कामदेवे वैपयिकेऽपि च ॥२११॥
 विष्वक्सेना फलिन्यां स्याद् विश्वक्खेनो जनार्दनै ।
 विलेपनी सुवेशस्त्री यवाग्वारपि योपिति ॥२१२॥
 विनासी भोगिनि ब्याले विश्वप्सा नाग्निचन्द्रयोः ।
 वृत्तादनीतु वन्दायां विदारीकन्दकेऽपि च ॥२१३॥
 वैरोचनस्तु सुगते बलिदैत्यार्कपुत्रयोः ।
 शिखरी स्यादपामार्गे शैलपादपयोः पुमान् ॥२१४॥

शिखण्डी ना कलापे स्याद् गाङ्गेयारिमयूरयोः ।
 शिखाण्डनी यूथिकायां गुञ्जायामपि योपिति ॥२१५॥
 गृङ्गारी पूगगजयोः सगृङ्गारसुवेशयोः ।
 अथ श्लेषघनामल्यां केतक्यामपि योपिति ॥२१६॥
 सम्यर्चनमभिव्याप्ता बुच्छायमोहयोरपि ।
 समुत्थानं समुद्योगे व्याधीनां निर्णयेऽपि च ॥२१७॥
 सदादानोऽभ्रमातङ्गे चेरन्वे गन्धहस्तिनि ।
 स्यात् संवदनमालोचे वशीकारे नपुंसकम् ॥२१८॥
 समादानं समीचीनग्रहणे सौगताङ्गिके ।
 संवाहनं वाचने स्याद् भारादेरङ्गमर्हने ॥२१९॥
 समापनं परिच्छेदे समाप्तिवधयोरपि ।
 सनातनः शाश्वतेऽजे पित्रतिथ्यन्तरे चरे ॥२२०॥
 स्तनयित्तुः पुमान् वारिधरेऽपि स्तनितेऽपि च ।
 सरोजिनी तु कमलाकरे पद्मे च योपिति ॥२२१॥
 समापन्नं समाप्ते स्यात् प्राप्ते क्लिष्टे वधेऽपि च ।
 सम्बाधनं द्वाःसटने शूलाग्रद्वारपालयोः ॥२२२॥
 समयनी, यमपुर्यां संयमनं बन्धने व्रतेऽपि स्यात् ।
 सारसनमप्युरंस्त्रे तनुत्रिणां मेखलायाञ्च ॥२२३॥
 सामिधेनी तु धाय्यायां समिध्यपि च योपिति ।
 सामयीनिस्तु सामोत्ये ब्रह्मकुञ्जरयोरपि ॥२२४॥

सुदर्शनो हरेश्चक्रे मेरुजम्बुद्रुमे पुमान् ।
 न द्वयोः शक्रनगरे आञ्जौपधिभिदोः स्त्रियाम् ॥२२५॥
 सुयामुनो वत्सराजे प्रासादेऽभ्रान्तरेऽच्युते ।
 सुकर्मा तु पुमान् योगभेदे स्याद् देवशिल्पिनि ॥२२६॥
 सुधन्वा प्रौढधानुष्के त्रिषु ना विश्वकर्माणि ।
 सुपर्वा ना शरे वंशे पर्वधूमसुरेष्वपि ॥२२७॥
 सुदामा तु पुमान् वारिधरपर्वतभेदयोः ।
 सौदामन्यसुरोभेदे तडित्तङ्गेदयोः स्त्रियाम् ॥२२८॥
 सर्पयित्तुः पुमान् पुत्रे कान्चने च नपुंसकम् ।

नपञ्चकम् ।

अथातिसर्जनं दाने वधेऽपि च नपुंसकम् ॥२२९॥
 अपवर्जनन्तु दाने निर्वाणत्यागयोरपि ।
 अपसर्जनमान्नाते परिवर्जनदानयोः ॥२३०॥
 अग्रजन्मा द्विजे ज्येष्ठे भ्रातरि ब्रह्मणि स्मृतः ।
 अथानुवासनं ज्येष्ठवस्त्रिधूपनयोरपि ॥२३१॥
 अभिनिष्णानोऽप्यक्षरमात्रे विसर्जनीयेऽपि च ।
 ग्रन्थेपासी शिष्येऽपि स्यात् चण्डाले प्रान्तामेऽपि च ॥२३२॥
 स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।
 उपसम्पन्नमुद्दिष्टं निक्षते च सुसंछते ॥२३३॥

कारन्धमी कांस्यकारे धातुवादरतेऽपि च ।
कामचारी कामुके स्यात् खच्छन्दकलविङ्कयोः ॥२३४॥
किष्कुपर्वा पुमानिचौ वेणौ पोटागलेऽपि च ।
हृष्णवर्त्मा पुमान्गौ दुराचारे विधुन्तुदे ॥२३५॥
स्याद् गन्धमादनो मृङ्गे गन्धके वागरान्तरे ।
स्त्री सुरायां नगे न स्त्री चिरजीवी कृकाकयोः ॥२३६॥
तिक्तपर्वा हिलमोची गुडूची यष्टिपु स्त्रियाम् ।
दन्तधावनः खद्विरे दन्तशुद्धौ नपुंसकम् ॥२३७॥
स्याद् धूमकेतनः पुंसि कीतुग्रहज्जताशयोः ।
स्यान्-नन्दिवर्द्धनो भर्गे पक्षान्ते तनयेऽपि च ॥२३८॥
प्रतिपादनन्तु दाने प्रतिपत्तौ च बोधने ।
स्यात् पृष्ठहायनो धान्यविशेषे च मतङ्गजे ॥२३९॥
प्रचलाकी मयूरे स्याद् भुजङ्गे चापि दृश्यते ।
स्यात् पद्मलाञ्छनो लोकेश्वरे ब्रह्मणि भास्करे ॥२४०॥
धनदे च स्त्रियां तारालक्ष्मीवाग्देवतासु च ।
पोतचन्दनमुद्दिष्टं कालीयकहरिद्रयोः ॥२४१॥
पृष्ठशृङ्गी पुमान् दंशभीरौ पण्डे वृकोदरे ।
वरचन्दनमाख्यातं कालीये देवदारुणि ॥२४२॥
वरवर्णिनी तु लाक्षाहरिद्रारोचनासु च ।
स्त्रीरत्ने च फलिन्याञ्च साधीयस्यामपि स्त्रियाम् ॥२४३॥

मधुच्छदनस्तु पुंसि भ्रमरे वनमालिनि ।
महारजनमुद्दिष्ट श्रातकुम्भकुसुम्भयोः ॥२४४॥
स्थान-मृत्युवञ्चन' शम्भौ श्रीफलद्रोणकाकयोः ।
वनमाली च गोविन्दे वाराह्या वनमालिनी ॥२४५॥
विषयी स्यात् पुमान् राज्ञि वैषयिकजनेऽपि च ।
इन्द्रिये कामदेवे च विषयासक्तपुरुषे ॥२४६॥
विश्वकर्मा सहस्राशौ मुनिभिर्देवशिष्यिनोः ।
विघ्नकारी स्मृतो घोरदर्शनेऽपि विघातिनि ॥२४७॥
वृषपर्वा पुमान् दैत्यभेदेऽप्यन्धकच्छदने ।
व्योमचारी तु निर्दिष्टो देवताया विहङ्गमे ॥२४८॥
शकुलादनी स्त्रियां कृष्णभेदीकटुकशाकयोः ।
शालङ्कायन उद्दिष्टो मुनिभेदे च नन्दिनि ॥२४९॥
शिवकीर्तनस्तु पुंसि स्याद् भृङ्गरीटेऽसुरद्विपि ।
श्वेतवाहन इत्येष सुधाधाम्नि घनञ्जये ॥२५०॥
श्वेतधामा पुमानिन्दौ घनसाराब्धिफेनयोः ।
स्यात् पट्टिहायनो धान्यविशेषे कुञ्जरे पुमान् ॥२५१॥
सम्प्रयोगी कलाकेलौ कामुके सम्ययोजके ।
हरिचन्दनमस्त्री स्याद् देवतानां महीरुहे ॥२५२॥
नपुंसकन्तु गोशीर्षे ज्यात्स्ना कुङ्कुमयेऽपि ।
हरिवाहनस्तु पुंसि शचीपति-विवस्वतोः ॥२५३॥

नपङ्कम् ।

अन्तावसायी श्वपचे मुनिभेदे च नापिते ।
 कलानुनादी रोलम्बे कलविङ्के कपिञ्जले ॥२५४॥
 जायानुजीवी पुंसि स्यान्-नटे च वक्रपक्षिणि ।
 सहस्रवेधि क्लीवं स्याद् रामठे नाम्बुवेतसे ॥२५५॥
 नान्तवर्गः समाप्तः ।

पैककम् ।

पा ना वाताण्डपूतेषु पाने पातरि कीर्तितः ।
 स्त्रियान्तु रक्षणे पाने पूते पूरितके च सः ॥२॥
 पक्षिकम् ।

कल्पः शास्त्रे विधौ न्याये संवर्त्ते ब्रह्मणे दिने ।
 कपिर्ना सिंहके शाखामृगे च मधुसूदन ॥२॥
 कूपः कूपकम्बुमाने गर्त्ताम्बुगुणवृत्तके ।
 कृपो द्रोणग्यालके स्याद् द्रोणपत्न्यांकृषीमता ॥३॥
 कृपा दयायां क्षेपस्तु निन्दाविक्षेपनेपने ।
 विलम्ब प्रेरणे गर्वे खप्यः क्रोधे वलात्कृतौ ॥४॥
 गोष्ठे गोपालके गोठाध्यक्षे वृक्षीयतावपि ।
 आमौघाधिकृते पुंसि शारिवाख्यौघौ स्त्रियाम् ॥५॥

कुपः क्षुपस्यर्शनयोस्त्वपु सीसकरङ्गयोः ।
 तल्पमट्टे कलत्रे च शयनीये च न द्वयोः ॥६॥
 त्रपा लज्जा कुलटयो स्ताप'सन्तापकृच्छ्रयोः ।
 तापी नद्यन्तरे दर्पः कस्त्रय्यामप्यहङ्कृतौ ॥७॥
 नोपः कदम्बवन्धूकनीलाशोकटुमेखपि ।
 पुष्प विद्याशकुसुमस्त्रीरजःसु नपुसक्तम् ॥८॥
 रूपं स्वभावे सौन्दर्ये नाम्गे पशुशब्दयोः ।
 ग्रन्थावृत्तेो नाटकादावाकारश्लोकयोरपि ॥९॥
 रोपः स्यान् निन्दिते क्रूरे रोपो रोपणवाणयोः ।
 लेपः प्रलेपने जङ्घौ वपा विवरमेदसोः ॥१०॥
 वाघ्य ऊष्णि नाऽस्त्रेऽथ शष्पं बालत्वणे स्मृतम् ।
 पुंसि स्यात् प्रतिभारानौ शाप आक्रोशदिव्ययोः ॥११॥
 शिल्प स्रुवे क्रियायोग्ये स्वापः शयननिद्रयोः ।
 स्पर्शाज्ञतायामज्ञाने हृषो व्यञ्जनहृदयोः ॥१२॥

पत्रिकम् ।

अनूपो महिषे नाऽम्बुप्रायदेशे तु वाच्यवत् ।
 अस्त्रण तु जलौकाया डाकिन्या राक्षसे तु ना ॥१३॥
 आवापो भाण्डे वपने परित्तेपालवालयोः ।
 आक्षेपो भर्त्सनाकृष्टिकाव्यालङ्कृतिषु स्मृतः ॥१४॥

आकल्पः कल्पने वेशे उडुपन्तु श्वेऽस्त्रियाम् ।
 चन्द्रे पुस्यलणे न स्त्री गुल्मिन्यां ना तृणान्तरे ॥१५॥
 कच्छपी वल्लकीभेदे दुलौ लुद्रगदान्तरे ।
 पुसि निधन्तरे कूर्मे मल्लबन्धान्तरेऽपि च ॥१६॥
 कलापः संचतौ वर्हे काञ्च्यां भूषणतृणयोः ।
 चन्द्रे विदग्धे व्याकरणभेदेऽपि कथ्यते बुधैः ॥१७॥
 कशिपु भक्ताच्छादनयोरेकोत्तया पृथक्तयोः पुसि ।
 कश्यप उक्तो मुनिमृगयोर्भेदे काश्यपी क्ष्मायाम् ॥१८॥
 कुतपोऽस्त्रियां दौहित्रे वाद्ये छागजकम्बले ।
 कुशे दिनस्याष्टमांशे ना स्त्र्ये कुणपो पुनः ॥१९॥
 विटशारिकायां कुणपः पूतिगन्धौ श्वेऽपि च ।
 जिह्वापः शुनि मार्जारि प्रतापस्तापतेजसोः ॥२०॥
 पादपः पादपीठे द्रौ पादुकायान्तु पादपा ।
 रक्तपा स्याज्जलौकायां डाकिन्यां ना तु राक्षसे ॥२१॥
 विटपो न स्त्रियां स्तम्बशाखाविस्तारपक्षवे ।
 विटाधिपे ना विकल्पः पुसि भ्रान्तौ च कल्पने ॥२२॥

पचतुष्कम् ।

अभिरूपो बुधे रन्धेऽपलापः प्रेम्ण्यपक्षवे ।
 अयनेपस्तु गर्भे स्यान्नेपने भूषणेऽपि च ॥२३॥

उपतापस्वराया स्यादुत्तापगद्योरपि ।
 जलकूपी कृपगर्त्ते पुष्करिण्याञ्च योपिति ॥२४॥
 नागपुष्पस्तु पुन्नागनागकेशरचम्पके ।
 परिवापस्तु पर्युप्तौ जलस्थाने परिच्छदे ॥२५॥
 परितापस्तु पुंसि स्यात् दुःखे च नरकान्तरे ।
 परिकस्यो भये कस्ये प्राप्तरूपो ज्ञरम्ययो ॥२६॥
 पिण्डपुष्पमशोके च जवायाञ्च कुशेशये ।
 वज्ररूपः शिवे विष्णौ धूनके सरटे क्षरे ॥२७॥
 मेघपुष्प पिण्डाभ्राम्बुनादेये ना हरेर्हये ।
 विप्रलापो विरोधोक्तावपर्यवचनेऽपि च ॥२८॥
 वीजपुष्प मरुवके तथा मदनकेऽपि च ।
 वृकधूपस्तु सरलद्रवक्वात्रिमधूपयोः ॥२९॥
 वृपाकपिः पुमान् कृष्णे शङ्करे जातवेदसि ।
 हेमपुष्पमशोकेऽपि जवापुष्पे नपुंसकम् ॥३०॥

पपञ्चकम् ।

भवेच्चामरपुष्पन्तु पूगे काशास्रकेतके ।

पान्तवर्गः समाप्तः ।

फैककम् ।

फो यज्ञसाधने स्थाने ज्ञञ्जावाते च पुंस्ययम् ।

फं हृत्तोक्तौ फुत्कारे च तथा निष्फलभाषणे ॥१॥

फद्विकम् ।

गुम्फस्तु गुम्फाने वाह्यारलङ्कारे च कीर्त्त्यते ।

रेफो वर्णे च पुंसि स्यात् कुत्सिते पुनरन्यवत् ॥२॥

शफं मूले तहूणां स्याद् गवादीनां खुरेऽपि च ।

शिफा जटायं सरिति मांसिकायाञ्च मातरि ॥३॥

फान्तवर्गः समाप्तः ।

वैककम् ।

वः पुमान् वरुणे सिन्धौ भगे तीये गतेऽपि च ।

गन्धने तन्तुसन्ताने पुंस्येव वपने स्मृतः ॥१॥

वद्विकम् ।

कम्बुः शङ्खेऽस्त्रियां पुंसि शम्बूके वलये गजे ।

कम्बिरंशे च वंशस्य खजाकायामपि स्त्रियाम् ॥२॥

क्लीवं स्यात् पण्डके न स्त्री वाचलिङ्गस्वविक्रमे ।

खर्व्वं सह्यान्तरे क्लीवं नीचे वामनके त्रिपु ॥३॥

गर्व्वोऽभिमानेऽवलेपे जम्बुः स्यात् पादपान्तरे ।

तथा सुमेरुसरिति द्वीपभेदेऽपि च स्त्रियाम् ॥४॥

डिम्बो भयध्वनावण्डे फुप्फुसशीघ्रविश्रवे ।

दर्विः स्त्रियां खजाकायां फणायामुरगस्य च ॥५॥

पूर्वं तु पूर्वजेषु स्युः पूर्वः प्रागाद्ययोस्त्रिषु ।
 लम्बा पद्मालया-गौर्योस्त्रिस्तत्तुस्वयामपि स्त्रियाम् ॥६॥
 विम्बस्तु प्रतिविम्बे स्यान् मण्डले पुन्नपुंसकम् ।
 विम्बिकायाः फले कूर्वं क्लकलासे पुनः पुमान् ॥७॥
 शम्भः स्यान् मुपलात्रस्यलोहमण्डलके पवै ।
 शुभान्विते त्रिषु स्तम्बोऽप्रकाण्डद्रुमगुच्छयोः ॥८॥

वचिकम् ।

कदम्बं निकुरम्बे स्यान्-नीपसर्पपयोः पुमान् ।
 कलम्बी शाकभेदे स्यात् कदम्बशरयोः पुमान् ॥९॥
 कादम्बः स्यात् पुमान् पक्षिविशेषे शायकेऽपि च ।
 गजाद्वा गजपिप्पल्यां गजाद्बवं हस्तिनापुरे ॥१०॥
 गन्धर्व्वः पशुभेदे स्यात् पुंस्कोकिलतुरङ्गयोः ।
 अन्तराभवसत्वे च गायने खेचरेऽपि च ॥११॥
 गोडुम्बः शीर्णवृन्ते च गवादन्यान्तु योपिति ।
 द्विजिह्वस्तु खले सर्पे नितम्बः स्कन्धरोधसौः ॥१२॥
 स्त्रियाः पश्चात् कटावट्टेः कटके कटिमात्रके ।
 प्रलम्बो दैत्यभेदे स्यात् त्रपुषेऽपि पयोधरे ॥१३॥
 लताङ्कुरे च शाखायां द्वारभेदे प्रलम्बने ।
 भुजम्बूरपि गोधूमे विकङ्कतफले स्त्रियाम् ॥१४॥
 धेरम्बो विघ्नराजे स्यान्-मक्षिपे शौर्यगर्व्विते ।

वचतुष्कम् ।

राजजम्बूस्तु जम्बूभित् पिण्डखर्जूरयोः स्त्रियाम् ॥१५॥

ललजिह्वोऽन्यवत् द्विंसे क्रमेलकशुनोः पुमान् ।

शतपर्च्वा तु दूर्वायां वचाभार्गवयोपितोः ॥१६॥

वपञ्चकम् ।

धूलीकदम्बो नीपे स्यात् तिनिशे वरुणद्रुमे ।

शृगालजम्बू गौडुम्बे तथा घोण्टाफले स्त्रियाम् ॥१७॥

वान्तवर्गः समाप्तः ।

भैककम् ।

भं नक्षत्रे गभस्तौ स्त्री पुंसि स्याद् मृगुनन्दने ।

भूः स्यान्मात्रे कथिता धरण्यामपि योपिति ॥१॥

भद्विकम् ।

कुम्भो राश्यान्तरे दक्षिणमूर्धांशे राक्षसान्तरे ।

कामुके वारनार्याञ्च घटे लीवन्तु गुग्गुलौ ॥२॥

स्त्रियामुखाकट्फलयोः पृश्निकायाञ्च पाटलौ ।

गर्भो मूणेऽर्भके कुक्षौ सन्धौ पनसकण्टके ॥३॥

दम्भस्तु कैतवे कल्के दन्-भूः स्त्री सर्पचक्रयोः ।
 नाभिर्मुखनृपे चक्रमध्यक्षत्रिययोः पुमान् ॥५॥
 द्वयोः प्राणिप्रतीके स्यात्स्त्रियां कस्तूरिकामदे ।
 निभस्तु कथितो व्याजे पुंलिङ्गः सदृशे त्रिषु ॥६॥
 रम्भा कदल्यम्बरसे ना वेणौ वानरान्तरे ।
 विभुः प्रभौ सर्वगत शङ्करब्रह्मणोस्तु ना ॥७॥
 शम्भुः पुंसि महादेवे परमेष्ठिनि चार्हति ।
 शुभो योगे शुभं क्षेमे वाच्यवत् क्षेमशालिनि ॥८॥
 खसञ्चारिपुरे स्त्री तु शोभा कान्तीच्छयोर्मता ।
 सभा सामाजिके गोष्ठ्यां द्यूतमन्दिरयोरपि ॥९॥
 स्वभू ना ब्रह्मणि हरौ स्तम्भः स्यूणाजडत्वयोः ।

भद्रिकम् ।

आरम्भस्तु त्वरायां स्यादुद्यमे वधदर्पये तः ॥१०॥
 आत्मभू ना विधौ कामेऽप्युपभस्त्रौपधान्तरे ।
 स्वरभिद्गृपयोः कर्णरन्ध्रकुम्भीरपुच्छयोः ॥११॥
 उत्तरस्यः स्मृतः श्रेष्ठे स्त्री नराकारयोपिति ।
 गृकगिम्ब्यां शिरालायां विधवायां कचिन-मता ॥१२॥
 कफुभ् स्त्रियां प्रवेणीदिकुशोभास्तु चम्पकस्रजि ।
 ककुभो रागभेदेऽपि वीणाङ्गेऽर्जुनपादपे ॥१३॥

कटभी वृद्धभेदेऽपि ज्योतिष्कत्यामपि स्त्रियाम् ।
 करभो मणिवन्धादिकनिष्ठान्तो द्रुततत्सुते ॥१४॥
 कुण्डलां हेमनि मद्यारजने ना कमण्डलौ ।
 गर्दभं श्वेतशुभुदे गर्दभो गन्धभिद्यपि ॥१५॥
 रासभे गर्दभी क्षुद्रगोगजन्तुविशेषयोः ।
 दुर्लभस्त्रियु दुष्प्रापे कर्चूरे दुन्दुभिः पुमान् ॥१६॥
 वरुणे दैत्यभेर्योश्च ख्यत्तविन्दुत्रिकादये ।
 निकुम्भः कृष्णकर्णस्य तनये दन्तिकौपथी ॥१७॥
 वज्रभो दयितेऽध्यक्षे सज्जक्षणतुरङ्गमे ।
 वर्षाभः स्त्री च शोथघ्नां भूलतामवयोः पुमान् ॥१८॥
 विष्कम्भो योगभेदे स्याद् विस्तारप्रतिबन्धयोः ।
 रूपकाङ्गभेदे च बन्धभेदे च योगिनाम् ॥१९॥
 विश्रम्भः केनिकलक्षे विश्वानि प्रणयेऽपि च ।
 विष्टनाः प्रतिबन्धे स्यात् प्रभेदे चानयम्य च ॥२०॥
 वृषभः श्रेष्ठवृषदोर्वैदर्भी गीतिभिद्यपि ।
 वैदर्भं यावद्वपक्रत्ये शरभसु षोडशभिर्दि ॥२१॥
 करभे वानरभिर्दि सनाभिर्द्वातितुन्ययोः ।
 सुगभिः शङ्खकीमातृभिन्मुरागोपु योऽपि ॥२२॥
 चम्पके च वसन्ते च तथा जातीफले पुमान् ।
 रूर्णे गन्धोत्पले जीवं सुगन्धिकान्तयो स्त्रियु ॥२३॥

विख्याते शचिवे धीरे चैत्रेऽपि च पुमानयम् ।

भचतुष्कम् ।

अनुष्टुम् स्यात् सरस्वत्यां कन्दोभेदे च योपिति ॥२४॥

अवष्टम्भ सुवर्णे च स्तम्भप्रारम्भयोरपि ।

शातकुम्भं सुवर्णे स्यात् शातकुम्भोऽश्चमारंके ॥२५॥

भान्तवगः समाप्तः ।

मैककम् ।

मो यमे समयेऽपि स्याद् विषे च मधुसूदने ।

मा स्त्री पद्मालयायां स्यात् पुलिङ्गश्चन्द्रशेखरे ॥२॥

मद्विकम् ।

आमोरुक्तङ्गिदोः पुंसि स्यादपक्वेऽन्यलिङ्गकः ।

उमाऽतसौ हैमवती हरिद्राकीर्तिकान्तिषु ॥२॥

कर्म्मिः स्त्रीपुंसयो र्वीच्यां प्रकाशे वेगभङ्गयोः ।

वस्त्रसङ्कोचरेखायां वेदनापीडयोरपि ॥३॥

क्रमश्चानुक्रमे शक्तौ कल्पे चाक्रमणेऽपि च ।

च्मा भूमौ तितिचाया स्त्रियां युक्ते नपुंसकम् ॥४॥

वाच्यवत् शक्तहितयोः कामः स्मरेच्छयोः पुमान् ।

रेतस्यपि निकामे च काम्येऽपि स्यान् नपुंसकम् ॥५॥

कामिर्ना कामुके रत्यां स्त्री किम् ज्ञेयवितर्कयोः ।
 निन्दायाञ्च परिप्रश्ने वाच्यलिङ्गमुदाहृतम् ॥६॥
 कृमिर्ना क्रिमिवत्कीटैलाक्षायां कृमिले खरे ।
 किम्भीं पलाशे शालायां हेमपुत्र्याञ्च योषिति ॥७॥
 चुमाऽतसीनीलिकयोः क्षेमं स्याल्लक्ष्मणरक्षणे ।
 चण्डायां ना शुभे न स्त्री कात्यायन्याञ्च योषिति ॥८॥
 क्षौममट्टे दुकूलेऽस्त्री क्षौमं वल्ललजांशुकै ।
 शण्जेऽतसीजे खर्म्मं पौरुषे कौपजांशुकै ॥९॥
 गमो नाऽक्षविवर्त्ते स्यादपर्यालोचनेऽध्वनि ।
 ग्रामः खरे संवसथे त्रीया ऊष्णत्तुंभेदयोः ॥१०॥
 गुल्मः सेनाघट्टभिदोः सैन्यरक्षणरुग्भिदोः ।
 स्तम्बे स्त्रियामामलक्ये लावनीवस्तवेशसु ॥११॥
 घमोः स्यादातपे त्रीयोऽप्युष्णस्वेदान्भसेरपि ।
 चमूः सेनाविशेषे च सेनामात्रे च योषिति ॥१२॥
 जाल्मः स्यात्पामरे क्रूरेऽसमोच्यकारिणि त्रिषु ।
 जिह्वस्तु कुटिले मन्दे क्लीवं तगरपादपे ॥१३॥
 नोक्त्वां कर्णमले पुमि क्षरिते च क्षरिद्यये ।
 दमस्तु दमये दण्डे कर्द्धमे दमने पुमान् ॥१४॥
 दक्षस्तु यजमाने म्यादपि चारे ऊनाशने ।
 दुमो मधीरुक्षे पाणिजाते किम्पुरुषेश्वरे ॥१५॥

धर्मोऽस्ती पुण्य आचारे स्वभावोपमयोः क्रतौ ।
अहिंसापनिषन्त्याये नो धनुर्यमसोमपे ॥१६॥
ध्याम दमनके गन्धर्वणेऽथ ग्यामले त्रिषु ।
नेमिर्ना तिनिशे कूपत्रिकाचक्रान्तयोः स्त्रियाम् ॥१७॥
नेमः कीलेऽवधौः गर्त्ते प्राकारे कौतवेऽपि च ।
पद्मेऽस्ती पद्मके व्यूहनिधिसह्यान्तरेऽम्बुजे ॥१८॥
नानागे स्त्री फञ्जिकाश्रीचारटीपन्नगेषु च ।
ब्रह्मो तु फञ्जिकाया स्यात् शाकमत्स्यप्रभेदयोः ॥१९॥
ब्राह्मो तु भारती सोमवज्जरीब्रह्मशक्तिषु ।
भ्रमोऽम्बुनिर्गमे भ्रान्तौ कुन्दभ्रमणयोगपि ॥२०॥
भामुः क्रोधे रवौ दीप्तौ भीष्मो गाङ्गेयघोरयोः ।
भीमोऽम्बुवेतसे घोरि शम्भौ मध्यमपाण्डवे ॥२१॥
भूमि वसुन्धराया स्यात् स्थानमात्रेऽपि च स्त्रियाम् ।
भौमः कुजे च नरके पुंसि भूमिभवे त्रिषु ॥२२॥
यमोऽन्यलिङ्गो यमजे ना काके शमने शनौ ।
शरीरसाधनापेक्षनित्यकर्मणि सयमे ॥२३॥
यामस्तु पुंसि प्रहरे सयमे च प्रकीर्तितः ।
यामिः कुलस्त्रीस्वसोः स्त्री युध्मो धनुषि सयुगे ॥२४॥
रश्मि पुमान् दीधितौ स्यात् पक्ष्मप्रग्रहयोरपि ।
रमा लक्ष्म्या रम कान्ते रक्ताशोकद्रुमे स्मरे ॥२५॥

रामा योषाहिङ्गुनद्योः क्लीवं वात्सकक्रुष्ठयोः ।
 ना राघवे च वरुणे रैणुकेये हलायुधे ॥२६॥
 ह्ये च पशुभेदे च त्रिपु चारौ सितेऽसिते ।
 रुमा सुग्रीवदारिषु विशिष्टनवणाकरे ॥२७॥
 रुक्मञ्च काञ्चने लोहे जल्मीः सम्पत्तिशोभयोः ।
 ऋद्धौपधे च पद्मायां वृद्धिनामौपधेऽपि च ॥२८॥
 फलिन्यां स्त्रीवर्मिर्वान्तौ स्त्रियां पुंसि ऊताशने ।
 वामं धने पुंसि हरे कामदेवे पयोधरे ॥२९॥
 वल्गु प्रतीपसव्येषु त्रिपु नार्यां स्त्रियामथ ।
 वामी शृगाली वड्वा रासभी करभीषु च ॥३०॥
 शमी शक्तुफलायाञ्च शिम्बिकायाञ्च वाग्गुणौ ।
 श्यामो वटे प्रयागस्य वारिदे वृद्धदारके ॥३१॥
 पिके च कृष्णहरिताः पुंसि स्यात् तद्वति त्रिपु ।
 मरीचे सिन्धुलवणे क्लीवं स्त्री शारिवौपधौ ॥३२॥
 अप्रसृताङ्गनायाञ्च प्रियङ्गावपि वाग्गुणौ ।
 यमुनायां त्रियामाया कृष्णत्रिवृत्तिकौपधौ ॥३३॥
 नोलिकायामथ श्यामो मासे मण्डपकालयोः ।
 शूर्यां तेजसि ह्ये ना समा सवत्सरे स्त्रियाम् ॥३४॥
 सर्वसाधुसमानेषु समं स्यादभिधेयवत् ।
 सीमाऽऽघाटस्यति जेवैष्यण्डकोपेऽपि च स्त्रियाम् ॥३५॥

सूक्ष्म स्यात् कैतवेऽध्यात्मे पुस्यणौ त्रिषु चान्यके ।
 सूमं क्षीरे च नभसि सोमस्तु हिमदीधितौ ॥३६॥
 वानरे च कुबेरे च पितृदेवे समीरणे ।
 वसुप्रभेदे कर्पूरे नीरे सोमलतौपधौ ॥३७॥
 हिम तुषारमलयोद्भवयोः स्यान् नपुंसकम् ।
 शीतले वाचलिङ्गेऽथ होमिर्ना पावके घृते ॥३८॥

मन्त्रिकम् ।

अधमः स्याद् गर्ह्यजनेऽप्यागमः शास्त्र आगतौ ।
 आश्रमो ब्रह्मचर्यादौ वानप्रस्थे मठे वने ॥३९॥
 अस्त्रियामुत्तमा दुग्धिकायां स्त्री त्रिषु भद्रके ।
 उद्दामो बन्धरहिते स्वतन्त्रे च प्रचेतसि ॥४०॥
 कलमः पुंसि लेखन्यां शालौ पटच्चरेऽपि च ।
 कुसुम स्त्री रजो नेत्ररोगयोः फलपुष्पयोः ॥४१॥
 कृत्रिम लवणभेदे ना सिद्धके रचिते त्रिषु ।
 गोलोमी श्वेतदूर्वाया स्याद् वचाभूतकेशयोः ॥४२॥
 गोधूमो नागरङ्गे स्यादोपधित्रीधिभेदयोः ।
 गोतूमो ना मुनौ बुद्धे रोचनी दुर्गयोः स्त्रियाम् ॥४३॥
 तल्लिमं कुट्टिमे तल्पे चन्द्रहासे वितानके ।
 दाडिमस्तु त्रिलिङ्गः स्यादेलायां करके त्रिषु ॥४४॥
 निष्कमो बुद्धिसम्पत्तौ निर्गमे दुष्कुलेऽपि च ।

निगमो वाणिजे पुर्यां कटे वेदे वणिकूपथे ॥४५॥
 नियमो मन्त्रणायाञ्च प्रतिज्ञानिश्चये व्रते ।
 नैगमः स्यादुपनिषदणिजो नागरेऽपि च ॥४६॥
 परमं स्यादनुज्ञायामव्ययं परमं परे ।
 प्रथमस्तु भवेदादौ प्रधानेऽपि च वाच्यवत् ॥४७॥
 प्रतिमा गजदन्तस्य वन्धे चानुकृतावपि ।
 पञ्चमो रागभेदे स्यात् स्वरभेदेऽथ पञ्चमी ॥४८॥
 पाण्डवानाञ्च पत्न्यां स्त्री पञ्चानां पूरणे त्रिषु ।
 प्रक्रमः क्रमेऽवसरे मध्यमो मध्यजेऽन्यवत् ॥४९॥
 पुमान् स्वरे मध्यदेशेऽथवलग्रे तु न स्त्रियाम् ।
 स्त्रियां दृष्टरजोनार्यां कर्णिकाङ्गुलिभेदयोः ॥५०॥
 त्यक्षरच्छन्दसि तथा ललामं लाञ्छने ध्वजे ।
 शृङ्गे प्रधाने भूषायां तथा बालधिपुण्ड्रयोः ॥५१॥
 तुरङ्गे च प्रभावेऽथ व्यायामः पौरुषे यमे ।
 विपमे दुर्गसञ्चारे विभ्रमो भ्रान्तिहावयोः ॥५२॥
 विद्रुमो रत्नवृत्तेऽपि प्रवालेऽपि पुमानयम् ।
 विलोमस्तु प्रतीपे स्याद् भुजङ्गे वरुणे शुनि ॥५३॥
 च्यामलक्यां विलोमी च विलोमञ्चारघट्टके ।
 विक्रमस्तु पुमान् क्रान्तिमात्रे स्यात् शक्तिसम्पदि ॥५४॥
 संक्रमः क्रमणे पुंसि न स्त्री स्याद् दुर्गसञ्चरे ।

सम्भ्रमः साध्वसेऽपि स्यात् सवेगादरयोरपि ॥५५॥
 सत्तमः स्यात् पूज्यतमे साधीयस्युत्तमे त्रिषु ।
 सरमा कुक्कुरी देवशृङ्गयोः स्याद् राक्षसीभिदि ॥५६॥
 सुपमाऽत्यन्तशोभाया स्त्री चारौ च समे त्रिषु ।
 सुधीमः शीतले चारौ त्रिषु ना पन्नगान्तरे ॥५७॥

मचतुष्कम् ।

भवेदनुपमा सुप्रतीकिन्या स्त्री त्रिपूत्तमे ।
 अभ्यागमो विरोधाजिघाताभ्युद्गमनान्तिके ॥५८॥
 उपक्रमस्त्वपथाया ज्ञात्वारम्भे च विक्रमे ।
 चिकित्सायामुपगमः स्त्रीकारेऽन्तिकसर्पणे ॥५९॥
 जलगुल्मो जलावर्त्ते कच्छपे जलचत्वरे ।
 दण्डयामस्तु कीनाशे दिवसे कुम्भसम्भवे ॥६०॥
 श्ववद्गमस्तु मण्डूके तथा शाखान्दृगेऽपि च ।
 पराक्रमो विक्रमे स्यात् सामर्थ्याद्योगयोरपि ॥६१॥
 महापद्मः पुमान् नागेनिधिसह्यान्तरेषु च ।
 यातयामोन्यवर्ज् जीर्णे परिभुक्तोऽङ्गितेऽपि च ॥६२॥
 सार्वभौमस्तु दिङ्गागे सर्व्वपृथ्वीपतावपि ।
 अभ्युपगमस्तु पुंसि स्त्रीकारे निकटगमने च ॥६३॥
 नक्षत्रनेमिरुक्ता रेवत्या ना ध्रुवे चन्द्रे ।

मान्तवर्गः समाप्तः ।

यैककम् ।

योनावायौ यमने या यात्रान्निधूमितत्यागेषु ।
 वारणयोगसमज्ञायानेषु पुमांस्तु गन्तारं विख्यातः ॥१॥
 ज्या मातरि वसुधायां मौर्व्यां द्यु क्लीवमद्भि गगने च ।
 ना ज्वलने द्यौ स्त्रिदशानयत्रिदशवर्त्मने र्योपित् ॥२॥

यद्विकम् ।

अव्य. स्यात् पङ्कजे पुंसि त्रिषु रम्ये च नाविके ।
 अर्थ्यं शिलाजतुन्यार्थ्ये बुधे न्यार्ये च वाच्यवत् ॥३॥
 अन्यस्तु पुंसि मुस्तायामन्तोद्भूतेऽधमे त्रिषु ।
 अर्थ्यमर्घस्य योग्ये स्यात् अर्घ्यार्थ्येऽपि च वाच्यवत् ॥४॥
 अन्योऽसदृशेतरयोरर्थ्यः स्यात् स्वामिवैग्ययोः ।
 आस्य मुखे च तन्मध्ये तद्भवे च स्त्रियां स्थितौ ॥५॥
 इज्या दानेऽध्वरेर्चायां सद्भमे स्त्री गुरौ त्रिषु ।
 इभ्या करेणु शक्योः स्त्रियामाद्ये तु वाच्यवत् ॥६॥
 कश्यत्रिषु कशार्धे स्यात् क्लीवं मद्याश्वमध्ययोः ।
 कन्या कुमारिकानार्थ्यो रोपधीराग्निभेदयोः ॥७॥
 क्षयेरोगान्तरे वैष्मकल्पान्तापचयेषु च ।
 कल्प्यप्रभाते क्लीवं स्यात् कल्पोवाक् श्रुतिवर्जिते ॥८॥
 सज्जनीरोगदक्षेपु कन्याणवचनेऽपि च ।
 उपायवचनेऽपि स्यात् त्रिषु मद्येतु योपिति ॥९॥

कक्ष्या वृद्धतिकायां स्यात् काञ्चदां मध्येभवन्धने ।
 हर्म्यादीनां प्रकोष्ठेषु कार्यं हेतौ प्रयोजने ॥१०॥
 काव्य ग्रन्थे पुमान् शुक्ले काव्या स्यात् पूतनाधियोः ।
 कांस्यं वाद्यान्तरे पानपात्रे स्यात् तैजसान्तरे ॥११॥
 कायः कदैवते मूर्त्तौ सङ्घे लक्ष्यस्वभावयोः ।
 मन्यतीर्थे कायं स्यात् क्रियात्प्रपायचेष्टयोः ॥१२॥
 आरम्भे निष्कृतौ पूजासम्प्रधारणकर्मसु ।
 शिक्षाचिकित्साकरणे कुञ्चं स्यात् नपुसकम् ॥१३॥
 विलेपने च भित्तौ च तथा कौतूहलेऽपि च ।
 कुल्यं स्यात् कीकसेऽप्यष्टदोषी शूर्पामिषेषु च ॥१४॥
 कुल्या पयःप्रणाल्याञ्च नद्यां जीवन्तिकौपधौ ।
 कुलोद्भवे कुलहिते त्रिषु मान्ये पुनः पुमान् ॥१५॥
 कृत्या क्रियादेवतयोः स्त्रियु विद्विष्टकार्ययोः ।
 गयः स्यात् पशुराजर्षीर्भेदे तीर्थे पुनर्गया ॥१६॥
 गव्य नपुसकं ज्यायां रागद्रव्येऽप्यय स्त्रियाम् ।
 गोसमूहे त्रिलिङ्गन्तु दुग्धादौ च गोहिते ॥१७॥
 ग्राम्यं स्त्रीकरणे क्लीवेऽश्लीलप्राकृतयोस्त्रियु ।
 गुह्य रक्षस्युपस्थे च गुह्यः कमठदम्भयोः ॥१८॥
 गृह्यं गुदे ग्रन्थभेदे क्लीवं शाखापुरे स्त्रियाम् ।
 गृहासक्तौ गृहादौ ना त्रिषु चास्त्रैरिपत्तयोः ॥१९॥

गेयन्तुगीते गेयः स्याद् गातव्ये गायने त्रिषु ।
 गोष्यो दासीसुते पुंसि रक्षणीयेऽभिधेयवत् ॥२०॥
 चव्यन्तु चविके क्लीवं वचायामपि योषिति ।
 चयः समूहे प्राकारे मूलवन्धे समाहृतौ ॥२१॥
 चित्तं मृतकचैत्ये स्याच्चित्रामृत चित्तौ स्त्रियाम् ।
 चैत्यमायतने बुद्धविम्बे नादेशपादपे ॥२२॥
 चोद्यं स्याद्ङ्गते प्रश्ने चोदनाह्ने तु वाच्यवत् ।
 छाया स्यादातपा भावे प्रतिविम्बार्क योषितोः ॥२३॥
 पालनेत्कोचयो दीप्तिस्च्छोभापङ्क्तिषु स्त्रियाम् ।
 जया जयन्तीतिथिभित्पथ्यामातत् सखीषु च ॥२४॥
 अग्निमन्थे ना जयन्ते विजये च युधिष्ठिरे ।
 जन्यं हृष्टे परीवादे संग्रामे च नपुंसकम् ॥२५॥
 जन्या मातृवयस्यायां जन्यः स्याज् जनके पुमान् ।
 त्रिपूत्याद्यजनित्रोश्च नवादाज्ञातिभृत्ययोः ॥२६॥
 वरस्त्रिग्वेऽथ जन्युः स्यात् पुंसि प्राण्यग्निधातुषु ।
 त्रयी त्रिवेद्यां त्रितये न ना तार्क्ष्याऽथशालयोः ॥२७॥
 गरुडाग्रजे सुपर्णे पुंसि क्लीवं रसाञ्जने ।
 तिथ्यो नक्षत्रभेदे स्यात् कलौ धात्याच्च योषिति ॥२८॥
 द्रव्यन्तु पित्तले वित्ते पृथिव्यादौ विलेपने ।
 क्लीवे च भेषजे भव्ये दुर्विकारे च वाच्यवत् ॥२९॥

दस्यु श्वैरे रिपौ पुंसि दायः सोऽङ्गुण्डभापणे ।
 विभक्तव्यपितृद्रव्ये तथा हरणदानयोः ॥३०॥
 दिव्यं लवङ्गे धाव्यां स्त्री वल्गौ दिवि भवे त्रिपु ।
 दूयं त्रिपु दूषणोये क्त्वीवं वस्त्रे च तद्गृहे ॥३१॥
 दूयं दूतस्य भागे च भावे कर्माण्यपि स्मृतम् ।
 दैत्योऽसुरे सुरायान्तु दैत्या चण्डौपधावपि ॥३२॥
 धन्या धाव्यामलक्योः स्याद् धन्यं पुण्यवति त्रिपु ।
 धान्यं व्रीहिपु धन्याके विष्णुः स्थानाग्निमद्भसु ॥३३॥
 शक्तावृक्षेऽप्यथ नयो नीतिशूतत्रिशेषयोः ।
 नायं नैर्यत्रिके जास्ये नित्यं स्यात् सततेऽपि च ॥३४॥
 शाश्वते त्रिपु पथ्या स्त्री हरितेभ्यः स्त्रिने त्रिपु ।
 पद्य श्लोके पुमान् शूद्रे पद्या चर्तमनि कीर्त्तिता ॥३५॥
 पाकं विटाख्यलषणे चैव चारे पुनः पुमान् ।
 प्रायो मरुणानशने मृत्यौ वाङ्मल्यतुल्ययोः ॥३६॥
 प्रियो हृद्येऽन्यवत् पुंसि बुद्धिर्नामौपधे धवे ।
 पीयुः काने रवौ घूके ना पुण्य शोभने त्रिपु ॥३७॥
 क्त्वीवं धर्मं च सुकृते पुण्यः कलियुगे स्मृतः ।
 नक्षत्रमासयो र्भेदे पूज्यः शशुरवन्द्ययोः ॥३८॥
 पेयं पातव्यपयसोः पेयाश्राणाच्छमण्डयोः ।
 वन्द्यस्त्वफलवृक्षादौ स्त्रियां स्याद् प्रजः स्त्रियाम् ॥३९॥

वर्या पतिं वरायं स्त्री वरेण्ये त्रिपु ना स्तरे ।
 वल्यं प्रधानघातौ स्यात् क्लीवं वलकरे त्रिपु ॥४०॥
 वीर्यं शुक्रे प्रभावे च तेजः सामर्थ्ययोरपि ।
 भयं प्रतिभये घारे प्रसूने कुलकस्य च ॥४१॥
 भयं शुभे च सत्ये च योग्ये भाविनि च त्रिपु ।
 कमेरङ्गतरौ पुंसि स्त्रियां करिकणोमयोः ॥४२॥
 क्लीवमस्थिनि भाग्यन्तु स्यात् शुभाशुभकर्मणोः ।
 भृत्यो दासे भृतौ भृत्या मयुर्ना किन्नरे मृगे ॥४३॥
 मयः शिल्पिनि दैत्यानां करभेऽथतरेऽपि च ।
 मध्यं विसृजे न स्त्री स्यान् न्याय्येऽन्तरेऽधमेऽन्यवत् ॥४४॥
 मत्स्यो मीनेऽथ पुंभृन्निःश्रेण्ये मन्युः पुमान् क्रुधि ।
 दैन्ये शोके च यज्ञे च माल्यं कुक्षुमतत्सृजाः ॥४५॥
 माया स्यात् शांवरीवुद्धौ मायः पीताम्बरेऽसुरे ।
 मूल्यं स्याद् वेतने प्रश्न मृत्युर्ना मरणे यम् ॥४६॥
 मेध्यं त्रिपु शुचौ रक्तवचारेचनयोः स्त्रियाम् ।
 ययुः पुमानश्च मेघतुरङ्गे च तुरङ्गमे ॥४७॥
 याप्यस्तु यापनीये स्यान् निन्दितेऽप्यभिधेयवत् ।
 यास्याऽप्राच्यां भरण्याञ्च पुस्यगस्त्रे च चन्दने ॥४८॥
 योग्यः प्रवीणयोगार्हो पायिशक्तेषु वाच्यवत् ।
 क्लीवन्तु ह्यौषधे पुष्ये ना स्यभ्यामार्कयोपिताः ॥४९॥

रम्या रात्रौ चम्पके ना मनीजे त्वभिधेयवत् ।
 नपुसक पटोलस्य मूले स्वरिभिरिष्यते ॥५०॥
 रथ्या रथौघविशिखावर्त्तनीषु च योपिति ।
 रथवोढरि पुलङ्गे रूष्य' स्यात् सुन्दरे त्रिषु ॥५१॥
 आहतस्वर्णरजते रजते च नपुसकम् ।
 लयो विनाशे सङ्घेपे साम्ये तैर्यत्रिके मतम् ॥५२॥
 लक्ष्य स्यात्पदेषुऽपि शरव्येषुऽपि नपुसकम् ।
 लभ्य युक्ते च लब्धव्ये लास्य तैर्यत्रिके मतम् ॥५३॥
 नृत्ये च ब्रज्या प्रस्थाने वर्गे पर्यटनेऽपि च ।
 वन्य त्रिषु वनोद्भूते स्त्रो वनाम्बुसमूहयोः ॥५४॥
 वाच्यन्तु कुत्सिते हीने वचनार्हे च वाच्यवत ।
 विन्ध्या स्त्रियां लवल्यां स्यात् पुंसि व्याधाद्रिभेदयोः ॥५५॥
 वीक्ष्यन्तु विस्रये दृश्ये पुंसि लासकवाजिनोः ।
 वैश्यं वैश्याद्युहे क्लीब गणिकायान्तु योपिति ॥५६॥
 शल्यन्तु नस्त्रिया शङ्कौ क्लीवं सेडे पुतोमरे ।
 मदनद्रुश्याविधानां शयः शय्यादि पाणिषु ॥५७॥
 शय्या स्यात् शयनीये च गुम्फनेऽपि च योपिति ।
 शून्य स्यान् निर्जने वाच्यलिङ्गनल्यान्तु योपिति ॥५८॥
 शौर्यमारभटी शक्तयोः सद्यै शैलान्तरे पुमान् ।
 सोढव्ये वाच्यलिङ्गः स्वादारोग्ये तु नपुसकम् ॥५९॥

सङ्घं समिति सङ्घ्या स्यादेकाद्यदिविचारयोः ।
 सन्ध्या पितृप्रद्वनद्यन्तरयो र्युगसन्धिषु ॥६०॥
 सत्यं कृते च शपथे तथ्ये त्रिषु तु तद्वति ।
 सव्यं वामे प्रतीपे च स्रयो नाऽङ्गुतगर्व्वयोः ॥६१॥
 सायः काण्डे दिनान्ते च साध्या योगान्तरे शरे ।
 गणदेवविशेषे च साधनीये तु वाच्यवत् ॥६२॥
 सूर्य्याऽर्कपर्णे तपने स्त्री तङ्गाय्यापधीभिदोः ।
 स्येयो विवादपक्षस्य निर्णेतरि पुरोहिते ॥६३॥
 सेव्यं क्लीवमुशीरे स्यात् सेवार्हे पुनरन्यवत् ।
 सैन्यं क्लीवं बले सेनासमवेते तु वाच्यवत् ॥६४॥
 सौम्यो ज्ञे ना त्रिष्वनुये मनोज्ञे सोमदैवते ।
 चार्थ्यो विभीतकतरौ चर्त्तव्ये पुनरन्यवत् ॥६५॥
 हृद्यं जवनेऽथत्रिषु हृज्जहृद्वितहृत्त्रिये ।
 वशकृद् वेदमन्त्रे ना वृद्धिनामौपधे स्त्रियाम् ॥६६॥

यत्रिकम् ।

अनयस्तु विपदैवाशुभयोर्व्यसनेषु च ।
 अत्ययोऽतिक्रमे दण्ड विनाशे दोषकृच्छयोः ॥६७॥
 अश्रीयमश्वसङ्घाते क्लीवमश्वहितेऽन्यवत् ।
 अध्याया तटिनीभेदे प्रगल्भे वाच्यलिङ्गकः ॥६८॥

अभिख्या त्वभिधाने स्यात् शोभायाञ्च यशस्यपि ।
 अभया तु हरितक्यामुशीरे तु नपुसकम् ॥६९॥
 निर्भये वाचलिङ्ग स्यादपत्य पुत्रयो र्मतम् ।
 अगस्य स्यात् कुम्भयोनौ वङ्गसेनतरावपि ॥७०॥
 अवध्यमवधार्ये स्यादनर्थकवचस्यपि ।
 अव्ययोऽस्त्रो शब्दभेदे ना विष्णौ निर्व्यये त्रिपु ॥७१॥
 अहत्या त्वपरो भेदे भार्याया गौतमस्य च ।
 अहार्य पर्वते ना स्यादहर्त्तव्ये तु वाच्यवत् ॥७२॥
 आशय स्यादभिप्राये पनसाधारयोरपि ।
 स्यादातिथ्यमतिथ्यर्थे त्रिलिङ्गमतिथौ पुमान् ॥७३॥
 अत्रेयी पृष्यवत्या स्यात् नदीभेदे च ना मुनौ ।
 आदित्यो भास्करे देवेऽप्याम्नायो निगमेऽपि च ॥७४॥
 उपदेशेऽपीन्द्रियन्तु हृषीके चेतसि स्मृतम् ।
 उदयस्तु पुमान् पूर्वपर्वते च सुमुन्नतौ ॥७५॥
 उपायः सामभेदादौ तथैवोपागतौ पुमान् ।
 ऊर्णायुर्ना क्षणभङ्गे मेघकम्बलमेपयोः ॥७६॥
 औचित्यमुचितत्वे स्यात् सत्येऽपि च नपुसकम् ।
 कपायो रसभेदेऽपि निर्व्यासे च विलिपने ॥७७॥
 अङ्गरागे च नस्त्री स्यात् सुरभौ लोचिते त्रिपु ।
 कालेयो दैत्यभेदे स्यात् कालखण्डे नपुसकम् ॥७८॥

क्षिपण्यस्तु पुमान् देहे सुरभौ वाचलिङ्गकः ।
 कुलायस्तु पुमान् स्थानमात्रे स्यात् पक्षिवासकेः ॥७१॥
 क्षेत्रियं क्षेत्रजद्वेषे परदेहविकित्तयोः ।
 परदागरतासाध्यरोगयोः क्षेत्रियः पुमान् ॥७०॥
 कौकृत्यमनुतापे स्याद्युक्तकरणेऽपि च ।
 गाङ्गेयः स्यात्पुमान् भीयो स्त्रीयं स्वर्णकृशरुणोः ॥७१॥
 चक्षुष्यः केतके पुण्डरीकसंज्ञकपादपे ।
 कुक्षित्तिका सुभगयोः स्त्रियामक्षित्तेऽन्यवत् ॥७२॥
 चास्येयश्चम्यके स्वर्णे किञ्चस्ते नागकेशरे ।
 जघन्यं मेघने स्त्रीयं चरमे गर्हितेऽन्यवत् ॥७३॥
 जटायुः पुंसि सम्पातेः कनीयसि च गुग्गुनौ ।
 जरायुरपि तत्पक्षिराजे गर्भागये पुमान् ॥७४॥
 तपस्या व्रतचर्यायां तपस्यः फाल्गुने पुमान् ।
 द्वितीया तिथिभित्त्वत्त्रेयाः पूरणे लभयो स्त्रियु ॥७५॥
 देषयु र्वाच्यनिङ्गः स्याद् धार्मिके नोकयात्रिके ।
 नादेयी नागरहे स्याज् जयायामम्बुयेतमे ॥७६॥
 भूमिजम्वां जवायाश्च व्यदुष्टेऽपि च योपिति ।
 निकायस्तु पुमान् लक्ष्ये मधुर्मिप्राणिमं हनौ ॥७७॥
 समुच्चये संहनानां निनये परमात्मनि ।
 नेपथ्यं स्यादलङ्कारि रङ्गज्यायां नपुंसकम् ॥७८॥

प्रणयः प्रथये प्रेम्नि चाञ्जाविश्रम्भयोरपि ।
 निर्व्वाणेऽप्यथ पर्यायः प्रकारेऽवसरे क्रमे ॥८९॥
 प्रलथो मृत्युकल्पान्तमूर्च्छापायेषु पुंस्ययम् ।
 प्रत्ययः प्रथितत्वे च मत्वादिज्ञानयोरपि ॥९०॥
 आचारे शपथे रन्ध्रविश्यासाधीनहेतुषु ।
 पर्यन्तो मेघशब्देऽपि ध्वनदम्बुदशक्रयोः ॥९१॥
 प्रसव्यं वाच्यलिङ्गं स्यात्प्रतिकूलानुकूलयोः ।
 प्रकीर्य्य पूतिकरजे विनिकीर्य्ये तु वाच्यवत् ॥९२॥
 प्रणाय्योऽसम्भतेऽपि स्यादभिलापविवर्जिते ।
 पयस्यन्तुपयोजातहितयोर्वाच्यलिङ्गकम् ॥९३॥
 दुग्धिकाक्षीरकाकोल्याः स्वर्णक्षीर्यामपि स्त्रियाम् ।
 पारुष्यं परुषत्वे च दुर्वाक्ये पुंसि गीघ्यतौ ॥९४॥
 पानीयन्तु जले क्लीवं पातव्ये वाच्यनिङ्गकम् ।
 पैलस्यस्तु कुबेरे स्याद् दशग्रीवेऽपि पुंस्ययम् ॥९५॥
 वलयः कण्ठरोगे ना कटके पुन्नपुंसकम् ।
 ब्रह्मण्यः स्याद् ब्रह्मसाधुब्रह्मदारुशणैश्वरे ॥९६॥
 बालियो गर्हभे पुंसि मृदौ बालहिते त्रिषु ।
 ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे च समूहे च द्विजन्मानाम् ॥९७॥
 भुवन्युः स्यात्पुमान् भानौ ज्वलने गगनाञ्जने ।
 भुजिष्यस्तु सतन्त्रे च हस्तहृत्कदानयोः ॥९८॥

स्त्रियां दासी गणिकयो र्मलयः पर्वतान्तरे ।
 शैलांशे देश आरामे त्रिवृतांयान्तु योषिति ॥६८॥
 मङ्गल्यः स्यात् त्रायमाणाश्चत्यत्रिल्वमस्तरके ।
 स्त्रियां शम्यामधः पुष्पीमिसीशुकुवचासु च ॥१००॥
 रोचनायामथोद्धि क्लीवं शिवकरे त्रिपु ।
 नृगयुः पुंसि गोमायौ व्याधे च परमेष्ठिनि ॥१०१॥
 रघुस्या स्त्री नदीभेदे गोपनीयेऽभिधेयवत् ।
 नौहित्यं लोहितत्वे च क्लीवं पुंसि नदान्तरे ॥१०२॥
 वदान्यो दानशौण्डे च चारुवादिनि वाच्यवत् ।
 व्यवायः सुरतेऽन्तर्द्धौ पुंसि क्लीवन्तु तेजसि ॥१०३॥
 वक्तव्यं कुत्सिते क्षीने वचनार्धे तु वाच्यवत् ।
 विजयः स्याज् जये पार्थे स्त्रियां तिथ्यन्तरे स्मृता ॥१०४॥
 उमासख्यां विस्तयः स्यादाश्चर्य्यगर्बयोः पुमान् ।
 विनया तु बलायां स्त्री शिक्षायां प्रणतौ पुमान् ॥१०५॥
 विपद्यो गोचरे देशे तथा जनपदेऽपि च ।
 प्रबन्धाद् यस्य यो ज्ञात स्तत्र रूपाटिके पुमान् ॥१०६॥
 विशल्याऽग्निशिखादन्ती गुडूची त्रिपुटासु च ।
 श्वशुर्य्यो देवरे श्यान्ते शाण्डिल्यः पावकान्तरे ॥१०७॥
 मुनिभेदे च मालूरे शान्तेयः स्यात् मिमौ पुमान् ।
 त्रिपु शाल्युद्भवे क्षेत्रे स्यात् शीर्षण्यन्तु शीर्षके ॥१०८॥

सुकेशे पुंसि शैलेयं तालपर्ण्याञ्च सैन्धवे ।
 शैलजे ना तु मधुपे शिलातुल्येऽन्यलिङ्गकम् ॥१०९॥
 संस्थायः सन्निवेशे च संस्थाने विसृतावपि ।
 सन्नयः समवाये स्यात् पृष्ठस्थायि वले पुमान् ॥११०॥
 समयः शपथाचारसिद्धान्तेषु तथा धियि ।
 क्रियाकारे च निर्दिशे सङ्केते कालभाषयोः ॥१११॥
 सरण्यु स्तुपुमान् वारिवाहे स्यान् मातरिश्वनि ।
 सामर्थ्यं योग्यतायां स्यात् शक्तावपि नपुसकम् ॥११२॥
 सौरभ्यन्तु मनोज्ञत्वे सौगन्धे गुणगौरवे ।
 सौभाग्यं सुभगत्वे स्याद् योगभेदे नपुसकम् ॥११३॥
 क्षिरण्यं रेतसि द्रव्ये शानकुम्भवराटयोः ।
 अक्षये मानभेदे स्यादकुप्ये च नपुसकम् ॥११४॥
 हृदयं मानसे बुक्कारसोरपि नपुसकम् ।

यचतुष्कम् ।

भवेदनुशयो द्वेषे पश्चात्तापानुबन्धयोः ॥११५॥
 अवश्याय स्तु नीहारेऽप्यभिमानेऽपि पुस्ययम् ।
 अथावसायः शेषे स्वात्समाप्तौ निश्चयेऽपि च ॥११६॥
 अपसव्यं त्रिलिङ्गन्तु दक्षिणप्रतिकूलयोः ।
 अन्तश्चान्ता मृतौ भूमिशय्यायां पितृकानने ॥११७॥

उपकार्या राजसद्मन्युपकारोचितेऽन्यवत् ।

जलाशयो जलाधारे स्यादुशीरे नपुसकम् ॥११८॥

तण्डुनीयः शाकभेदे विडङ्गतस्ताप्ययोः ।

दण्डन्यं मन्त्रिकायां तथा स्यात्केतकीफले ॥११९॥

दाक्षिणात्यो नारिकेले त्रिषु दक्षिणदिग्भवे ।

धनञ्जयोऽर्जुने वङ्गिनागभिद्देहमारुते ॥१२०॥

निरामयस्तु पुंसि स्यादिडिके त्रिषु नीरुजि ।

परिधायो जनस्थाने परिच्छेद नितम्बयोः ॥१२१॥

प्रतिश्रयः सभायाञ्चाश्रये प्रतिभयं भये ।

घोरेऽपि पाञ्चजन्यं विष्णुशङ्खे ऊताशने ॥१२२॥

प्रावृषेण्यः पुमान् नीपे प्रावृट्कालभवे त्रिषु ।

पौरुषेयः कृते पुंसां विकारे पुरुषस्य च ॥१२३॥

त्रिषु ना सङ्खवधयोः पुरुषस्य पदान्तरे ।

फलोदयः पुमान् लाभे त्रिदेवे शालयेऽपि च ॥१२४॥

भागधेयं मतं भाग्येभागप्रत्याययोः पुमान् ।

महालयो विहारे स्यात् तीर्थे च परमात्मनि ॥१२५॥

महोदयः काण्यकुञ्जे चाधिपत्यापवर्गयोः ।

महामूल्यः पद्मरागे ना महार्थेऽन्यलिङ्गकः ॥१२६॥

मार्ज्जारीयः स्मृतः शूद्रे विडाले कायशोधने ।

रौहिणेयोऽन्यवद् वत्से ना बुधे च हलायुधे ॥१२७॥

विलेशयस्तु पुलिङ्गा मूपिके च भुजङ्गमे ।
 वैतनेयस्तु गरुडे स्यात्प्रभाकरसारथौ ॥१२८॥
 सम्पगायः समीके स्यादापदुत्तरकालयो ।
 समाङ्गयस्तु पशुभिः खगैर्द्युते च सङ्गरे ॥१२९॥
 भवेत्समुद्रयः सङ्घे सङ्गमे च समुद्रमे ।
 समुदायः समूहे स्याद् युद्धे समुच्छ्रयः पुमान् ॥१३०॥
 विरोधात्सेधयोः स्थलोच्चयोगण्डोपलेऽपि च ।
 गजानां मध्यमगतेऽप्यसाकल्यवण्डयोः ॥१३१॥
 हिरण्मयः सुरज्येष्ठे ना सुवर्णमये त्रिषु ।

यपञ्चकम् ।

कालानुसार्यं शलेये कालीये शिंशपाद्रुमे ॥१३२॥
 दुग्धतालीयमित्येत् दुग्धाम्रक्षीरफेणयोः ।
 अथ प्रवचनीयञ्च स्यात् प्रवक्तृप्रवाच्ययोः ॥१३३॥
 वृषाकपायी श्रीगौरीवरो जीवन्तिकासु च ।

यपङ्कम् ।

प्रत्युद्गमनीयमुपस्थेये धौतांशुकद्वये ॥१३४॥
 विश्वक्सेनप्रिया लक्ष्यां वाराह्यामपि योषिति ।

यान्तवर्गः समाप्तः ।

रैककम् ।

रः स्मृतः पावके तोक्षणे राः पुंसि स्वर्णवित्तयोः ।

श्रीर्वेशरचनाशोभा भारतीसरलद्रुमे ॥१॥

लक्ष्मणां त्रिवर्गसम्पत्तिविधौपकरणेषु च ।

विभूतौ च मतौ च स्त्री स्रः स्त्रियां निज्जरे स्रवे ॥२॥

रद्विकम् ।

अरं शीघ्रे च चक्राङ्गेशीघ्रगे पुनरन्यवत् ।

अग्रं पुरस्तादुपरि परिमाणे पलस्य च ॥३॥

आलम्बने समूहे च प्रान्ते च स्यान् नपुंसकम् ।

अधिके च प्रधाने च प्रथमे चाभिधेयवत् ॥४॥

अस्रः कोणे कचे पुंसि स्त्रीवमश्रुणि शोणिने ।

अस्त्रं प्रहरणे चापे करवाले नपुंसकम् ॥५॥

अभ्रं मेघे च गगने धातुभेदे च काञ्चने ।

अद्रिः शैलद्रुमार्के ना अथाङ्घ्रिर्ना पादमूलयोः ॥६॥

आरा चर्माप्रभेदिन्यां पुंसि भौमेशनैश्वरे ।

आर्द्रा नक्षत्रभेदे स्यात् स्त्रियां क्लिन्नेऽभिधेयवत् ॥७॥

आरुः पुंसि तरो भेदे तथा कर्कटदंष्ट्रिणोः ।

इन्द्रः शक्रादित्यभेदे योगभेदान्तरात्मनि ॥८॥

इन्द्रा फणिवज्रके स्त्री स्यादिरा भूवाक् सुरास्युषु ।

उग्रः शृङ्गासुते क्षत्राद् रुद्रे पुंसि त्रिपुत्कटे ॥९॥

स्त्री वचात्तुद्रयो रुद्रो कर्कश्या करभे पुमान् ।
 उस्रो वृषे च किण्णेऽप्युखाऽर्जुन्युपचित्रयोः ॥१०॥
 ऐन्द्रिः काके जयन्ते नाऽथौद्राः पुंभूम्नि नीवृति ।
 ओद्रस्तु तरुभेदे स्यात्त्तरं नीरे चरोऽम्बुदे ॥११॥
 करो वर्षोपले रश्मौ पाणौ प्रत्यायशुण्डयोः ।
 कद्रुस्त्रिपु स्वर्णपिङ्गे नागाना मातरि स्त्रियाम् ॥१२॥
 करो वधे निश्चये च बलौ यत्ने यतावपि ।
 तुपारशैलेऽपि पुमान् स्त्रिया दूत्या प्रसेवके ॥१३॥
 सुवर्णकारिकायाञ्च बन्धनागारबन्धयोः ।
 चारो रसान्तरे धूर्त्ते लवणे काचभस्मनाः ॥१४॥
 कारिः स्त्रिया क्रियायां स्याद्वाच्यलिङ्गस्तु शिल्पिनि
 कारु विश्वकर्माणि ना त्रिपु कारकशिल्पिनाः ॥१५॥
 चीर दुग्धे जले कीरः शुके पुंभूम्नि नीवृति ।
 कुरुर्नृपान्तरे भक्ते पुमान् पुंभूम्नि नीवृति ॥१६॥
 क्षुद्र. स्यादधमक्रूरकृपणान्पिषु वाच्यवत् ।
 क्षुद्रा व्यङ्गानटीकण्टकारिकासरघासु च ॥१७॥
 चाङ्गेरी वेश्ययोर्धिंस्वामलिकामानयोरपि ।
 क्षुर. स्याच्च क्खेदनद्रव्ये कोकिलाक्षे च गोक्षुरे ॥१८॥
 क्रूरस्तु कटिने घोरं नृगसेऽप्यभिधेयवत् ।
 कृष्णमार्यातमाभिले पापसान्तपनादिनाः ॥१९॥

क्षेत्रं शरीरे केदारो सिद्धस्यानकलत्रयोः ।

क्रोद्धी शृगालिकाकृष्णविदारी लाङ्गलीपु च ॥२०॥

क्षौद्रं मधुनि पानीये खरः स्यात् तीक्ष्णघर्मयोः ।

गर्दभे स्त्री देवताङ्गे खरुर्दुर्घे चरे ह्ये ॥२१॥

दन्ते पुंसि त्रिषु श्वेते खुरः कोलदले शफे ।

गरी खरायां करणे क्लीवं नोपविषे विषे ॥२२॥

गात्रं गजाग्रजङ्घादिभागेऽप्यङ्गे कलेवरे ।

गोः स्त्री भापासरस्त्रयो गिरिर्ना नेत्ररुग्भिदि ॥२३॥

अद्वै गिरियके योपिद् गीर्णो पूज्ये पुनस्त्रिषु ।

गुह्र स्तेजनके स्त्री तु प्रियङ्गौ भद्रमुस्तके ॥२४॥

गुह्र स्त्रिलिङ्गां महति दुर्जरानुघुनोरपि ।

पुमान्निषेकादिकरे पित्रादौ सुरमन्त्रिणि ॥२५॥

गृध्रः खगान्तरे पुंसि वाच्यलिङ्गोऽथ लुब्धके ।

गोत्रा भृगव्ययोर्गोत्रः शैले गोत्रं कुलाख्ययोः ॥२६॥

सम्भावनीयबोधे च काननच्छत्रवर्त्मसु ।

गौरः श्वेतेऽरुणे पीति विशुद्धे चाभिधेयवत् ॥२७॥

ना श्वेतसर्पपे चन्द्रे न हयोः पद्मकेशरे ।

गौरो त्वसञ्जातरजः कन्या शङ्करभार्ययोः ॥२८॥

रोचनी रजनी पिङ्गा प्रियङ्गुवसुधासु च ।

आपगाया विगेषे च यादसां पतियोपिति ॥२९॥

घमस्तु दिवसे हिंसे घोरौ भीमे चरेऽपि च ।
 चरोऽक्षयूतभेदे च भौमे चारे त्रसे चले ॥३०॥
 चन्द्र. कर्पूरकाम्बिकसुधांशुखर्णवारिषु ।
 चक्रः कोके पुमान् क्लीवं ब्रजे सैन्यरथाङ्गयो ॥३१॥
 गच्छे दन्मान्तरे कुम्भकारोपकरणास्त्रयोः ।
 जलावर्त्तेऽप्यथ चरुः पुमान् हव्यान्नभाण्डयोः ॥३२॥
 चारः पियालवृत्ते स्याद् गतौ वन्धापसर्पयोः ।
 चारु वृद्धस्यतौ पुंसि शोभने त्वभिधेयवत् ॥३३॥
 चित्राऽऽखुपर्णी गोडुग्ना सुभद्रादन्तिकास्तु च ।
 मायायां सर्पनजत्रनदीभेदेषु च स्त्रियाम् ॥३४॥
 तिलकालेरययोः क्लीवं कर्बुराङ्गुतयोरपि ।
 तद्युक्तयो स्वन्यलिङ्गं चीरी झिल्यां नपुंसकम् ॥३५॥
 गोस्तने वल्लभेदे च रेखालिखनभेदयोः ।
 चुक्र वृत्ताम्बे चाङ्गेर्यां स्त्री पुंस्यम्बेऽम्बवेतसे ॥३६॥
 चैत्र मृतदेवकुले ना भूभुग्नासभेदयोः ।
 चौरः पाटचरेऽपि स्यात् चौरपुष्पौषधावपि ॥३७॥
 क्वा मिपावतिच्छत्रे कुस्तुम्बुरुगिनीन्धयोः ।
 नपुंसकञ्चानपत्रे हिद्रं दूषणरन्ध्रयोः ॥३८॥
 जारी स्यादोपधीभेदे स्त्रियामुपपत्तौ पुमान् ।
 जोरस्तु, जरणे सङ्गे टागे लङ्गतुरङ्गयो ॥३९॥

तरस्तु तरणे पुंसि कृशानौ पेटके तरी ।
 तन्त्रं कुटुम्बकत्वे स्यात् सिद्धान्ते चौपधोत्तमे ॥४०॥
 प्रधाने तन्तुवाये च शास्त्रभेदे परिच्छेदे ।
 श्रुतिशाखान्तरे हेतावुभयार्थप्रयोजके ॥४१॥
 इति कर्त्तव्यतायाञ्च तन्त्री वीणागुणे मता ।
 अमृतादेश्शिरयोस्तन्त्री निद्राप्रमीलयोः ॥४२॥
 तारो वानरभिन्मुक्ताविशुद्धोः शुद्धमौक्तिके ।
 नानक्षत्रेऽस्तिमध्ये च न ना रूष्ये नपुंसकम् ॥४३॥
 स्त्री बुद्धदेवताभेदे वालिगीष्यतिभार्ययोः ।
 त्रिलिङ्गेऽत्युच्चशब्दे च ताम्रं गृहत्वेऽरुणेऽपि च ।
 तीव्रातु कटुरोहिण्यां राजिकागण्डदूष्ययोः ।
 त्रिष्वत्युष्णे नितान्ते च कटौ तीरन्तु रोधसि ॥४४॥
 पुंसि त्रपुणि तोत्रन्तु प्राजने वेणुकेऽपि च ।
 द्रोऽस्त्री साध्वसे गर्त्ते कन्दरेतु दरी मता ॥४५॥
 द्राऽव्ययं मनां गर्त्ते दस्रः खरेऽश्विनीसुते ।
 दारुः स्यात्पित्तले काष्ठे देवदारौ नपुंसकम् ॥४६॥
 द्वारं निर्गमनेऽपि स्याद्भ्युपाये धरोगिरौ ।
 कार्पासतलके कूर्मराजे वसन्तरेऽपि च ॥४७॥
 धरा विश्वम्भरायाञ्च स्त्री गर्भाशयमेदसोः ।
 धात्री जनन्यामलकीवसुमत्युपमाहपु ॥४८॥

धारा सैन्याग्रिमस्कन्दे तुरङ्गगतिपञ्चके ।
 घटादिच्छिद्रसन्तत्याः प्रपाते स्याद् द्रवस्य च ॥५०॥
 खङ्गादेर्निशितमुखे धारो यावान्तरेऽप्यृण्णै ।
 धोरो धैर्यान्विते स्वैरं बुधे क्लिवन्तु कुङ्कुमे ॥५१॥
 स्त्रियां प्रवणतुल्यायां नरोऽजे मनुजेऽर्जुने ।
 क्लिवन्तु रामकर्पूरे नक्रं स्यादग्रदारुणि ॥५२॥
 नासायां पुंसि कुम्भीरे नारस्तरुणकनीरयोः ।
 नीत्रं नेमौ वलीकेन्द्रीः रेवतीभेऽपि कानने ॥५३॥
 नेत्रं मथिगुणै वस्त्रभेदे मूले द्रुमस्य च ।
 रथे चक्षुपि नद्याञ्च नेत्री नाद्याञ्च योपिति ॥५४॥
 परः श्रेष्ठारिद्रूरान्योत्तरे क्लिवन्तु केवले ।
 यत्रन्तु वाहने पर्णे स्यात् पक्षे शरपक्षिणोः ॥५५॥
 पार परतटे प्रान्ते नस्त्री पारा नदीभिदि ।
 पारी पूरे च कर्कश्यां पादरज्जौ च दन्तिनः ॥५६॥
 पात्रं स्रुवादौ पर्णे च भाजने राजमन्त्रिणि ।
 तीरद्वयान्तरे योग्ये पुरुः प्राज्येऽभिधेयवत् ॥५७॥
 पुंसि स्याद् देवलोके च नृपभेदपरगयोः ।
 पुर नपुंसकं गेहे देहपाटलिपुत्रयोः ॥५८॥
 पुष्यादीनां दलावृत्तौ ना गुग्गुलौ न ना पुरि ।
 पुण्ड्रौ दैत्यविशेषे च भेदयोरतिमुक्तके ॥५९॥

चित्रे कृमौ पुण्डरीके पुंभृन्नि नीवृदन्तरे ।
 पूरोजलसमूहे स्याद् व्रणसंशुद्धिखाद्ययोः ॥६०॥
 पात्रं वज्रे मुखान्ने च शूकरस्य हलस्य च ।
 पौरं त्रिषु पुरोद्भुते कर्तृणे तु नपुंसकम् ॥६१॥
 वगे जामातरि वृतौ देवतादेरभीषिते ।
 सिङ्गे पुंसि त्रिषु श्रेष्ठे कुङ्कुमे तु नपुंसकम् ॥६२॥
 बरीप्रोक्ता शतावर्थां बरा च स्यात् फलत्रिके ।
 मनागिष्ठे वरं क्लीवे केचिदाङ्गस्तदव्ययम् ॥६३॥
 वभ्रु वैश्यानरे शूलपाणौ च गरुडध्वजे ।
 विशाले नकुले पुंसि पिङ्गले त्वभिधेयवत् ॥६४॥
 वक्रः शणैश्वरे पुंसि पृष्ठभेदे नपुंसकम् ।
 त्रिषु क्रूरे च कुटिले वारः सूर्यादिवासरे ॥६५॥
 द्वारे हरे कुञ्जवृत्ते वृन्दावसरयोः क्षणे ।
 वारी स्याद् गजबन्धन्यां कलस्यामपि योपिति ॥६६॥
 वारि वागजबन्धन्योः स्त्री क्लीवेऽम्बुनि बालके ।
 वीरो रसविशेषे पुंस्युत्तर सुभटे त्रिषु ॥६७॥
 स्त्री सुराक्षीरकाकोलीतामलक्येनवानुके ।
 पतिपुत्रवतीरन्भागम्बारीदुग्धिकासु च ॥६८॥
 मलपूक्षीरविद्यार्थ्याः क्लीवं शृङ्ग्यां नलेऽपि च ।
 भरुः स्वर्णे हरे पुंसि भरोऽतिशयभारयोः ॥६९॥

भद्रः शिवे खञ्जरीटे वृषभे च कदम्बके ।
 करिजातिविशेषे ना क्लीवं मङ्गलमुस्तयोः ॥७०॥
 काञ्चने च स्त्रियां रास्त्राकृष्णाव्यामनदीषु च ।
 तिथिभेदे प्रसारिण्यां कदफलानन्तयोरपि ॥७१॥
 त्रिषु श्रेष्ठे च साधौ स्यान् नपुंसि करणान्तरे ।
 भारः स्याद् वीवधे विष्णौ पत्नानां द्विसहस्रके ॥७२॥
 भीरुरार्त्ते त्रिलिङ्गः स्याद् वरयोपिति योपिति ।
 भूरिर्ना वासुदेवे च हरे च परमेष्ठिनि ॥७३॥
 नपुंसक सुवर्णे च प्राज्ये स्याद् वाच्यलिङ्गकः ।
 मन्त्रो वेदविशेषे स्याद् देवादीनाञ्च साधने ॥७४॥
 गुह्यवादेऽपि च पुमान् मरुर्ना गिरिधन्वनोः ।
 मात्रा कणेषिभूपायां वित्ते माने परिच्छदे ॥७५॥
 अक्षरावयवे स्वल्पे क्लीवं कार्त्स्न्येऽवधारणे ।
 मारो मृत्यौ सग्रे विघ्ने मारी चण्ड्यां जनक्षये ॥७६॥
 नारिः स्त्री मारणे वर्षे मित्र सुहृदि न द्वयोः ।
 सूर्ये पुंसि मुरा गन्धद्रव्ये देत्यान्तरे पुमान् ॥७७॥
 यात्रा तु यापनेऽपि स्याद् गमनोत्सवयोः स्त्रियाम् ।
 रन्ध्रन्तु दूषणे क्लिद्धे राष्ट्रं स्यादुपवर्तने ॥७८॥
 उपद्रवे क्लीवपुंसोः रुरुर्ना मृगदैत्ययोः ।
 रेत्रं रेतसि पीयूषे पटवासे च हतक्रे ॥७९॥

रोध्री ना सावरे क्लीवमपराधे च किल्बिषे ।
 राद्रो घर्मे रसे चण्डां स्त्री तीधे भोषणे त्रिपु ॥८०॥
 वज्रं स्याद् बालके धाव्यां क्लीवं योगान्तरे पुमान् ।
 वज्रा स्नुह्यां गुडुच्याञ्च वज्री स्नुह्यन्तरे स्मृता ॥८१॥
 दम्भेलौ क्षीरकेऽप्यस्ती वधं त्रिपुवरत्रयाः ।
 वप्र स्ताने पुमानस्त्री रेणौ क्षेत्रे चये तटे ॥८२॥
 वक्त्रं मुखे वृत्तभेदे व्यथो व्यासक्त आकुले ।
 वाश्रो ना दिवसे क्लीवं मन्दिरे च चतुष्पथे ॥८३॥
 व्याघ्रः स्यात् पुंसि शार्दूले रत्नैरण्ड करञ्जयेः ।
 श्रेष्ठे नराद्युत्तरस्थः कण्टकार्यान्तु योऽपिति ॥८४॥
 वृत्रो रिपौ घने ध्वान्ते शैलभेदे च दानवे ।
 वेरं कलेवरे क्लीवं वार्त्ताकौ कुङ्कुमेऽपि च ॥८५॥
 वेङ्गीस्त्री पणपादे ना गोनसाक्षां ज्ञपान्तरे ।
 शर स्तेजनके वाणे द्ध्यये ना शरं जले ॥८६॥
 शस्त्रं लौहास्त्रयोः क्लीवं कुरिकायान्तु योऽपिति ।
 शक्रः पुमान् देवराजे कुटजाञ्ज्जनभूरुहाः ॥८७॥
 शट्टिर्नाऽभोधरे जिष्णौ शरुर्ना कोपवज्रयोः ।
 शारिर्नाऽक्षोपकरणे स्त्रियां शकुनिकान्तरे ॥८८॥
 युद्धार्थगजपर्याणे व्यवहारान्तरेऽपि च ।
 शारः स्यात् शवले वाच्यनिङ्गः पुंसि समीरणे ॥८९॥

अक्षोपकरणे शास्त्रं न द्वयोरगमाज्ञयोः ।
 शिष्यु नो शाकमात्रे च शोभाञ्जनमहीरुहे ॥६०॥
 शिरो ना पिप्पलीमूले स्याद् धमन्याच्च योऽपिति ।
 शीघ्रं नलदे चक्राङ्गे क्लीवं द्रुतगतौ त्रिषु ॥६१॥
 शूभ्रं स्यादभ्रके क्लीवमुद्दीपशुकुयोऽस्त्रिषु ।
 शुकः स्याद् भार्गवे ज्यैष्ठमासे वैश्वानरे पुमान् ॥६२॥
 रेतोऽज्जिरुग्भिदोः क्लीवं शूरः स्याद् यादवे भटे ।
 स्वरुः पुंसि यूपलण्डे भेदुरेऽप्यधरे शरे ॥६३॥
 सत्र यज्ञे सदादानाच्छादनारण्यकैतवे ।
 सरोदध्ययगत्यो ना स्वरो नासासमीरणे ॥६४॥
 उदात्तादावकारादौ पङ्जादौ च ध्रुनौ पुमान् ।
 सारो बले स्थिरांशे च मज्जि पुंसि जले घने ॥६५॥
 न्याय्यं क्लीवं त्रिषु वरे सान्द्रं वने घने सृष्टौ ।
 स्फारः स्यात् पुंसि विकटे कनकादेश्च बुद्बुदे ॥६६॥
 सिप्रा निदाघसलिले सिप्रा तु सरिदन्तरे ।
 स्थिरा भूगालपर्य्यो ना गनौ मोक्षेऽचले त्रिषु ॥६७॥
 सीरोऽर्कचलयोः पुंसि सुरा चपकमद्ययोः ।
 पलिङ्गं त्तिद्विगेने स्यात् सूत्रं तन्तुव्यवस्ययोः ॥६८॥
 शास्त्रादिसूत्रगायन्त्ये स्वैरः स्वच्छन्दमन्दयोः ।
 त्रिश्चन्द्रार्कवाताशशुकभेकयमादिषु ॥६९॥

कपौ सिंहे हरेऽजेऽशौ शक्रे लोकान्तरे पुमान् ।
 वाच्यवत्पिङ्गहरितो हारो मुक्तावली युधि ॥२०॥
 चारिः पथिकसन्तानयूतादिभङ्गयोः स्त्रियाम् ।
 हिंसा त्वेलावलीमांस्योः स्त्रिया स्याद् धातुकेऽन्यवत् ॥
 हीरा तैलाम्बुकालक्ष्म्याः पुंसि शङ्करवज्रयोः ।
 होरा लग्नेऽपि राश्वर्द्धे रेखाशास्त्रभिदोरपि ॥२०२॥

रत्रिकम् ।

अमर स्त्रिदशेऽप्यस्यसंचारे कुलिशद्रुमे ।
 स्त्री गुडुच्यमरावत्योः स्यूणादूर्वाजरायुषु ॥२०३॥
 अपरं गजपथाद्धे स्याज जरायौ तु योपिति ।
 इतरस्त्रिन्नपि तथाऽर्वाचीनेऽप्यन्यनिङ्गकम् ॥२०४॥
 अधरस्तु पुमानेऽष्टे चीनेऽनूर्द्धे तु वाच्यवत् ।
 अध्वरः सावधाने स्याद् वसुभेदे क्रतौ पमान् ॥२०५॥
 अन्तरमवकाशावधि परिधानान्तर्द्धिभेदतांदर्थ्ये ।
 क्त्रिद्रात्मीयविनावधिरवसरमध्यात्मसदृशेषु ॥२०६॥
 अवरं गजान्त्यजह्वादिदेगे चरमे त्रिषु ।
 अम्वरं नदयोर्वास्त्रि सुगन्ध्यन्तरवस्तयोः ॥२०७॥
 अङ्गारमुल्मुके न स्त्रीपुनिङ्गस्तु महीसुते ।
 अङ्कुरो रुधिरं नेऽस्त्रि पानीयेऽभिमवाङ्गिदि ॥२०८॥

अजिर प्राङ्गणे वाने विषये द्दुरे तनौ ।
 स्त्री चण्डग्रामक्षर ब्रह्मवर्णयोः पुंसि शङ्करे ॥१०६॥
 अशिरो वीतिक्षेत्रे स्याद् राक्षसे भास्करे पुमान् ।
 अण्डोरः पुरुषे शक्तेऽरर क्दकपाटयोः ॥११०॥
 अवीराऽपतिपुत्राया स्त्री सत्त्वगहिते त्रिषु ।
 अगुरुक्तीवजोङ्गकाशशपयो वाच्यवन्लघुनि ॥१११॥
 असुरा रजनीराश्वोरसुरो देवारिभास्करयोः ।
 आकरो निवहोत्पत्तिस्थानश्रेष्ठेषु कथ्यते ॥११२॥
 आधारश्चाधिकरणेऽप्यालवालेऽम्बुधारणे ।
 आसार स्यात् प्रसरणे वेगवृष्टौ सुहृदले ॥११३॥
 आहारः स्यादाहरणे भोजने च पुमानयम् ।
 आशरस्तु पुमान् वैश्वानरे च रजनीचरे ॥११४॥
 आकार इङ्गिताकृत्योरितरोऽन्यत्र पामरे ।
 इत्वर्यसत्या पथिके क्रूरकर्माणि च त्रिषु ॥११५॥
 ईश्वरो मन्मथे शम्भौ नाऽऽद्ये स्वामिनि वाच्यवन्त ।
 ईश्वरी चेश्वरोमायामुदर जठरे युधि ॥११६॥
 उदारो दाहमक्षतो र्दक्षिणे चाभिधेयवन्त ।
 उर्वरा सर्वशस्याद्यभूमौ स्याद् भूमिमात्रके ॥११७॥
 उत्तरा दिग्विशेषे च स्तुपायामर्जुनस्य च ।
 विराटस्य सुते ना स्याद्दूर्वादीद्योत्तमे त्रिषु ॥११८॥

नपुंसकं प्रतिवाक्येऽथोद्धार श्लोद्धृतावृणौ ।
 ऋक्षरं वारिधारायानृक्षरश्चर्त्विजि स्मृतः ॥११८॥
 एकाग्रमन्यलिङ्गं स्यादेकतानेऽप्यनाकुले ।
 औशीरं शयनासनचामरदण्डेऽप्युशीरजेप्रोक्तम् ॥११९॥
 क्रकुरः करीरवृक्षे दीने क्रकचे च पक्षिभेदे च ।
 कदरः श्वेतखदिरे क्रकचव्याधिभेदयोः ॥१२०॥
 कर्बुरसलिले हेम्नि कर्बुरः पापरक्षसेः ।
 कर्बुगो कृष्णवृन्ताया श्वले पुनरन्यवत् ॥१२१॥
 कर्परः स्यात् कपाले च शस्त्रभेदकटाक्षयोः ।
 कन्धरो वारिवाचे स्याद् शीवायां कन्धरा मता ॥१२२॥
 कर्बुरः कथितो व्याघ्रे शिवायामपि कर्बुरी ।
 कञ्जगो जठरे सूर्ये विरिञ्चौ वारणे मुनौ ॥१२३॥
 करीरो वंशाङ्गुरेऽस्त्री वृक्षभिद् घटयोः पुमान् ।
 कगीरी चीम्बिकायाश्च दन्तमूले च दन्तिनाम् ॥१२४॥
 कटिन्नं रसनायाश्च चर्माङ्गे कटिवाससि ।
 कक्षुरा गृकशिम्ब्याश्च शटीदुष्यर्शयोरपि ॥१२५॥
 कक्षुरः पृथले कक्षुयुक्ते च कवरो पुनः ।
 पृथ्योत्तुङ्गाः केशवेशे कवरं लवणाम्बयोः ॥१२६॥
 कर्ब्य्युमायां ना रक्षःपापयो र्भेषजान्तरे ।
 कर्मारो जातिभेदे च त्वचिसारे च ॥१२७॥

कणेरुः कर्णिकारे च करिणोवेश्ययोः स्त्रियाम् ।

कच्चरं कुत्सिते वाच्यलिङ्गं तर्कं नपुंसकम् ॥१२८॥

कर्करो भाण्डभेदे नादपणे कठिने त्रिषु ।

कडारः पिङ्गले दासे कलत्रं श्रेणिभाष्ययोः ॥१३०॥

दुर्गस्थाने नृपादीनां कटप्रूः पुंसि राक्षसे ।

विद्याधरे मन्दादेवे तथा स्यादक्ष देवते ॥१३१॥

कन्दर स्वङ्कुशे पुंसि गुहायां नपुंसकम् ।

कर्बूरः स्यात् पुमान् शय्यां सुवर्णे तु नपुंसकम् ॥१३२॥

काशीरं कुङ्कुमे ऽपि स्यात् टङ्कपृष्करमूलयोः ।

कावेरी स्यात् सरिङ्गदे पण्यनारी चरिद्रयो ॥१३३॥

कान्तारी ऽस्त्री मन्धारण्ये धिले दुर्गमवर्त्मनि ।

पुंसि स्यादिक्षु भेदे ऽथ किशोरो ऽथस्य शावके ॥१३४॥

तैलपण्ये पधौ च स्यात् तरुणावस्यसूर्ययोः ।

किर्मीरो नागरङ्गे च कर्बुरे राक्षसान्तरे ॥१३५॥

किंशासु नाशस्य शूके विशिखे कङ्कपक्षिणि ।

कुहर गङ्गरे क्विद्रे क्वीव नागान्तरे पुमान् ॥१३६॥

कुकुरः सारमेये नाग्रन्थिपर्णे नपुंसकम् ।

कुर्परः स्यात्कफोणौ च जानुन्यपि च पुंस्ययम् ॥१३७॥

कुञ्जरो ऽनेकपे केगे स्त्री धातक्याञ्च पाटलौ ।

कुमारः स्यात् शूके स्कन्दे युवराजे ऽथचारके ॥१३८॥

बालक्रे वरुणद्रौ ना न द्वयोर्जात्यकाञ्चने ।
 कुमारी शैलतनया नवमात्योर्नदीभिदि ॥१३६॥
 सहाऽपराजिता कन्या जम्बूद्वीपेषु च स्त्रियाम् ।
 कुठारुर्ना द्रुमे कीशे कुट्टारं केवले रते ॥१४०॥
 कुवेरः स्यात्पुंसि नन्दीवृक्षे पुण्यजनैश्वरे ।
 कूवरस्त्रियु चारौ ना कुजके स्त्री युगन्धरे ॥१४१॥
 केशरं हिङ्गुले क्लीवं किञ्चुक्के न स्त्रियं पुमान् ।
 सिंहसटायां पुत्रागे वकुले नागकेशरे ॥१४२॥
 केदारोऽद्रौ शिवे क्षेत्रे भूमिभेदालवान्तयोः ।
 केनारः कुम्भिनरके शिरः कपोलसन्धिषु ॥१४३॥
 कोटिरः पुंसि नकुले शत्रुगोपकशक्रयोः ।
 कोट्टारो नागरे कूपे पुष्करिण्याथ पाटके ॥१४४॥
 खपरः क्रमुके भद्रमुस्तके कलसेऽपि च ।
 खपरस्तस्करे धूर्त्ते भिक्षाभाण्डकपालयोः ॥१४५॥
 खर्जूरं रूप्यखलयो वृश्चिके ना द्रुमे द्वयोः ।
 खद्विरी शाकभेदे स्त्री ना चन्द्रे दन्तधावने ॥१४६॥
 खण्डाभ्रमभ्रलेशे स्यात् तथा दन्ताक्षतान्तरे ।
 खिङ्गिरस्तु शिवाभेदे खट्वाङ्गे वारिवान्तके ॥१४७॥
 गणेरुः कणिकाराद्रौ करिणी वैश्वयोः स्त्रियाम् ।
 गर्गरे मोनभेदे स्त्री मन्यन्यामथ गङ्गरम् ॥१४८॥

गुहागहनदम्भेषु निकुञ्जे तु पुमानयम् ।
 गान्धारः पुंसि सिन्दुरे रागदेशप्रभेदयोः ॥१४६॥
 गायत्री त्रिपदादेवोच्छन्दाभित् खदिरेषु च ।
 गोपुरं द्वारि पूर्व्वारि कैवर्त्तीमुस्तकेऽपि च ॥१५०॥
 घर्घरो ना चलद्वारि ध्वानेलूक नदान्तरे ।
 स्त्री क्षुद्रघण्ट्यां वीणाया भेदे स्वरान्तरे त्रिषु ॥१५१॥
 चमरं चामरे स्त्री तु मञ्जरी मृगभेदयो ।
 चन्द्रिरोऽनेकपे चन्द्रे चत्वरं स्थण्डिलेऽङ्गने ॥१५२॥
 चङ्कुरः स्याद् रथे वृक्षे चातुरो नेत्रगोत्ररे ।
 चाटुकारि नियन्त्रोश्च त्रिषु दाक्ष्ये तु चांतुरी ॥१५३॥
 चक्रगण्डौ च पुंसि स्यात् चामरं चमराऽपि च ।
 दण्डे च बालव्यजने चिकुर स्तरलागासौः ॥१५४॥
 पत्तिवृक्षभिदोः केशे गृहवभ्रौ सरीसृपे ।
 क्खिदिरः पावके रज्जौ करवाले परश्वधे ॥१५५॥
 क्खिदुरश्चेदनद्रव्ये धूर्त्ते वैरिणि च त्रिषु ।
 जंठरो न स्त्रियां कुक्षौ वृद्धकर्कटयोस्त्रिषु ॥१५६॥
 जर्जरः शैवले शक्रध्वजे त्रिषु जरातुरे ।
 जम्बीरः प्रस्थपुष्पे स्यात् तथा दन्तशठद्रुमे ॥१५७॥
 जलेन्द्रः पुंसि वरुणे जम्भले च मद्योद्घौ ।
 झर्जरः स्यात् कलियुगे वाद्यभाण्डे नदान्तरे ॥१५८॥

अक्षरी अक्षरो च हे ऊडुक्के बालचक्रके ।

टट्टरी स्यान् मृपावादे लम्पापट्टवाद्ययोः ॥१५८॥

टड्डारो विस्मये पुंसि प्रसिद्धौ सिञ्जिनीध्वनौ ।

टगरट्टड्डणचारै हेलाविभ्रमगोचरे ॥१६०॥

नाऽन्यवत् केकराक्षे स्याद् डिङ्गरो उङ्गरेऽपि च ।

क्षेपे तमिस्रं तिमिरं कोपे स्त्री तु तमस्तनौ ॥१६१॥

क्षणपक्षनिशायाञ्च त्वक्पत्रन्तु वराङ्गके ।

स्त्री कारव्याञ्च तिमिरं ध्वान्ते नेत्रामयान्तरे ॥१६२॥

तीवरो नाम्नुधौ व्याधे तुम्बुरी कुक्कुरस्त्रियाम् ।

धन्याकेऽपि तुपारस्तु शीतले शीकरे क्षिमे ॥१६३॥

तुवरस्तु कपाये स्यात् काच्याढक्योस्तु वर्त्यपि ।

त्ववरो, श्मश्रुपुरुषेऽप्रौढशृङ्गगवेऽपि च ॥१६४॥

पुरुषव्यञ्जनत्यक्ते स्यात् कपायरसेऽपि च ।

दहरी श्वातरि स्वल्पे भृपिकायाञ्च बालके ॥१६५॥

दन्तुरस्त्रन्नतरदे तथोन्नतानते त्रिपु ।

दर्हरः पर्वते पुंसि त्रिष्वीपद् भयभाजने ॥१६६॥

दर्दुर स्तोयदे भेके वाद्यभाण्डाद्भिभेदयोः ।

दर्दुराचण्डिकायां स्याद् ग्रामजालेनपुंसकम् ॥१६७॥

दण्डारो वहने मत्तवारणे शरयन्तके ।

कम्भकारस्य चक्रे च द्वापरः संशये युगे ॥१६८॥

दासेरो दासिकापत्ये त्रिषु पुंसि क्रमेलके ।
 दुर्द्धरः पुंसि नरकान्तरे स्वादपभौपधे ॥१६९॥
 दैत्यारिः पुंसि सप्रमान्यदेवे च गरुडधुजे ।
 धूसरी किन्नरीभेदे ना खरे त्रिषु पाण्डुरे ॥१७०॥
 नरेन्द्रस्तु महीपालं विषवैद्ये च पुंस्ययम् ।
 नर्मरा तु दरीभस्ता सरला निष्कलास्तु च ॥१७१॥
 नागरं मुस्तके शुण्यां विदग्धे नगरोद्भवे ।
 निकरो निवहे सारे न्यायदेयधनेनिधौ ॥१७२॥
 निर्जरः स्यात् पुमान् देवे जरात्यक्ते तु वाच्यवत् ।
 निर्जरा तु गुडुच्याञ्च तालपर्ण्यामपि स्त्रियाम् ॥१७३॥
 निर्जरस्तु सहस्रांशुर्तुरङ्गे तुषपावके ।
 निकारस्यात् परिभवे धान्यस्योत्क्षेपणंऽपि च ॥१७४॥
 निर्हरं निर्भरं सारेऽन्यवत्तु कठिनेऽत्रपे ।
 स्यान्नीवरो वाणिजके वास्तव्ये च पुमानयम् ॥१७५॥
 प्रवरं सन्ततौ गोत्रे क्लीव श्रेष्ठे तु वाच्यवत् ।
 प्रखरं हयसन्नाहे कुकुरेऽश्वतरेऽपि च ॥१७६॥
 पुंसि त्रिष्वत्यन्तखरो पवित्रं वर्षणे कुशे ।
 ताम्रे पयसि च क्लीवं मेघे स्यादभिधेयवत् ॥१७७॥
 प्रदरो रोगभेदे स्याद् विदारं शरभङ्गयोः ।
 प्रकरः स्यात् पुमान् सङ्घे विकीर्णकुसुमादिषु ॥१७८॥

मकरो यादसेभेदे निधिराशिप्रभेदयोः ।
 मयूरो वर्द्धिचूडायामपामार्गे शिखण्डनि ॥१८८॥
 महेन्द्रः पर्वते शक्रे मधुद्रौऽलौ च कामुके ।
 मन्दुरा वाजिशालायां शयनीयार्थवस्तुनि ॥२००॥
 महरामसुरा वा ना वैश्यात्रीहिप्रभेदयोः ।
 महरी पापरोगे स्यादुपधाने पुनः पुमान् ॥२०१॥
 मर्मरौ वस्त्रपर्णादि स्वने स्त्री पीतदारुणि ।
 मञ्जरी तिलकद्रुमुक्तयो र्वम्बरौ द्वयोः ॥२०२॥
 मकुरः स्यात् मुकुरवद् दर्पणे वकुलद्रुमे ।
 कुलालदण्डे माठरो व्यासेऽर्कपारिपार्थिके ॥२०३॥
 मार्जारं श्रोतौ खट्वाशे मिहिरः सूर्यवृद्धयोः ।
 मुद्गरं कल्लिकाभेदे पुंसि लोघ्रादिभेदने ॥२०४॥
 मुदिरः कामुके मेघे मुहिरः काममूर्खयोः ।
 मुर्मुरं सुपवङ्गौ स्यान् मनाये रघिवाजिनि ॥२०५॥
 मृगारि स्यात् पुंसि कण्ठीरशार्दूलयोरपि ।
 रुधिरौऽङ्गारके पुंसि क्वीवन्तु कुङ्कुमासृजोः ॥२०६॥
 वदरा गृष्टिकार्पास्यो रेलापर्ण्या स्त्रियां पुमान् ।
 कार्पासस्यास्त्रिघ्न वदरी कोलौ क्वीवन्तु तत् फले ॥२०७॥
 वटरः कुक्कुटे वस्त्रे शक्रे च वधिरः पुमान् ।
 किनिधी दस्तिपिप्पल्याः क्वीवेऽब्जिलवणे स्मृतः ॥२०८॥

वर्वरः पामरे केशे चक्रले नीवृदन्तरे ।
 फञ्जिकायां पुमान् शाकभेदेपुष्पभिदोः स्त्रियाम् ॥२०९॥
 वर्करः परिहासे स्यात् ऋगे युवपशावपि ।
 वल्लुरं स्याद् वनक्षेत्रे गहनोपरयोरपि ॥२१०॥
 बल्लुरा त्रिषु संशुष्कमांसशूकरमांसयोः ।
 वार्हरं कृष्णलावीजदक्षिणावर्त्तशङ्कयोः ॥२११॥
 नीरे च काकचिच्चायां भारत्याञ्च नपु सकम् ।
 वागरस्तुगतातङ्के मुमुक्षौ वातवेष्टके ॥२१२॥
 विशारदे विषाणेऽपि निर्णये वारकेऽपि च ।
 वासरस्तु पुमान् नागविशेषे दिवसेऽस्त्रियाम् ॥२१३॥
 वासुरा वासितायां स्याद् वासतेयभृवि स्त्रियाम् ।
 विष्टरः कुशमुष्टौ स्यादासने च महीरुहे ॥२१४॥
 विस्तरो वाक्प्रपञ्चे स्याद् विस्तारे प्रणयेऽपि च ।
 विदुरो नागरे धीरे कौरवाणाञ्च मन्त्रिणि ॥२१५॥
 विधुरं स्यात् प्रविश्लेषे न द्वयोर्विकले त्रिषु ।
 रसालायां स्त्रीविदारी जलोच्छ्वासाजिदारणे ॥२१६॥
 विदारी शालपर्ण्याञ्च रोगभेदेक्षुगन्धयोः ।
 विवरं दूपणे गर्त्ते विसरः प्रसरे व्रजे ॥२१७॥
 विस्तारो विस्तृतौ स्तम्भे विकारो विकृतौ रुजि ।
 विहारो भ्रमणे स्तम्भे लीलायां सुगतान्तये ॥२१८॥

शबरो म्लेच्छभेदे च पानीये शङ्करेऽपि च ।
 शम्बरं सलिले पुंसि मृगदैत्यविशेषयोः ॥२१६॥
 शम्बरो चाखुपर्ण्यां स्यात् शर्वरो यामिनीस्तियोः ।
 शर्करा खण्डविकृतावुपलाकर्परांशयोः ॥२२०॥
 शर्करान्वितदेशेऽपि रुग्भेदे सकलेऽपि च ।
 शर्करी कन्दसेभेदे नदी मेखलयोरपि ॥२२१॥
 शणीरं शोणमध्यस्थपुलिने दर्दरोतटे ।
 श्वशुरः पूज्येस्त्री ब्राह्मणं शरीरं देहजेवृषे ॥२२२॥
 शार्करः स्याद् दुग्धफेनशर्करान्वितदेशयोः ।
 शाङ्करस्तु बलीवर्हे कन्देभेदे नपुंसकम् ॥२२३॥
 शार्वरन्वन्धतमसे धातुके भेद्यलिङ्गकम् ।
 शालारं स्याद् हस्तिनखे सोपाने पक्षिपञ्चरे ॥२२४॥
 शावरी शृङ्गशिम्ब्यां स्यात् पुंसि पापापराधयोः ।
 लोभे च शाङ्करिः पुंसि कार्तिकेये गणाधिपे ॥२२५॥
 शिखरोऽस्त्री दुमाग्रेऽद्रिशृङ्गे पुलककक्षयोः ।
 पक्षदाडिमबीजाभमाणिक्यसकलाश्रयोः ॥२२६॥
 शिगिरो ना हिमे नस्त्री षट्भेदे जडे त्रिषु ।
 शिलीन्द्र कन्दलीपुष्पे करके ना असान्तरे ॥२२७॥
 श्रुभेदे स्त्री तु विहगीभेदे गण्डूपदीमृदोः ।
 शीकरं शरले वातघ्नताम्बुकणयोः पुमान् ॥२२८॥

शुपिरं वंश्यादिवाद्ये विवरे च नपुंसकम् ।
 मूषिके ना स्त्रियां नल्यौघधौ रन्धान्विते त्रिषु ॥२२८॥
 शृङ्गारः सुरते नाट्यास्ते च गजमण्डने ।
 नपुंसकं लवङ्गोऽपि नागसम्भवचूर्णयोः ॥२२९॥
 सम्बरो दैत्यहरिणमत्स्यशैलजिनान्तरे ।
 नपुंसकन्तु सलिलवौह्वन्नतविशेषयोः ॥२३०॥
 सङ्कारोऽग्निचटत्कारे सम्मार्ज्जन्यवपुञ्जिते ।
 नवदूषितकन्यायां सङ्कारी पुनरुच्यते ॥२३१॥
 संस्कारः प्रतियत्नेऽनुभवे मानसकर्मणि ।
 संस्तरः प्रस्तरे यज्ञे सङ्गरो युधि चापदि ॥२३२॥
 क्रियाकारे विषे चाङ्गीकारे क्लीवं शमीफले ।
 सम्भारः सम्भृतौ सङ्घे सामुद्रं देहलक्षणे ॥२३३॥
 समुद्रजेऽन्यलिङ्गोऽथ सावित्रः शङ्करे वसौ ।
 सावित्री सत्यवत्यत्नयां ब्रह्मपत्नुः प्रमथोरपि ॥२३४॥
 सिन्दूर स्तरुभेदे स्यात् सिन्दूरं रक्तचूर्णके ।
 सिन्दूरी रोचनारक्तचेलिकाधातकीषु च ॥२३५॥
 सुनारस्तु शुनीस्तन्ये सर्पाण्डकलविङ्कयोः ।
 सुन्दरी तरुभिन्नारीभिटोः स्त्री रुचिरेऽन्यवत् ॥२३६॥
 सैरिन्धो परवेणस्यगिष्यकृत्स्ववशस्तियाम् ।
 वर्णसङ्करसम्भूतस्त्रीमहत्तिकयोरपि ॥२३७॥

सौवीरं काञ्चिके स्रोतोऽञ्जने वदरीफले ।
 ना तु नीवृति हारिद्रं हरिद्रा रञ्जिते त्रिषु ॥२३८॥
 ना नीपवृत्ते द्विण्डीरः फेणवार्त्ताकुपुरुषे ।

रचतुष्कम् ।

अरुष्करो व्रणकृति त्रिषु भस्मातके पुमान् ॥२४०॥
 भवेदभिमरो युद्धे बधे स्वबलसाधसे ।
 अनुत्तरं त्रिषु श्रेष्ठे प्रतिजल्पविवर्जिते ॥२४१॥
 अलङ्कारस्तु हारादावुपमादावलङ्कृतौ ।
 अवहारः पुमान् चौरै द्यूतयुद्धादिवियमे ॥२४२॥
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाक्षयादसि ।
 अवतारोऽवतरणे पुष्करिण्यादितीर्थयोः ॥२४३॥
 अवस्कारोऽपि वर्चस्के गुह्येऽथावसरः पुमान् ।
 प्रस्तावे मन्त्रभेदे च वर्षणे चापि कीर्तितः ॥२४४॥
 उपलादावक्रुपारः कूर्मराजे महेदधौ ।
 असिपत्रः खड्गकोपे पुमानिज्ञौ च नारके ॥२४५॥
 भवेदश्वतरो वेगसरो नागान्तरोऽपि च ।
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये सन्नहनेऽपि च ॥२४६॥
 अग्निहेतवोऽग्निहविषारङ्गचन्द्रेऽनखसते ।
 गलहस्ते वाणभेदे कृष्णत्रिवृति तु स्त्रियाम् ॥२४७॥

आङ्गुलस्त्रयपक्षसंरम्भे गजगर्जिते ।
 आत्मवीरः प्राणवति श्यालके च विद्रूपके ॥२४८॥
 इन्दीवरं क्वलये शतावर्षान्तु योषिति ।
 उदुम्बरस्तु देहल्यां वृक्षभेदे च पण्डके ॥२४९॥
 कुष्ठभेदेऽपि च पुमान् ताम्बे तु स्यान् नपुंसकम् ।
 उपह्वरं समीपे स्यादेकान्ते च नपुंसकम् ॥२५०॥
 उदन्तुरस्त्रिपुत्तुङ्गे करालोत्कटदण्डयोः ।
 उपकारश्चोपकृतौ विकीर्णकुसुमादिषु ॥२५१॥
 औदुम्बरः आह देवे रोगभेदे नपुंसकम् ।
 अथ कर्मकरो भृत्ये चेतनाजीविनि त्रिषु ॥२५२॥
 कोनागे पुंसि मूर्वायां विम्बिकायामपि स्त्रियाम् ।
 कलिकारस्तु घूम्याटे करञ्जे पीतमस्तके ॥२५३॥
 कर्णिकारः पुमानारम्बधट्टौ च द्रुमोत्पले ।
 कर्णपूरः शिरीषे स्यान् नीलोत्पलावतंसयोः ॥२५४॥
 करवीरः कृपाणे स्याद् दैत्यभेदागुमारयोः ।
 करवीर्यं दितिश्रेष्ठगवीषु च वतीषु च ॥२५५॥
 कटभगा प्रसारण्यां रोहिण्यां गजयोषिति ।
 कनविह्वलायां गोलायां वर्षाभूमूर्वयोरपि ॥२५६॥
 कादम्बरस्तु दध्यग्रे मद्यभेदे नपुंसकम् ।
 स्त्री वारुणीपरमृता भारतीशारिकास्तु च ॥२५७॥

कालञ्जरो योगिचक्रमेलके भैरवे गिरौ ।
 कुम्भकारी कुलत्यगाञ्च पुलिङ्गे घटकारके ॥२५८॥
 कृष्णसारा शिंशपायां पुंसि स्तुच्यां मृगान्तरे ।
 गिरिसारः पुमान् लोहे वङ्गे मलयपर्वते ॥२५९॥
 घनसारस्तु कर्पूरे दक्षिणावर्त्तपारदे ।
 चराचरं वाच्यलिङ्गमिङ्गे जगति न द्वयोः ॥२६०॥
 चर्मकारः पादूकति स्त्रियां चर्मकपौषधौ ।
 अथ चक्रधरोऽजेऽहैना त्रिषु ग्रामजालिनि ॥२६१॥
 चित्रटीरो विधौ भालमङ्कितं येन तत्र च ।
 घण्टाकर्णेपहाराय हतच्छागास्रविन्दुभिः ॥२६२॥
 तालपत्रन्तु ताडङ्गे रण्डायां तालपव्यपि ।
 तुङ्गभद्रा नदीभेदे स्त्रियां पुंसि मदीत्कटे ॥२६३॥
 तुण्डकेरीतु कार्पास्यां विम्बिकायामपि स्त्रियाम् ।
 तुलाधारस्तुनाराशौ पुंसि वाणिजके त्रिषु ॥२६४॥
 अथ तोयधरो मुस्तासुनिपणौषधी घने ।
 दण्डयात्रा दिग्बिजये संयानवरयात्रयोः ॥२६५॥
 अथोदशपुरं देशे भवेऽपि स्थान् नपुंसकम् ।
 दण्डधरः पुमान् पृथ्वीनाथे प्रेताधिपेऽपि च ॥२६६॥
 दिगम्बरः स्थान् लपणे नग्ने तमसि शङ्करे ।
 दुरोदरं द्यूतभेदे द्यूतकृत्यणयोः पुमान् ॥२६७॥

देहयात्रा यमपुरोगमने भोजनेऽपि च ।
 हैमातुगे जरासन्धवारणाननयोः पुमान् ॥२६८॥
 धराधरो हरौ शैले धाराधरोऽसिमेघयोः ।
 धाराङ्कुरस्तु नासीरे शोकरेऽपि घनोपले ॥२६९॥
 धार्तराष्ट्रोऽसितास्याङ्घ्रि हंसे कौरवसर्पयोः ।
 धुन्धुमारः शक्रगोपे गृहधूमे पदालिके ॥२७०॥
 धुरन्धरो धवद्रौ ना वाचलिङ्गस्तु धूर्वहे ।
 धृतगाङ्गः सुराङ्घ्रि स्यान् नागक्षत्रियभेदयोः ॥२७१॥
 धृतराष्ट्रो हंसपत्न्यां नभश्चरो विहङ्गमे ।
 विद्याधरो घने वाते निशाचरस्तु रत्तसि ॥२७२॥
 फेसुपेचकसर्पेषु पांशुलायां निशाचरी ।
 निपद्वरस्तु जम्बाले निशायान्तु निपद्वरी ॥२७३॥
 नीलाम्बरः प्रलम्बघ्ने कौणपे च शनैश्चरे ।
 भवेत् परिकरः सङ्घे पर्यङ्कपरिवारयोः ॥२७४॥
 प्रगाढगात्रिकावन्धे समारम्भविवेकयोः ।
 अथ पक्षचरश्चन्द्रे पृथक्चारिगजेऽपि च ॥२७५॥
 भवेत्प्रतिसरो मन्त्रभेदे मान्ये च कङ्कणे ।
 ब्रणशुद्धौ चमपृष्टे पुंसि न स्त्री तु मण्डने ॥२७६॥
 आरक्षे करम्बने च नियोज्ये त्वन्यलिङ्गकः ।
 भवेत्परिसरो मृत्यौ विधावपि चं पुम्ययम् ॥२७७॥

कालञ्जरी योगिचक्रमेलके भैरवे गिरौ ।
 कुम्भकारी कुलत्यगाञ्च पुलिङ्गे घटकारके ॥२५८॥
 कृष्णसारा शिंशपायां पुंसि स्तुच्यां मृगान्तरे ।
 गिरिसारः पुमान् लोहे वङ्गे मलयपर्वते ॥२५९॥
 घनसारस्तु कर्पूरे दक्षिणावर्त्तपारदे ।
 चराचरं वाचलिङ्गमिङ्गे जगति न द्वयोः ॥२६०॥
 चर्मकारः पादूकति स्त्रियां चर्मकपौपधौ ।
 अथ चक्रधरोऽजेऽहैना त्रिषु ग्रामजालिनि ॥२६१॥
 चित्रटीरो विधौ भालमङ्कितं येन तत्र च ।
 घण्टाकर्णेपहाराय हतच्छागास्रविन्दुभिः ॥२६२॥
 तालपत्रन्तु ताडङ्के रण्डायां तालपत्यपि ।
 तुङ्गभद्रा नदीभेदे स्त्रियां पुंसि मदीत्कटे ॥२६३॥
 तुण्डकेरीतु कार्पासां विम्बिकायामपि स्त्रियाम् ।
 तुलाधारस्तुलाराशौ पुंसि वाणिजके त्रिषु ॥२६४॥
 अथ तौयधरो मुस्तासुनिषण्णौपधौ घने ।
 दण्डयात्रा दिग्विजये संयानवरयात्रयोः ॥२६५॥
 अथोदशपुरं देशे प्रवेऽपि स्यान् नपुंसकम् ।
 दण्डधरः पुमान् पृथ्वीनाथे प्रेताधिपेऽपि च ॥२६६॥
 दिगम्बरः स्यात्क्षपणे नद्ये तमसि शङ्करे ।
 दुरीदरं द्यूतभेदे द्यूतकृत्यणयोः पुमान् ॥२६७॥

देहयात्रा यमपुरोगमने भोजनेऽपि च ।
 हैमातुरो जरासन्धवारणाननयोः पुमान् ॥२६८॥
 धराधरो हरौ शैले धाराधरोऽसिमेघयोः ।
 धाराङ्कुरस्तु नासीरे शीकरेऽपि घनोपले ॥२६९॥
 धार्तराष्ट्रोऽसितास्याडघ्नि हंसे कौरवसर्पयोः ।
 धुन्धुमारः शक्रगोपे गृहधूमे पदालिके ॥२७०॥
 धुरन्धरो धवद्रौ ना वाच्यलिङ्गस्तु धूर्वहे ।
 धृतराष्ट्रः सुराञ्चि स्यान् नागचत्रियभेदयोः ॥२७१॥
 धृतराष्ट्री हंसपत्न्यां नभश्चरो विहङ्गमे ।
 विद्याधरे घने वाते निशाचरस्तु रत्तसि ॥२७२॥
 फेहपेचकसर्पेषु पांशुलाया निशाचरो ।
 निपद्वरस्तु जम्बाले निशायान्तु निपद्वरी ॥२७३॥
 नीलाम्बरः प्रलम्बघ्ने कौणपे च शनैश्चरे ।
 भवेत् परिकरः सङ्घे पर्यङ्कपरिवारयोः ॥२७४॥
 प्रगालगात्रिकावन्धे समारम्भविवेकयोः ।
 अथ पक्षचरश्चन्द्रे पृथक्चारिगजेऽपि च ॥२७५॥
 भवेत्प्रतिसरो मन्त्रभेदे माल्ये च कङ्कणे ।
 ब्रणशुद्धौ चमपृष्ठे पुंसि न स्त्री तु मण्डने ॥२७६॥
 आरत्ने करसूत्रे च नियोज्ये त्वन्यलिङ्गकः ।
 भवेत्परिसरो मृत्यौ विधावपि च पुंस्ययम् ॥२७७॥

परम्परो मृगभेदे प्रपौत्रे तनयस्य च ।
 परम्परा परिपाठ्यां हिंसासन्तानयोरपि ॥२७८॥
 पयोधरः कोपकारे नारिकेले स्तनेऽपि च ।
 कशेरुमेघयोः पुंसि प्रभाकरोऽग्निसूर्ययोः ॥२७९॥
 प्रतीहारो द्वारि द्वाःस्थे द्वाःस्थितायान्तु योषिति ।
 परिवारः परिजने खड्गकोपे परिच्छदे ॥२८०॥
 पारावारः समुद्रे ना तटद्वये नपुंसकम् ।
 पात्रटीरस्तु पुत्रिङ्गे युक्तव्यापारमन्त्रिणि ॥२८१॥
 लोहकांस्यरजत्यात्रे सिंहाणे पावकेऽपि च ।
 पारिभद्रस्तु मन्दारे निम्बद्वौ देवदारुणि ॥२८२॥
 पीताम्बरस्तु शैलूपे पुंसि कैटभसूदने ।
 पीतसारो मलयजे गोमेदकमणावपि ॥२८३॥
 पूर्णपात्रं वस्तुपूर्णपात्रे वर्द्धापकेऽपि च ।
 वलभद्रा त्रायमानाकुमार्योः पुंसि सीरिणि ॥२८४॥
 ब्रह्मपुत्रः क्षेत्रभेदे नदभेदे च पुंस्ययम् ।
 वक्रनक्रस्तु पिशुने तथैव शुकपक्षिणि ॥२८५॥
 वार्वटीरो रङ्ग आम्नास्त्रप्रङ्कुरे गणिकासुते ।
 वारकीरस्तु पुंसि स्यात् भारयाक्षिणि वाङ्गे ॥२८६॥
 यूकायां वेणवेधिन्यां नीराजितक्षयेऽपि च ।
 विन्दतन्त्रः पुमान् शारिफलके च तुरङ्गके ॥२८७॥

वीरभद्रोऽश्वमेधाश्चे वीरश्रेष्ठे च वीरणे ।
 स्याद् वीरतरं वीरणे वीरश्रेष्ठे शरे च ना ॥२८८॥
 महावीरस्तु गरुडे शूरे सिंहे मखानले ।
 वज्रे श्वेततुरङ्गे च सञ्चानविहगेऽपि च ॥२८९॥
 महामात्रः समृद्धे चामात्ये हस्तिपकाधिपे ।
 मणिच्छिदा तु मेदायामृषभाख्यौषधेऽपि च ॥२९०॥
 महेश्वरो महादेवे कथितो ऽधीश्वरेऽपि च ।
 मृगनेत्रा रात्रिभेदे विशेषे योपितस्तथा ॥२९१॥
 रथकारस्तु माहिष्यात् करणीजे च तक्षणि ।
 रागसूत्रं त्वलामूत्रे पट्टसूत्रे नपुंसकम् ॥२९२॥
 लम्बोदरः स्यादुद्धाने गणानामधिपेऽपि च ।
 लक्ष्मीपुत्रस्तु पुंसिङ्गः कामदेवे तुरङ्गमे ॥२९३॥
 व्यवहारो दुभेदे स्यान् न्यायेऽपि च पणो स्थितौ ।
 अथ व्यतिकरः पुंसि व्यसन व्यतिपङ्कयोः ॥२९४॥
 वातपुत्रो महाधूर्त्ते भीमसेने हनूमति ।
 विश्वम्भरोऽच्युते शक्रे पुंसि विश्वम्भरा भुवि ॥२९५॥
 विश्वकद्रु स्त्रिपुखले ध्वानाखेटशुनोः पुमान् ।
 विभावरी निशाराध्याः कुट्टन्यां वक्रयोपिति ॥२९६॥
 विवादवस्त्रगुपयाच्च विभाकरोऽशिसूर्ययोः ।
 वीतिहोत्रोऽनलेऽर्के च शतपत्र शिखण्डनि ॥२९७॥

दार्वाघाटे सारसे च कमले तु नपुसकम् ।
 शतावरीतुण्डाण्यां स्यादिन्दीवर्यामपिस्त्रियाम् ॥२८८॥
 शिशुमारोऽम्बुसम्भूतजन्तौ तारात्मकाच्युते ।
 भवेत्सहचरो त्रिण्यां द्वयोरनुचरे त्रिषु ॥२८९॥
 समुद्रारुः पुमान् याचे सेतुबन्धे तिमिङ्गले ।
 सम्प्रहारो गतौ युद्धे स्थिरदंष्ट्रो भुजङ्गमे ॥२९०॥
 वराहाकृतिविष्णौ च सुकुमारो मृदौ त्रिषु ।
 पुंसि पुण्ड्राभिधानेक्षौ सूत्रधारः शचीपतौ ॥२९१॥
 नान्यन्तरसञ्चारिपात्रगिस्त्रिप्रभेदयोः ।

रपञ्चकम् ।

तमानपत्रं तापिञ्जे तिलके पत्रकेऽपि च ॥३०२॥
 तालीशपत्रं भूम्यामलकीतालीशयोः स्मृतम् ।
 स्यात् पांशुचामरः पुंसि दूर्वाञ्चिततटीभुवि ॥३०३॥
 दर्द्दापके प्रशंसायां पुरोटौ धूलिगुच्छके ।
 स्यात् पादचत्वरङ्गागे सैकते पिप्पलेऽपि च ॥३०४॥
 करके परदोपैकप्रवक्तृपुरुषेऽपि च ।
 पीतकावेरमित्येतत् कुङ्कुमे पित्तलेऽपि च ॥३०५॥
 स्याद्वाजवदरं रक्तामलके लवणेऽपि च ।
 वृश्चैकसारिन्द्रपुरे कुधेरनलिनीपुरोः ॥३०६॥

विप्रतीसार उद्दिष्टः कौकृत्येऽनुशये रूपि ।
 भवेत् समभिहारस्तु पौनः पुन्यभृशार्थयोः ॥३०७॥
 सर्वतो भद्र इत्युक्तः काव्यचित्रे गृहान्तरे ।
 निम्बे ना सर्वतोभद्रा गम्भारी नटयोपितोः ॥३०८॥
 रान्तवर्गः समाप्तः ।

लैकिकम् ।

लः शक्रे लातु दाने स्याद् ग्रहणेऽपि निगद्यते ।
 ली श्लेषणे च चपले ग्लौ धरण्यां निशापतौ ॥१॥

लक्षिकम् ।

अम्बो रसस्य भेदे स्यादाम्बो चाङ्गेरिकौषधौ ।
 अलिः सुरापुष्पलिङ्गैः पुस्यालिर्विशदाशये ॥२॥
 त्रिपु स्त्रियां वयस्यायां सेतौ पङ्क्तौ प्रकीर्त्तिता ।
 आलुर्गलन्तिकायां स्त्री क्लृवं मूले च भेलके ॥३॥
 इला कलत्रे सौम्यस्य धरिव्यां गवि वाचि च ।
 ओम्बस्तु गृहणे पुसि स्यादाद् वै वाच्यलिङ्गकः ॥४॥
 कला स्यान्मूलविष्टुहौ शिण्यादावंशमात्रके ।
 षोडशांशे च चन्द्रस्य कलनाकालमानयोः ॥५॥
 कलं शुक्ले त्रिष्वजीर्णे चाव्यक्तमधुरध्वनौ ।
 कलिः स्त्री कलिकायां ना शराजिकलङ्घे युगे ॥६॥

कालो मृतौ महाकाले समये यमकृष्णयोः ।
 काला तु कृष्णत्रिवृतामञ्जिष्ठा नीलिनीषु च ॥७॥
 काली गौर्यां क्षीरकीटे कान्तिका मातृभेदयोः ।
 कीला लेशे द्वयोः स्तम्भज्वालाकफोणिशङ्कुषु ॥८॥
 कुल जनपदे गोत्रे सजातीयगणेऽपि च ।
 भवने च तनौ क्लीवं कण्टकार्यौपधौ कुली ॥९॥
 अथ कृलं तटे रूढपे सैन्यपृष्ठतडागयोः ।
 कौलं कौलिफले क्लीवं पिप्पलीचव्ययोः स्त्रियाम् ॥१०॥
 नाऽङ्गपालौ शनौ चित्रे वराक्षेत्सङ्गभेनके ।
 खल भुस्थानकक्लेषु नीचक्रूराधमे त्रिषु ॥११॥
 खलो वस्त्रप्रभेदे स्याद् गर्ते चर्माणि चातके ।
 खलो तु हस्तपादावमर्हनाख्यरुजि स्त्रियाम् ॥१२॥
 खिलमप्रहतेऽपि स्यात् सारसत्तितवेधसोः ।
 गलः सर्जरसे कण्ठे गुलः स्यादैक्षवे पुमान् ॥१३॥
 गुली तु गुटिकारोगभिदोः शुद्ध्यां गुला स्मृता ।
 गोला गोदावरीसख्योः कुनटीदुर्गयोः स्त्रियाम् ॥१४॥
 पत्राञ्जने मण्डले चान्तिञ्जरे बालखिलने ।
 चला लक्ष्म्यां पुमान् कस्ये कस्ययुक्तेऽभिधेयवत् ॥१५॥
 चिम्बः पुमान् किन्ननेत्रे किन्नाक्षेऽप्यभिधेयवत् ।
 आतायिनि च सप्तोक्तचिम्बो स्यात् शुद्रवास्तुके ॥१६॥

चुम्बी चितायामुद्धाने स्त्रियां चेलोऽधमे त्रिषु ।
 नपुसकन्तु वसने क्लृप्तं खलितशाव्ययोः ॥१७॥
 क्ली वीरुधि सन्ताने वल्कले कुसुमान्तरे ।
 जलं गोकलने नीरे ह्रीवरेऽप्यन्यवज्जडे ॥१८॥
 जाल गवाक्ष आनाये चारके दन्तवृन्दयोः ।
 जालो नीपद्रुमे जालो पटोलिकौपधौ स्त्रियाम् ॥१९॥
 झला स्यादातपस्योर्म्मौ दुहितर्यपि च स्त्रियाम् ।
 झिम्बी चीर्यातपसूचौ वर्त्त्यामुद्वर्त्तनाशुके ॥२०॥
 तल खरूपेऽनूर्द्धेऽस्त्री क्लृप्तं ज्याघातवारणे ।
 कानने कार्यवीजे च पुंसि तालमहीरुहे ॥२१॥
 चपेटे च त्सरौ तन्त्रीघाते सव्येन पाणिना ।
 तन्नी तरुण्या तल्लस्तु जलाधारान्तरे पुमान् ॥२२॥
 तालः करतलेऽङ्गुष्ठमध्यमाभ्याञ्च सम्भिते ।
 गीतकालक्रियामाने करास्थाले द्रुमान्तरे ॥२३॥
 वाद्यभाण्डे च कांस्यस्य त्सरौ ताल्यजटौपधौ ।
 क्लृप्तन्तु हरिताले स्यात् तुना सादृश्यमानयोः ॥२४॥
 गृहाणा दारुवन्धाय पीठिकायामपीष्यते ।
 राशौ पञ्चशते भाण्डे त्वनं स्याद् ब्राह्मदारुणि ॥२५॥
 आकाशेऽथ पिचौ न स्त्री दलमुत्सेधखण्डयोः ।
 शस्त्रीर्च्छेदेऽप्यपद्रव्ये पत्रेऽप्यथ दुलिः स्त्रियाम् ॥२६॥

कमद्यां ना मुनौ दोलां नील्यां यानान्तरेऽपि च ।
 नलः पोटगले राक्षि पितृदेवे कपोत्तरे ॥२७॥
 कमलेऽपि च नव्याञ्च क्रमेण क्लीवयोपितोः ।
 नाला न ना पद्मदण्डे नाली शाककडम्बके ॥२८॥
 नीलन्तु नीलरक्तेना निध्यद्विवानरान्तरे ।
 नीली रुग्भेदनीलिन्याः पलमुन्मानमांसयोः ॥२९॥
 पल्ल्यल्पग्रामकुट्योः स्त्री पल्लः स्थूलकुष्ठलके ।
 पालिः कर्णलतायेऽथौ पङ्कावङ्कप्रभेदयोः ॥३०॥
 क्वाचादिदेये स्त्री पाली यूकासशश्रु योपितोः ।
 पिप्लः पुमान् क्लिन्ननेत्रे किन्नाचे पुनरन्यवत् ॥३१॥
 पीलुः पुमान् प्रसूने स्यात् परमाणौ मतङ्गजे ।
 अस्थिखण्डे च तालस्य काण्डपादपभेदयोः ॥३२॥
 पुलः स्यात् पलके पुंसि विपुलेऽप्यन्यलिङ्गकः ।
 फलं जातीफले सस्ये हेतुत्ये व्युष्टिलाभयोः ॥३३॥
 त्रिफलायाञ्च कक्कोले प्रियङ्गौ तु फली स्मृता ।
 फालः पुंसि महादेवे कालिन्दीभेदनेऽपि च ॥३४॥
 क्लीवं सीरोपकरणे त्रिपु कापासवाससि ।
 बलि दैत्यप्रभेदे च करचामरदण्डयोः ॥३५॥
 उपहारे पुमान् स्त्री तु जरया स्रथचर्मणि ।
 गृहदारुप्रभेदे च जठरावयवेऽपि च ॥३६॥

वलं गन्धरसे रूपे स्थामनि स्थौल्यसैन्ययोः ।

पुमान् हलायुधे दैत्यप्रभेदे वायसेऽपि च ॥३७॥

बलयुक्तेऽन्यलिङ्गः स्याद् वाद्यालके तु योषिति ।

वक्त्री स्याद् जमोदायां व्रतत्यामपि योषिति ॥३८॥

बालोना कुन्तलेऽश्वस्य करिणश्चापि बालधौ ।

नारिकेले हरिद्रायां मन्त्रिकाभिद्यपि स्त्रियाम् ॥३९॥

वाच्यलिङ्गेऽर्भके मूर्खे ह्रीवरे पुन्नपुंसकम् ।

अलङ्कारान्तरे मेध्ये बाली बाला चूटौ स्त्रियाम् ॥४०॥

वेला काले च सोमायामब्धेः कूलविकारयोः ।

अक्लिष्टमरणे रागे ईश्वरस्य च भोजने ॥४१॥

भङ्गः स्यात् पुंसि भङ्गके शस्तभेदे पुनर्दयोः ।

भक्तातक्यां स्त्रियां भक्ती भालं तेजोललाटयोः ॥४२॥

भेलः श्वे मुनौ पुंसि भीरावज्ञे च वाच्यवत् ।

भेलो मोनान्तरे पुंसि त्रिषु कामादिविह्वले ॥४३॥

मलोऽस्ती पापविद्धिद्वे कृपणत्वभिधेयवत् ।

मन्नः पात्रे कपोले च मत्स्यभेदे वलीयसि ॥४४॥

मालं क्षेत्रे स्त्रियां पृक्कास्रजोर्जात्यन्तरे पुमान् ।

मालुः पत्रलतानार्योः स्त्रियां मूलं शिफाद्ययोः ॥४५॥

मूलविच्छेऽन्तिके वा ना भे मेला मेलके मसौ ।

मौलिः किरीटे धन्मिन्ने चूडायामनपुंसकम् ॥४६॥

नाऽशोकद्रौ स्त्रियां भूमौ लोला केलिविलासयोः ।
 शृङ्गारभावचेष्टायां लोलः स्याद् वाच्यलिङ्गकः ॥४७॥
 सटप्णे चञ्चले लोला जिह्वाकमलयोः स्त्रियाम् ।
 व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे नान्यवत् खले ॥४८॥
 विलं क्तिद्र् गुहायाञ्च पुमानुच्चैःश्रवो हये ।
 शलन्तु शलले पुंसि मृङ्गिचेत्रभिदो विधौ ॥४९॥
 शालुः कपायद्रव्ये स्यात् चौरकाख्योपधौ पुमान् ।
 शालिस्तु कलमादौ च गन्धमार्ज्जारके पुमान् ॥५०॥
 शाला दुस्कन्धशाखायां गृहगेहैकदेशयोः ।
 ना अपि शिलमुञ्चे स्याद् गण्डपद्यां शिली मता ॥५१॥
 स्तम्भशीर्षे शिलाशिल्यौ शिला तु प्रस्तरे मता ।
 तथा मनःशिलायाञ्च दाराधःस्थितदारुणि ॥५२॥
 शीलं स्वभावे सदृत्ते शुक्लो योगान्तरे मिते ।
 नपुंसकन्तु रजते शूलोऽस्त्री रोग आयुषे ॥५३॥
 मृत्युकेतनयोगेषु शूल्या स्यात् पण्ययोपिति ।
 शैलो भूमृति शैलं तु शैलेये तार्क्ष्यशैलके ॥५४॥
 सानः पादपमान्ने स्यात् प्राकारे सर्जपादपे ।
 स्यालं भाजनभेदेऽपि स्थानी स्यात्पाटनोखयोः ॥५५॥
 स्थूलं कूटेऽथ निष्प्रज्ञे पीवरेऽप्यन्यलिङ्गकः ।
 हालो हले पुमान् हालो मदिरायाञ्च योपिति ॥५६॥

हेला स्त्रियामवज्ञायां विलासे वरयोपिताम् ।

लत्रिकम् ।

अनलो वसुभेदेऽग्नावनिलो वसुवातयोः ॥ ५७ ॥
 अर्गला त्रिषु कक्षोलेऽन्तर्दण्डवारयोर्न ना ।
 अरालः कुटिले सर्जरसे समददन्तिनि ॥ ५८ ॥
 अद्भुली करशाखायां कणिकायां गजस्य च ।
 अचला वसुधायां स्यादचलः शैलकीलयोः ॥ ५९ ॥
 अमलन्वभ्रके क्लीवं लक्ष्म्यां स्त्री निर्मले त्रिषु ।
 अञ्जलिस्तु पुमान् हस्तसम्पुटे कुडवेऽपि च ॥ ६० ॥
 अवेलस्वपलापे स्याद्वेला पूगचञ्चिते ।
 आभीलं न दयोः कृच्छ्रे वाच्यलिङ्गं भयानके ॥ ६१ ॥
 इत्थला तारकाभेदे ना भेदे दैत्यमत्स्ययोः ।
 उत्पली तुपचर्ष्यां क्लीवं कुष्ठप्रसूनयोः ॥ ६२ ॥
 उपलः प्रस्तरे रत्ने शर्करायान्तु योषिति ।
 उज्वलो दीप्तशृङ्गारविशदेषु विकाशिनि ॥ ६३ ॥
 उत्फुल्लं करणे स्त्रीणामुत्तानेऽपि विकस्वरे ।
 उत्तान उत्कटे श्रेष्ठे विकराले प्रवङ्गमे ॥ ६४ ॥
 कमल सलिले ताम्बे जलजे कुम्भि भेषजे ।
 नृगभेदे तु कमलः कमला श्रीवरस्त्रियोः ॥ ६५ ॥
 कपिला रेणुकायाञ्च शिंशपागोविशेषयोः ।

पुण्डरीककरिण्यां स्त्री वर्णभेदे त्रिलिङ्गकम् ॥६६॥
 नाऽनले वासुदेवे च मुनिभेदे च कुकुरे ।
 कम्बलो नागराजे स्यात् सास्त्राप्रावरयोरपि ॥६७॥
 कृमावप्युत्तरासङ्गे सलिले तु नपुंसकम् ।
 करालो दन्तुरे तुङ्गे भीषणे चाभिधेयवत् ॥६८॥
 ससर्जरसतैले ना क्रीवं कृष्णकुठेरके ।
 कन्दलं त्रिपु कपालेऽप्युपरागे नवाङ्कुरे ॥६९॥
 कलध्वनौ कन्दली तु मृगगुल्मप्रभेदयोः ।
 कदलाकदलौ पृथ्वा कदलीकदलौ पुनः ॥७०॥
 रम्भावृत्तेऽथ कदली पताकामृगभेदयोः ।
 कदला डिम्बिकायाञ्च शास्त्रमलीभूरुचेऽपि च ॥७१॥
 कपालोऽस्त्री शिरोऽस्त्रिंशत् स्याद् घटादेः शकले व्रजे ।
 कण्ठाला तु द्वयोर्द्रोणीप्रभेदे ना क्रमेलके ॥७२॥
 ककौलः पुंसि हर्षे स्यादुज्ज्वलवैरिणोरपि ।
 कामला रोगभेदे वा नानामरुवसन्तयोः ॥७३॥
 कामुके वाच्यलिङ्गाऽथ काकौलं नरकान्तरे ।
 ना कुलाले द्रोणकाके विषभेदे तु न स्त्रियाम् ॥७४॥
 काहला वाद्यभाण्डस्य भेदे चाक्षरसां भिदि ।
 काहली तु नरुण्यां स्यात् काहलद्वग्जाद्युधे ॥७५॥
 शब्दमात्रेऽपि पुनिङ्ग स्त्रिपु शुष्के भृगे खले ।

किट्टालः पुंसि ताम्रस्य कलसे लोहगूथके ॥७६॥
 कीलालं रुधिरं तोये कुशलः शिलिते त्रिपु ।
 क्षेमे च सुकृते चापि पर्याप्तौ च नपुंसकम् ॥७७॥
 कुवलयोत्पले मुक्ताफले च बदरीफले ।
 कुड्मलो मुकुले पुंसि न द्वयो र्नरकान्तरे ॥७८॥
 कुटिला तगरपाद्यां स्त्री भृशे च वाच्यलिङ्गकः ।
 कुन्तलश्यपके वाले यवे पुंभूमि नीवृति ॥७९॥
 कुनालः कुक्कुभे कुम्भकारे स्त्रीत्वञ्जनान्तरे ।
 कुम्भिलः शालमीने च चौरस्त्रीकार्यचौरयोः ॥८०॥
 कुडालः स्यात् पुमान् भूमिदारणे युगपत्रके ।
 कुचेला विद्वकर्ण्या स्त्री वाच्यवत्तु कुवाससि ॥८१॥
 कुकूलं शङ्कुसङ्कोर्णशभ्रे ना तु तुपानले ।
 कुण्डलं कर्णभूपाया पाशेऽपि बलयेऽपि च ॥८२॥
 काञ्चनदुगुडूच्याः स्त्री केवलः कुहने पुमान् ।
 नपुंसकन्तु निर्णोते वाच्यवच्चैककृतस्त्रयोः ॥८३॥
 केवली ज्ञानभेदेऽय कोमलं मृदुले जले ।
 कोषलो वाद्यभेदे स्यान् नाव्यशास्त्रप्रवक्तारि ॥८४॥
 यन्विलसु करीरद्रौ विकङ्कततरौ पुमान् ।
 सयन्यौ त्रिपु गन्धोली भद्रागद्योश्च योपिति ॥८५॥

गरलं तृणपूले च विषे माने नपुंसकम् ।
 गोपालो नृपगोपेशे गोकीलो मुपले हले ॥८६॥
 गौरिलस्तु पुमान् लौहचूर्णे स्याद् गौरसर्पपे ।
 चपलः पारदे मीने चौरके प्रस्तरान्तरे ॥८७॥
 चपला कमलाविद्युत्पुंसलीपिप्पलीपु च ।
 नपुंसकन्तु शीघ्रे स्याद् वाच्यवत्तरले चले ॥८८॥
 चत्वानो घोमकण्डे स्यात्पुंसि दर्भेऽपि दृश्यते ।
 चन्द्रिलः पुंसि वास्त्वकशाके भगे च नापिते ॥८९॥
 चञ्चला तु तडिज्जम्भेगाश्चञ्चलः कामुकेऽनिले ।
 चूडाला त्वच्चटायां स्त्री चूडावति च वाच्यवत् ॥९०॥
 क्कगलं नीलवस्त्रे नाक्कागे स्त्री वृद्धदारके ।
 जम्बालः शैवले पङ्के जगलोमदनद्रुमे ॥९१॥
 मेदके पिष्टमध्ये च पुंसि धूर्त्तेऽभिधेयवत् ।
 जटिला पिप्पली मांस्यो जटायुक्ते च वाच्यवत् ॥९२॥
 जङ्गलं निर्जनस्थाने त्रिलिङ्गां पिशितेऽस्तियाम् ।
 जम्बलः पुंसि जम्बीरे बुद्धदेवान्तरेऽपि च ॥९३॥
 जम्बूलस्तु पुमान् जम्बूविटपे क्रकचच्छदे ।
 जाङ्गुली विषविद्यायां जाङ्गुलं जालिनीफले ॥९४॥
 जाङ्गुली शृङ्गशीम्बरां स्त्री जाङ्गुलो ना कपिञ्जले ।
 तरलं चञ्चले पिङ्गे भास्वरेऽपि त्रिलिङ्गकम् ॥९५॥

हारमध्यमणौ पुंसि यवागूसुरयोः स्त्रियाम् ।
 तण्डुलः स्याद् विडङ्गे च धान्यादिनिकरे पुमान् ॥१६६॥
 तमालस्तिलके खड्गे तापिञ्जे वरुणद्रुमे ।
 ताम्बूली नागवज्र्यां स्त्री क्रमुके तु नपुंसकम् ॥१६७॥
 तातलो रुजि पाके च लोहकूटे मनोजवे ।
 तुमुलः कलिवृक्षे ना क्लीवन्तु रणसङ्कुले ॥१६८॥
 तैतिलो गण्डके पुंसि क्लीवन्तु करणान्तरे ।
 दुक्कलं श्लक्ष्णवस्त्रे स्यात्क्षौमे च धवला गवि ॥१६९॥
 वृषश्रेष्ठे पुमान् वाच्यनिङ्गः शुक्ले च सुन्दरे ।
 नकुली कुक्कुटीमांस्याः पशुपाण्डवयोः पुमान् ॥१७०॥
 नाकुली कुक्कुटीकन्दे राक्षसायां चविके स्त्रियाम् ।
 नाभीलं वङ्गणे नार्याः कृच्छ्रगर्भाण्डयोरपि ॥१७१॥
 निचुलस्तु निचाले स्यादिज्जलाख्यमधीरुद्धे ।
 निर्मलं स्यात्तु निर्माल्ये चाभ्रके च नपुंसकम् ॥१७२॥
 मलघीनेऽन्यलिङ्गञ्च निस्तलं वर्तुले चने ।
 निष्कलस्तु कलाशून्ये नष्टवीव्ये च वाच्यवत् ॥१७३॥
 नैपाली तु नवमालीकुनटीसुवहासु च ।
 पल्लवं तिलचूर्णे च पङ्के मांसे नपुंसकम् ॥१७४॥
 ना राक्षसेऽथ पटलं पिटके च परिच्छदे ।
 छट्टिर्द्वयोगतिलके क्लीवं वृन्दे पुनर्न ना ॥१७५॥

प्रतलं पातालभेदे तताङ्गुलिकरे पुमान् ।
 टालं वस्तुभेदे नौपधौ ज्योत्स्न्यां तु योषिति ॥१०६॥
 वालोऽस्ती किसलये वीणादण्डे च विद्रुमे ।
 च्चानीपुत्रिकागीत्याः स्त्रियां पुम्भूम्निनीवृत्ति ॥१०७॥
 ांशुलः पुथने शम्भोः खट्वाङ्गे स्व्यसतीभुवोः ।
 ाकलं कुष्ठभैषज्ये पुंसि स्यात् कुञ्जरज्वरे ॥१०८॥
 ाचलं पाचने नाम्नौ राधनद्रव्यवातयोः ।
 ाटला पाटलौ स्त्री स्यादस्य पुष्ये पुनर्नना ॥१०९॥
 ागुधान्ये पुमान् श्वेतरक्तवर्णेऽपि वाच्यवत् ।
 ातालं नागलोके स्याद् विवरे वडवानले ॥११०॥
 तिली वागुरायां स्यान् नारीपात्रप्रभेदयोः ।
 प्पलं सन्निभे वस्तुच्छेदभेदे च ना तरौ ॥१११॥
 रंगुके पत्तिभेदे कणायां पिप्पली मता ।
 चुलोऽपि स्यात्पिप्पली जन्मवायसे ॥११२॥
 ङ्गलो नागभिद्रुद्रचण्डांशुपारिपार्श्विके ।
 धिभेदे कपावधौ पुंसि स्यात्कपिलेऽन्यवत् ॥११३॥
 यां वेद्याविशेषे च करिण्यां कुमुदस्य च ।
 तना तोयपिप्पल्यां स्यान्न्यवत् पित्तसंयुते ॥११४॥
 ावन्तु तैजसद्रव्ये पिच्छिलो विजिलेऽन्यवत् ।
 ापिच्छिलोऽपि पिच्छिलोऽन्यवत् ॥११५॥

पुङ्गल' सुन्दराकारे त्रिषु पुस्यात्मदेहयोः ।
 पेपनो रुचिरे दक्षे फेनिलोऽरिष्टपादपे ॥११६॥
 ना सफेने त्रिषु क्लीवं कोलीमदनयोः फले ।
 वज्रला नीलिकायां स्यादेलायां गवि योपिति ॥११७॥
 कृत्तिकासु स्त्रियां भूमिनि विहायसि न पुसकम् ।
 पुस्यमौ कृष्णपक्षे च वाच्यवत् प्राज्यकृष्णयोः ॥११८॥
 वरला वारला चापि गन्धालीहंसकान्तयोः ।
 वार्हलं दुर्दिने मेलानन्दायां वार्हलः स्मृतः ॥११९॥
 मङ्गला सितदूर्वायामुमायां पुसि भूमिजे ।
 नपुंसकन्तु कल्याणे सर्वार्थरक्षणेऽपि च ॥१२०॥
 मण्डलं परिधौ कोठे देशे द्वादशराजसु ।
 क्लीवेऽथ निवहे विम्बे त्रिषु पुंसि तु कुक्कुरे ॥१२१॥
 मञ्जुल त्रिषु मञ्जौ ना जलरङ्गौ नपुसकम् ।
 जलाञ्चले निकुञ्जे च महिला फलिनीस्त्रियोः ॥१२२॥
 मातुलो व्रीहिभिन्नात्तन्नात्रोच्य मदनद्रुमे ।
 धूसूदरे माचलो वन्दिचैरे च ग्राहरोगयोः ॥१२३॥
 मूपलं स्यादयोत्रे च पुन्नपुंसकयोः स्त्रियाम् ।
 तालमूल्यामाखुपर्णी गृहगोधिकयोरपि ॥१२४॥
 मृणाल नलदे क्लीव पुन्नपुंसकयोर्विसे ।
 मेखला खड्गवन्धे स्यात् काञ्चीगैलनितम्बयोः ॥१२५॥

यमल युगले क्लीवं यमली चोटिकाद्वये ।
 रसाला रसनादूर्वाविदारीमार्ज्जितासु च ॥१२६॥
 रसालं सिद्धके वाले रसालश्चेत्तु चूतयोः ।
 रमिलोरमणे कामे लाङ्गुलं पुच्छशेफयोः ॥१२७॥
 गङ्गली तोयपिप्पल्यां क्लीवन्तु कुसुमान्तरे ।
 गोदारणे तृणराजगृहदारुविशेषयोः ॥१२८॥
 गोक्षलः शृङ्खलाचार्य्येऽव्यक्तावाचिनि च त्रिपु ।
 च्छूलः पुंसि तिनिशे वेतसाशोकयोरपि ॥१२९॥
 एठानो युद्धभेदे च नौकायाञ्च खनित्रके ।
 तूलः पुंसि वात्याया वाच्यवन्मास्तासहे ॥१३०॥
 रमिलो दाक्षिके वामं त्रिपु स्याद् विमला स्त्रियाम् ।
 रतलायां भुवोभेदे निर्मालेत्वभिधेयवत् ॥१३१॥
 रंपुलः पृथुलेऽगाधे मेरुपश्चिमभूधरे ।
 रदुलस्तु पुमान्स्वुवेतसे वेतसेऽपि च ॥१३२॥
 रङ्गालो नेत्रपिण्डे स्याद् वृषदंशकके पुमान् ।
 रशाला त्विन्द्रवारुण्यामुज्जयिन्यान्तु योपिति ॥१३३॥
 रगपत्रिभिदो पुंसि पृथुले त्वभिधेयवत् ।
 रपलो गृञ्जने शूद्रे चन्द्रगुप्तेऽपि राजनि ॥१३४॥
 कनं त्वचि खण्डे स्याद् रागवस्तुनि वक्ष्मणे ।
 र्वलोऽस्त्री सन्मलवत् कुलपाथेय मत्सरे ॥१३५॥

श्यालुः स्यादजगरे निद्राशीले च कुकुरे ।
 अडालुः दीर्घदिन्यां स्त्री अद्वासुक्ते तु वाच्यवत ॥१३६॥
 श्यामलः पिप्पले कृष्णे शार्दूलो रालसान्तरे ।
 व्याघ्रे च पशुभेदे च सत्तमे तृत्तरस्थितः ॥१३७॥
 शाल्मलि स्तरुभेदे स्याद् द्वीपभेदेऽपि च द्वयोः ।
 श्रोफलः पुंसि मालूरे धात्रीनीलिकयोः स्त्रियाम् ॥१३८॥
 शीवलं स्याच्च शैवाले शैले ये च नपुंसकम् ।
 शीतलं पुष्पकाशीशे शैलजे मलयोद्भवे ॥१३९॥
 पुमानसनपर्ण्यां स्यात् शिशिरे वाच्यलिङ्गकम् ।
 शृगालो वञ्चके दैत्यभेदे ना डमरे स्त्रियाम् ॥१४०॥
 शृङ्खला पुस्कटीवस्त्रवन्धे च निगडे त्रिपु ।
 शैवलं पद्मकाष्ठे स्यात् शैवालेऽपि पुमानयम् ॥१४१॥
 शौष्कलः शुष्कमांसस्य पणके पिशिताशनि ।
 पण्डाली तैलमाने च सरसीकामुकस्त्रियोः ॥१४२॥
 सरलः पूतिकाष्ठे नाऽधोदारावक्रयो स्त्रिपु ।
 सङ्कुलं त्रिपु विस्फुटवाचि व्याघ्रेऽथ सप्तला ॥१४३॥
 नवमाली चर्मकपागुञ्जासु पाटलौ स्त्रियाम् ।
 सन्धिना तु सरुङ्गायां नदीमदिरयोः स्त्रियाम् ॥१४४॥
 सिध्मला मत्स्यविकृतौ वाच्यवत्तु किन्नासिनि ।
 सुवेलः प्रणते शान्ते त्रिपु ना पर्वतान्तरे ॥१४५॥

सुतलोऽट्टालिकावन्धनागलोकप्रभेद्योः ।

चिद्बुलोवर्णकद्रव्ये ना भण्ठाक्यान्तु चिद्गुली ॥१४६॥

हेमलः स्वर्णकारे स्यात् कृकलासे शिलान्तरे ।

लचतुष्कम् ।

अक्षमालाऽक्षत्रे स्यादरुन्धत्यामपि स्त्रियाम् ॥१४७॥

अङ्गुपाली परीरम्भे धात्रेवेदिकयोः स्त्रियाम् ।

अथानिवलः प्रबले त्रिपु स्त्रीत्वौषधीभिदि ॥१४८॥

उदूग्वलं गुग्गुलौ स्यादुलूखलेऽपि न द्वयोः ।

एकाष्ठीला वनतिक्तिकौषधौ पुंसि वकपुष्पे च ॥१४९॥

कलकल उक्तः कोनाहले तथा सालनिर्णसे ।

अथ कर्मफलं कर्मरङ्गकर्मविपाकयोः ॥१५०॥

कन्दरालः पुमान् गर्दभाण्डे श्लततरावपि ।

कमण्डलुः स्यात् करके नस्त्री ना श्लपादपे ॥१५१॥

कुल्लहलं कौतुके स्यात् प्रशस्तेऽपि च दृश्यते ।

खतमालस्तु पुंसिङ्गे घूमेऽपि च वलाहके ॥१५२॥

गण्डशेला ललाटे स्यात् च्युतस्थूलोपले गिरेः ।

गन्धफल्यपि गुन्द्रायां चत्पकस्य च कोरके ॥१५३॥

चक्रवानोऽद्रिभेदे स्याच्च चक्रवालन्तु मण्डले ।

जलाञ्जलं स्वतो वारिनिर्गमे शैवनेऽपि च ॥१५४॥

दलामलं मरुवके दमनेऽपि नपुंसकम् ।
 ध्वनिनाला तु वीणायां वेणुकाहलयोरपि ॥१५५॥
 स्यात् परिमलेऽतिमर्द्दातिमनोहरगन्धयोश्चापि ।
 सुरतोपमर्दविक्रसच्छरीररागादिसौरभे पुंसि ॥१५६॥
 अथ षोडशः पुंसि नले च काशमत्स्ययोः ।
 भवेद् वज्रफलो नीपे नाऽऽमलक्यान्तु योपिति ॥१५७॥
 भस्मदलं ग्रामकृटे पांशुवर्षे हिमेऽपि च ।
 भद्रकाली तु गन्धोल्यां कात्यायन्यामपि स्त्रियाम् ॥१५८॥
 महाकालो महादेवे किम्याके प्रमथान्तरे ।
 भवेन्मदकलो मत्तेभमदाव्यक्तवाचिनाः ॥१५९॥
 महाबलं सीसकेऽतिवलायां स्त्री बलात्तरे ।
 त्रिलिङ्गं मणिमाला तु हारे दन्तक्षतान्तरे ॥१६०॥
 महानीलो भृङ्गराजे मणिनागविशेषयोः ।
 मुक्ताफलन्तु कर्पूरे मौक्तिके लवलीफले ॥१६१॥
 स्यान्मृत्युफला कदल्यां महाकालफले पुमान् ।
 भवेद् यवफलो वेणो मांसीकुटजयोरपि ॥१६२॥
 रजस्वला पुष्पवत्यां स्त्रियां स्यात् सौरभे पुमान् ।
 वातकेलिः कलालापे पिङ्गदन्तक्षते पुमान् ॥१६३॥
 अथ वायुफलं शक्रकामुके करकेऽपि च ।
 भवेद् विचकिली मन्त्रीप्रभेदे मद्ने पुमान् ॥१६४॥

वृहन्नला गुडाकेशे महाघोटगले पुमान् ।
 सदाफलः स्कन्दफले नारिकेलेऽप्युदुम्बरे ॥१६५॥
 सिनीवाली तु दृष्टेन्दुकलामादुर्गयोरपि ।
 अथ सौर्वचलं सर्ज्जकारे च लवणान्तरे ॥१६६॥
 हस्तिमत्तोऽश्वमातङ्गे शङ्खनागे विनायके ।
 हरितालं धातुभेदे स्त्री दूर्वाकाशरेखयोः ॥१६७॥
 हलाहलो ब्रह्मसर्पेऽञ्जनायां ना विषेऽस्त्रियाम् ।
 लपञ्चकम् ।

आसुतीवल आख्यातः कन्यापालकयज्वनोः ॥१६८॥
 उद्वण्डपालः पुंसि स्यात् सर्पमत्स्यप्रभेदयोः ।
 एककुण्डल आख्यातो बलभद्रे धनाधिपे ॥१६९॥
 कृषीटपाल उद्दिष्टः केनिपातसमुद्रयोः ।
 स्यात् पाण्डुकम्बलः श्वेतप्रावारयावभेदयोः ॥१७०॥
 भवेत् सुरतताली तु दूतिकायां शिरःस्रजि ।
 लान्तवर्गः समाप्तः ।

वैककम् ।

वः सान्त्वने च बाले च वरुणे च निगद्यते ।
 वं प्रचेतसि ज्ञानीयादिवार्ये च तद्व्ययम् ॥१॥
 स्वः स्यात्पुम्यात्मनिज्ञानौ त्रिव्यात्मोये धनेऽस्त्रियाम् ।

वदिकम् ।

अविर्नाये रवौ मेषे शैलमूषिककम्बले ॥२॥
 अथः पुञ्जातिभेदे चतुरगे च पुमानयम् ।
 उर्द्धं स्यादुच्छ्रिते तुङ्गे चोपरिष्ठादपि स्मृतम् ॥३॥
 क्षवः क्षुते राजिकायां कविर्वाल्मीकिशुक्रयोः ।
 सूरौ काव्यकरे पुंसि स्यात् खलीने तु योषिति ॥४॥
 कण्वपापे मुनौ पुंसि क्ण्ववीजे च शीधुनः ।
 पापे क्लीवं नपुसके पण्डेऽन्यवदविक्रमे ॥५॥
 स्यात्तु ग्रीवा कन्धरायां तच्छिरायाञ्च योषिति ।
 चार्वी तु शोभनावुद्धौ र्ज्यात्स्नाधनदभार्ययोः ॥६॥
 कृविः शोभारुचौ र्योषिज्जवो वेगवति त्रिषु ।
 पुंलिङ्गस्तु भवेद् वेगे चोद्गुप्ये जवा स्मृता ॥७॥
 जीवः प्राणिनि वृत्तौ च वृत्तभेदे वृत्तस्यतौ ।
 जीवा जीवन्तिकामौर्वीवचाशञ्जितभूमिषु ॥८॥
 न स्त्री तु जीविते तत्त्वं स्वहूपे परमात्मनि ।
 स्याद् विलम्बितनृत्ये च द्रवः प्रद्रावनर्म्माणः ॥९॥
 रसेऽपि दवदावौ तु वनवक्त्रौ वनेऽप्युभौ ।
 द्वन्द्व रहस्ये कलहे तथा मियुनयुग्मयो ॥१०॥
 दार्वी दारुहरिद्रायां तथा गोजिह्विकौपधौ ।
 द्यौः स्त्री स्वर्गे च गगने दिवं क्लीवं तयोः स्मृतम् ॥११॥

देवो मेघे सुरे राज्ञि स्यान् नपुंसकमिन्द्रिये ।
 देवी कृताभिपेकायां तेजनीपृक्षयोरपि ॥१२॥
 धवः पुमान् नरे धूर्त्ने पत्न्यौ वृक्षान्तरेऽपि च ।
 ध्रुवः शङ्कौ हरे विष्णौ वटे चोत्तानपादजे ॥१३॥
 वसुयोगभिदोः पुंसि क्लीवं निश्चिततर्कयोः ।
 स्त्रीमूर्खाऽद्योःशालपर्ण्यां गीतिसुग्भेदयो स्त्रियु ॥१४॥
 सन्तते शश्वते चाय नवं नव्ये पुमान् स्तुतौ ।
 नीवी परिपणे स्त्रीणां कटीवसनवन्धने ॥१५॥
 पक्कं परिणतेऽपि स्याद् विनाशाभिमुखेत्रिपु ।
 प्रवः स्यात् प्रवने भेले भेकेऽवौ यपचेऽपि च ॥१६॥
 शाखान्तगे च कुलके प्रवणे पर्कटीद्रुमे ।
 कारण्डवाख्यविहगे शब्दे सुतगतौ पुमान् ॥१७॥
 कैवर्त्तीमुस्तके गन्धर्षणेऽपि स्यान् नपुंसकम् ॥
 पार्थ कक्षाधरे चक्रोपान्ते पर्शुगणेऽपि च ॥१८॥
 प्राध्वन्तुं प्रणते चातिदूरवर्त्मानि वन्धने ।
 पृथ्वीभूमौ मद्यत्याञ्च त्वक्पत्न्यां कृष्णजीरके ॥१९॥
 भवः क्षेमेशसंसारे सत्तायां प्राप्तिजन्मनोः ।
 भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥२०॥
 क्रियालीलापदार्थेषु विभृतिबुधजन्तुषु ।
 रत्यादौ चाय रेवा स्यान् नील्यां रत्यां नदीभिदि ॥२१

लवो लेशे विनाशे च क्लेदने रामनन्दने ।
 लटा करञ्जभेदे स्यात् फले वाद्ये खगान्तरे ॥२२॥
 लघ्वी लाघवयुक्तायां प्रभेदे स्यन्दनस्य च ।
 विश्वा त्वतिविपायां स्त्री जगति स्यान् नपुसकम् ॥२३॥
 न ना शुण्या पुंसि देवप्रभेदेष्वखिले त्रिषु ।
 विल्वं फले श्रीफले ना शयःस्यात् कुण्ठे पुमान् ॥२४॥
 नपुसकन्तु पानीये शिवि भूर्ज्जे नृपे पुमान् ।
 शिवो मोक्षे महादेवे कीलकग्रहयोगयोः ॥२५॥
 बालुके गुग्गुलौ वेदे पुण्डरीकद्रुमे पुमान् ।
 सुखक्षेमजले स्त्रीव शिवा झाटामलौपधौ ॥२६॥
 अभयामलकीगौरी फेरुसक्तुफलाखपि ।
 शुल्बताम्रं यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ॥२७॥
 सत्व गृणे पिशाचादौ वले द्रव्यस्वभावयोः ।
 आत्मत्वे व्यवसायासुचित्तेष्वस्त्री तु जन्तुषु ॥२८॥
 सयो यज्ञे च सन्ताने सान्त्वं दार्दिण्यसामनो ।
 सुवा द्वयो र्यज्ञपात्रे शङ्गकीमूर्खयोः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥
 हव आघ्राध्वराहाने ह्रस्वो न्यक् खर्वयो स्त्रियु ।

वचिकम् ।

अक्षीव वगिरे शिग्रौ नाऽमत्ते पुनरन्यवत् ॥३०॥

अभावा मरणेऽसत्त्वे आहवो युद्धयज्ञयोः ।
 आर्त्तवं स्त्रीरजःपुष्पे क्लीवं स्यादतुजे त्रिपु ॥३१॥
 आश्रवोऽङ्गीकृतौ क्लेशे नाऽन्यथत् वचनस्थिते ।
 उद्धवो यादवभिदि महे च क्रतुपावके ॥३२॥
 उत्सवो मह उत्सुके इच्छाप्रसवकोपयोः ।
 कारवी मधुरादोष्यत्वक्पत्रोक्तपणजीरके ॥३३॥
 कितवस्तु पुमान् मत्ते वञ्चके कनकाङ्गये ।
 केशवोऽजे च पुत्रागे पुंसि केशवति त्रिपु ॥३४॥
 कैतवन्तु क्लेशे द्यते कैरवः कितवे रिपौ ।
 नपुसकञ्च कुमुदे चन्द्रिकायान्तु कैरवी ।
 गाण्डीवी गाण्डवश्चास्त्री काम्मुकेऽर्जुन
 गालवस्तु मुनौ लोधि ताण्डवोऽस्त्री तृण
 भवेदुद्धतनृत्ये च त्रिदिवा सरिदन्तरे ।
 पुंसि स्वर्गे दीद्विर्ना धिपणेऽन्ने तद्वि
 निष्यावः शृर्षपवने राजमापे कडङ्ग
 पवने शिम्बिकायां ना निविंकल्पेऽन्य
 निङ्गवः पुंसि निहतावविश्वासाप
 पञ्चवोऽस्त्री किसलये विटपे विस्तरे
 रिऽनन्तरागे च प्रभावः शान्तिने
 पञ्चानां भावे प्राणानामत्यये

लुवे नो जन्ममूले स्याज् जन्महेतौ पराक्रमे ।
 पुनस्य चादिमस्थाने प्रसवो गर्भमोचने ॥४१॥
 उत्पादे स्यादपत्येऽपि फले च कुसुमेऽपि च ।
 प्रसेवः पुंसि वोणाङ्गे स्यूते च पार्थिवो नृपे ॥४२॥
 पार्थिवो तु सीतायां स्त्री पृथिव्या विकृतौ त्रिपु ।
 पुङ्गवः स्याद् वलीदर्दे प्रभेदेऽप्यौषधस्य च ॥४३॥
 उत्तरस्यः पुनः श्रेष्ठे फेरवो जम्बुकेऽस्रपे ।
 वज्रवः सूपकारे स्याद् भीमसेने च गोदुहि ॥४४॥
 बान्धवो ज्ञातिसुहृदो भार्गवो गजधन्विनोः ।
 शुके परशुरामे च भार्गवो पार्व्वतीश्रियोः ॥४५॥
 दूर्वायां भैरवः पुंसि शङ्करे भीषणे त्रिपु ।
 माधवोऽजे मधौ राधे आदवे ना स्त्रिया मिसौ ॥४६॥
 मधुशर्करावासन्तीकुट्टनीमदिरासु च ।
 गोमहिष्यादिसम्पत्तो यादवः पुंसि केशवे ॥४७॥
 राजीवं नलिने ना तुभेदे हरिणमीनयोः ।
 राघवोऽव्ये र्महामोनभेदे च रघुवंशजे ॥४८॥
 रौरवो नरके घारे वडयः द्विजयोऽपिति ।
 अश्यायां कुम्भटास्याश्च नारीजात्यनारेऽपि च ॥४९॥
 वाडय करणे स्त्रीणां घाटकौघे नपुनकम् ।
 पातानेन स्त्रियां पुंसि ब्राह्मणे वडयानले ॥५०॥

विभवो रैमोक्षैश्वर्ये विद्रवो विद्रुतौ धियि ।
 विभावः स्यात् परिचये रसस्योद्दीपनादिषु ॥५१॥
 शात्रव' भावसंघत्याः शत्रूणां शात्रवो द्विपि ।
 पाङ्गवो गानरसयोः सचिवो मन्त्रिणि स्मृतः ॥५२॥
 सहाये सन्भवो हेतावुत्पत्तौ मेलकेऽपि च ।
 आधारानतिरिक्तत्वेऽप्याधेयस्य निगद्यते ॥५३॥
 सुग्रीवो वासुदेवस्य चये शाखाभृगेश्वरे ।
 सुपवी कारवेल्ले स्यात् कृष्णजीरकजीरयोः ॥५४॥
 सैन्धवोऽस्त्री माणिमन्ये नाऽथे सिन्धुभये त्रिषु ।

वचतुष्कम् ।

अनुभावः प्रभावे स्यान् निश्चये भावबोधके ॥५५॥
 भवेदभिपवः ज्ञाने मद्ये मन्धानयज्ञयोः ।
 अपङ्गवस्तु पु लिङ्गः स्मृतः स्नेहापलापयोः ॥५६॥
 आदीनवः पुमान् दीपे परिकुशदुरन्तयोः ।
 उपप्रवः सै'हिकेये विप्रवोत्पातयोरपि ॥५७॥
 कुशीलवस्तु वाल्मीकौ नटयाचकयोरपि ।
 जलविल्वः कर्कटे स्यात् पञ्चाङ्गे जलचत्वरे । ५८॥
 जीवञ्जीव श्चकारे स्याद् द्रुमभेदेऽपि पुंस्ययम् ।
 धामार्गवस्तु पुंसि स्यात्पामार्गे च घोषके ॥५९॥
 पारिप्रवश्चाकुले स्याच् चञ्चले च पराभवः ।

तिरस्कारे विनाशे च पुंसि पारश्वं पुमान् ॥६०॥
 परस्तीतनये शस्त्रे द्विजात् शूद्रासुतेऽपि च ।
 पुटयीवस्तु पुंलिङ्गो गर्गरीताम्रकुम्भयोः ॥६१॥
 बलदेवो बले वाते चायमाणौपधौ स्त्रियाम् ।
 रन्ति देवस्तु नृपते भेदे च गरुडध्वजे ॥६२॥
 रोहिताश्वश्चिचभानौ हरिश्चन्द्रनृपात्मजे ।
 अथ शीतशिवं क्लीवं शैलेयमाणिमन्ययोः ॥६३॥
 पुंसि सक्तफलावृक्षे तथा मधुरिकौपधौ ।
 सहदेवा बलादण्डोत्पलयोः शारिवौपधौ ॥६४॥
 सहदेवी तु सर्पाच्यां पुंसि स्यात् पाण्डवे पुनः ।

वपञ्चकम् ।

आशितम्भवमन्नाद्ये तृप्तौ स्यादाशितम्भवः ॥६५॥

वान्तवर्गः समाप्तः ।

शैककम् ।

शं वदन्ति बुधाः श्रेयः शश्व शस्त्रं निगद्यते ।
 शीश्व शयनमित्याहुः शास्त्रं शा च निगद्यते ॥२॥

शुद्धिकम् ।

अंशुरर्कप्रभोस्त्रेषु नाऽऽशा तृष्णादिशोः स्त्रियाम् ।
 आशु र्धान्यान्तरे शीघ्रेऽपीशा लाङ्गुलदण्डके ॥२॥

ईशः प्रभौ मन्त्रादेवे काशी वाराणसीपुरे ।
 न स्त्रियां तृणभेदे स्यात् कौशो दिग्भ्वरे कपौ ॥३॥
 कुशी फाले कुशा रज्वां त्रिपु पापिष्ठमत्तयोः ।
 योक्तरामसुतद्वीपे ना दर्भेऽस्त्री कुशं जले ॥४॥
 केशः स्यात् पुंसि वरुणे ह्रीवरे कुन्तलेऽपि च ।
 क्लेशो दुःखेऽपि कोपेऽपि व्यवसायेऽपि दृश्यते ॥५॥
 केशोऽस्त्री कुङ्गले पात्रे दिव्ये खड्गपिधानके ।
 जातिकोपे ऽर्थसङ्घाते पेश्यां शब्दादिसंग्रहे ॥६॥
 दर्शस्तु स्याद्मावस्यायागभेदावलोकने ।
 दंशः कीटविशेषे च वर्णादंगनयोः पुमान् ॥७॥
 दशा वर्यादोषवर्त्यां वस्त्रान्ते भून्ति योपिति ।
 दृक् स्त्रियां दर्शने नेत्रे बुद्धौ च त्रिपु वीचके ॥८॥
 नाशः पलायनेऽपि स्यान् निधनानुपलम्भयोः ।
 निशा दारुहरिद्रायां स्यात् त्रियामाहरिद्रयोः ॥९॥
 पशु मृगादिदेवाजे नाऽव्ययं पशु दर्शने ।
 पाशः केशादिपूर्वः स्यात् तत्सङ्घे कर्णपूर्वकः ॥१०॥
 सुकर्णे च स्वसामर्थ्यान् मृगपक्ष्यादिवन्धने ।
 पांशुर्धूलौ च शस्यार्थचिरसञ्चितगोमये ॥११॥
 पेशी सुपक्वकलिके मांस्यां खड्गपिधानके ।
 मांसपीण्डामण्डभेदे राशि र्मेपादिपञ्चयोः ॥१२॥

वंशः पुंसि कुले वेणौ पृष्ठावयववर्गयोः।

वशा बन्ध्यासुतायोपास्तीगवीकरिणीषु च ॥१३॥

त्रिष्वायत्ते क्लीवमायत्तत्वे चेच्छाप्रभुत्वयोः ॥

विट् पुंसि मनूजे वैश्ये वेशो वेश्यागृहे गृहे ॥१४॥

नेपथ्ये च शशा वीले लोभ्रि नृपशुभेद्योः ।

स्पर्शो रुजायां दाने च स्पर्शने स्पर्शकेऽपि च ॥१५॥

स्पर्शः स्यात् सम्पराये च प्रणिधावपि पुंस्ययम् ।

शत्रिकम् ।

आदर्शो दर्पणे टीकाप्रतिपुस्तकयोरपि ॥१६॥

उड्डीशो ग्रन्थभेदे स्यादुड्डीशश्चन्द्रिकापतौ ।

उपाशु र्जपभेदे स्यादुपाशु विजनेऽव्ययम् ॥१७॥

कपिशस्त्रिषु श्यावे स्त्री माधव्यां सिंहके पुमान् ।

कर्कशः काशमर्द्दुत्तुकास्पित्येष्वप्यसौ पुमान् ॥१८॥

त्रिषु साहसिके क्रूरे ददामच्छणनिर्दये ।

कीनाशः कर्षकक्षुद्रोपाशुघातिषु वाच्यवत् ॥१९॥

यमे ना कुलिशो न स्त्री दम्भोलौ ना झयान्तरे ।

गिरिशोऽदिपतौ वाचस्पतिशङ्करयोः पुमान् ॥२०॥

तुङ्गीशस्तु पुमान् गौरीवज्रभेदिमदीधितौ ।

दु स्पर्शो धन्वयासे ना कण्टकार्यां स्त्रिया त्रिषु ।

खरस्पर्शेऽथ निस्त्रिंशः खड्गे ना निर्दये त्रिषु ॥२१॥

निर्वेशस्तु पुमान् भोगे वेतने मूर्च्छनेऽपि च ।
 निवेशः पुंसि विन्यासे शिविगोदाहयोरपि ॥२२॥
 निदेशः शासनेऽपि स्यात् कचनोपान्तयोरपि ।
 नीकाशो निश्चये तुल्ये पलाशं कृदने मतम् ॥२३॥
 शठीकिशुक रक्षःसु पुंसि स्याद् हरिते त्रिषु ।
 प्रकाशस्तु स्फुटे ख्याते प्रघासातपयोरपि ॥२४॥
 प्रदेशो देशमात्रे स्यात् तर्जन्यङ्गुष्ठसम्मिते ।
 भित्तावपि च पिङ्गाशो नीलिकायां नपुमकम् ॥२५॥
 जात्यस्वर्णे पुमान् पक्षीपतौ मत्स्यान्तरेऽपि च ।
 वालिशश्च शिशौ मूर्खे भ्रुकेशः शैवले वटे ॥२६॥
 भ्रुकेश्यवरगुजेऽपि स्यात् लोमशो मृनिमेषयोः ।
 लोमान्विते स्त्रियां काकजह्नामांसीवचासु च ॥२७॥
 शृकशिवि मक्षामेदाकाशोशे शाकिनीभिदि ।
 विवशस्त्रिष्ववश्यात्मारिष्टदुष्टधियोरपि ॥२८॥
 विक्राशः पुंसि विजने प्रकाशे सदृशं सुमे ।
 उचिते चाय संवेशः स्थापस्त्रीरतवन्धयोः ॥२९॥
 सुखाशो वरुणे राजनिनिशे सुखभोजने ।
 हताशो निर्दूये चागारहिते पिशुनेऽपि च ॥३०॥

शचतुष्कम् ।

।देशः पुमान् लुत्चे निमित्तव्याजयोरपि ।

अपभ्रंशस्तु पतने भाषाभेदापशब्दयो ॥३१॥
 आश्रयाशः पुमान् वक्त्रौ त्रिषु चाश्रयनाशके ।
 उपस्यर्शः स्यर्शमात्रे स्नानाचमनयोरपि ॥३२॥
 उपदंशो विदंशे च मेढ्ररोगान्तरेऽपि च ।
 क्रूरदृक्पिशुने वाच्यलिङ्गः पुंसि शनैश्चरे ॥३३॥
 खण्डपशुः पशु रामे शङ्करे चूर्णलेपिनि ।
 खण्डामलकभैषज्ये सिद्धिकातनयेऽपि ना ॥३४॥
 जीवितेशो यमे पुंसि त्रिषु स्याज जीवितेश्वरे ।
 नागपाशः पुमान् स्त्रीणां करणे वरुणायुधे ॥३५॥
 पञ्चदशी त्वमावास्यापौर्णमास्योश्च योषिति ।
 प्रतिस्पशः सहाये स्याद् वात्ताहरपुरोगयोः ॥३६॥
 परिवेशो वेष्टने स्यात् परिधावपि पु स्यथम् ।
 पादपाशो खड्गकायां शृङ्खलायामपि स्त्रियाम् ॥३७॥
 पुरोडाशो हविर्भेदे चमस्यां पिष्टकस्य च ।
 ऊतशेषे च भूमिस्पृक् पुंसि मानुषवैश्ययोः ॥३८॥
 शान्तवर्गः समाप्तः ।

पैककम् ।

पः कचे पुंसि विज्ञेयः श्रेष्ठे स्यादभिधेयवत् ।
 क्षः सवर्त्ते राक्षसे च नरसिंहे च विद्युति ॥१॥
 क्षत्रे नाशे क्षत्रपाले क्षिर्निवासे गतौ क्षये ।

पक्षिकम् ।

अक्षो ज्ञातार्यशकटव्यवहारेषु पाशके ॥२॥
 रुद्राक्षेन्द्राक्षयोः सर्पे विभीतकतरावपि ।
 चक्रे कर्पे पुमान् क्लीवं तुत्ये सौवर्चलेन्द्रिये ॥३॥
 उपा वाणसुताराव्योरुपः कामिनी गुग्गुलौ ।
 रात्रिशेषे उपायान्तु केचिदाङ्गस्तदव्ययम् ॥४॥
 उपः क्षारमृत्तिकायां प्रभातेऽपि पुमानयम् ।
 तत्सन्धायाश्च रन्ध्रे च चन्दनाद्रौ श्रयोयिने ॥५॥
 ऋषिर्वेदे वशिष्ठादौ दीधितौ च पुमानयम् ।
 ऋक्षः पर्वतभेदे स्याद् भङ्गुके शोणके पुमान् ॥६॥
 कृतवेधनेऽन्यलिङ्गे नक्षत्रे पुन्नपुंसकम् ।
 कक्षा स्यादन्तरीयस्य पश्चादश्वल्पपञ्चवे ॥७॥
 स्पर्द्धास्पदे नादोर्मूले कच्छयीरुत्तृणेषु च ।
 कर्पो नाकर्षणे मानप्रभेदेऽप्युन्नपुंसकम् ॥८॥
 कर्पूः पुमान् कगीपात्रौ स्त्रियां कुन्धेष्टिखानयोः ।

श्री तुवरिकायाञ्च सौराष्ट्रमृदपि स्त्रियाम् ॥९॥
 पोऽस्त्री कुद्वले पात्रे दिव्ये खड्गपिधानके ।
 तिकोषेऽर्थसङ्घाते पेश्यांशब्दादिसङ्गहे ॥१०॥
 अप आभीरपत्न्या स्याद् गोपालध्वनिघोषके ।
 तस्ये चाम्बुदनादेना घोषा मधुरिकौषधौ ॥११॥
 त्तो गीते शुचौ दत्ते तथा तीक्ष्णमनोज्ञयोः ।
 या नागबलायां स्त्री तापमत्स्याटवीषना ॥१२॥
 र्पोलिषोदन्ययोस्त्रिष्ट कान्तौवाचिरुचौस्त्रियाम् ।
 पोधान्यत्वगच्छद्गोस्तृपा लिषात्षोःस्त्रियाम् ॥१३॥
 त् लिषायामुदन्यायां स्तरपुत्र्यामपि स्त्रियाम् ।
 त्तस्त्रिपुपटौ पुंसि ताम्बूडे प्रजापतौ ॥१४॥
 मुनिभेदे हरवृषे द्रुमभेदे स्त्रियां भुवि ।
 रोप. स्याद् दूषणेपापे दौषा रात्रौ भुजेऽपि च ॥१५॥
 र्माङ्गी मत्स्यात् खगे काके तक्षके भिक्षुकेऽपि च ।
 माङ्गीककोलिकायां स्यान् न्युत्तकात्स्त्रिय त् षोऽपि च ॥१६॥
 क्लीवेऽथ पुंसि महिषे निष्कृष्टे पुनरन्यवत् ।
 प्रज्ञो जटीगर्हभाण्डद्वीपभित् कुञ्जराशने ॥१७॥
 प्रज्ञो मासार्द्धके पार्ष्णित्रि साध्यविरोधयोः ॥
 केशादेः परतो वृन्दे बले सखिसहाययोः ॥१८॥
 च्छीरन्ध्रे पतत्रे च वाजे कुञ्जरपार्श्वयोः ।

नङ्गपो नागभेदे स्यात् सोमवंशनपेऽपि च ॥३८॥
 निकषः शाणफलके निकषा यातुमातरि ।
 निसंपनिमिपौ कालप्रभेदेऽचिनिमीलने ॥३९॥
 पक्ष्मं कर्बुरे रुत्ते निष्टुरोक्तौ च वाच्यवत् ।
 प्रदोषः समये दोषे प्रत्यूषोऽहर्मुखे वसौ ॥४०॥
 षोडशं सप्तद्विसावधिशीरे तथामृते ।
 पुरुषः पुरुषे साङ्गज्ञे च पुन्नागपादपे ॥४१॥
 पौरुषं पुरुषस्य स्याद् भावे कर्माणि तेजसि ।
 ऊर्ध्वविस्तृतं देः पाणिनृमाने त्वभिधेयवत् ॥४२॥
 मक्षिपो कृताभिषेकासैरिभ्योरोपधिभिदि ।
 मारिषः शाकभिद्यार्थे नाद्योक्ता पुंसि योपिति ॥४३॥
 दक्षाम्नायां नृगाली तु विशालामृगनेत्रयोः ।
 गृक्ताक्षः कासरे क्रूरे पारावतचकोरयोः ॥४४॥
 रौहिषं कन्नृणे कीवं पुंसि स्याद् हरिणान्तरे ।
 विज्ञेपो विधुरेऽयोगे शुश्रूषा स्यादुपासने ॥४५॥
 कथने श्रोतुमिच्छायां शैलूपे नटविल्वयोः ।
 संहर्षस्तु प्रमोटेऽपि स्पृष्टायाम् प्रभञ्जने ॥४६॥
 संहर्षः स्यात् पुमान् घृष्टे स्पृष्टायामपि दृश्यते ।
 ममीक्षा तु स्त्रियां नत्वे बुद्धावपि निभाञ्जने ॥४७॥

पचतुष्कम् ।

।नुकर्षो रथाघःस्यदारुण्यनुकर्षणे ।
 प्रस्वरीषं रणे भ्राष्ट्रे क्लीवं पुंसि नृपान्तरे ॥४८॥
 ।रकस्य प्रभेदे च किशोरे भास्करेऽपि च ।
 आस्नातकेऽनुतापे चानिमेषो मत्स्यदेवयोः ॥४९॥
 अनुतर्षः सुरापानपात्रे तृष्णाभिलाषयोः ।
 अहिद्विट् गरुडे शक्रे मयूरे नकुले पुमान् ॥५०॥
 अलम्बुपः प्रहस्ते च कर्दने राजसान्तरे ।
 अलम्बुपा तु मुण्डीर्यां स्वर्गवाराङ्गनान्तरे ॥५१॥
 अथ किम्बुस्यो लोकभेदकिन्नरयोः पुमान् ।
 देववृक्षः सप्तपर्णे मन्दारादिषु गुग्गुलौ ॥५२॥
 नन्दिघोषोऽज्जु नरथे घोषे वन्दिजनस्य च ।
 परिवेषस्तु पुलिङ्गः परिघौ परिवेषणे ॥५३॥
 परिघोषो निनादे स्यादवाचे जलदध्वनौ ।
 पलङ्कपा गोक्षुरके राज्ञागुग्गुलुकिंशुके ॥५४॥
 मुण्डीगीलाक्षयोश्च स्त्री राजसे तु पलङ्कपः ।
 वीरवृक्षो भक्नातकककुभद्रुमयोः पुमान् ॥५५॥
 भूतवृक्षस्तु शाखोटद्रुमे श्लोनाकपादपे ।
 महाघोषा तु कर्कटगृह्यां पुंस्यतिघोषणे ॥५६॥
 क्लीवं हृष्टे राजवृक्षः सुवर्णाकपियालयोः ।

वातरूपस्तु वातलोत्कचयोः शक्रकामुके ॥५७॥
 विशालाक्षो हरे तार्क्ष्ये ना सुनेत्रे ऽभिधेयवत् ।
 सकटाक्षो वराक्षे ना कटाक्षसहिते त्रिषु ॥५८॥
 पान्तवर्गः समाप्तः ।

सैककम् ।

सा जीवेच्छे पञ्चवक्त्रे भृगौ भसि निशापतौ ।
 शक्तौ तु सा स्त्रियां सुस्तु प्रसवे गर्भमोचने ॥१॥
 सदिकम् ।

कंसोऽस्त्री तैजसद्रव्ये कांस्ये मानेऽसुरे तु ना ।
 कासूर्विकलवाचि स्यात् तथा शक्त्यायुधे स्त्रियाम् ॥२॥
 गुप्तः स्यात् स्तवके स्तम्बे हारभिद्ग्रन्थिपर्णयोः ।
 गोसो वोलोपसो श्वास इक्षुपत्तिभिदोः पुमान् ॥३॥
 चासो भये मणे दीपे दासो वाणाभुजिष्ययोः ।
 दासो भृत्ये च गृह्णं च ज्ञातात्मनि च धीवरे ॥४॥
 नासा तु नामिकायाञ्च द्वारोर्द्धदारुणि स्त्रियाम् ।
 प्रसूरयाजनन्याश्च कन्दलीवीरुधोः स्त्रियाम् ॥५॥
 वसुर्ना देवभेदाग्निभायोक्तवकराजसु ।
 च्छेवक्षौ पधे ग्यामरैरत्ने मधुरे त्रिषु ॥६॥

भास् प्रभावे मयखेस्त्री माश्चन्द्रमासयोः पुमान् ॥७॥
 मासं स्यादामिषे क्लोव कक्कोलीजटयोः स्त्रियाम् ।
 मिसि स्त्री मधुरामास्योः शतपुष्याजमोदयोः ॥८॥
 मृत्सा काच्यां श्रेष्ठमृदि रसे गन्धरसे जले ।
 शृङ्गारादौ विषे वीर्ये तिक्तादौ द्रवरागयोः ॥९॥
 देहघातुप्रभेदे च पारदस्वादयोः पुमान् ।

स्त्रियान्तु रसनापाठाशक्तीकङ्कुभूमिषु ॥१०॥
 रासः कोलाहने ध्वाने भाषाशृङ्खलकेऽपि च ।
 क्रीडामेदे च गोपानां वत्सः पुत्रादिवर्षयोः ॥११॥
 तर्णके नारसि क्लोवं व्यासो ना विस्तृतौ मुनौ ।
 शसा वचसि वाञ्छाया हस. स्यान् मानसौकसि ॥१२॥
 निर्जोभनृपविष्णुर्के परमात्मनि मत्सरे ।
 योगिभेदे मन्त्रभेदे शरीरमरुदन्तरे ॥१३॥
 तुरङ्गमप्रभेदेऽपि हिसा चौर्यादिघातयोः ।

सत्रिकम् ।

अलसा हंसपद्या ना पाद्रोगद्रुभेदयोः ॥१४॥
 क्रियामन्दे त्रिष्वयार्च्चिर्मयूखशिखयोर्न ना ।
 अटस् परन्निन्नत्र स्याद्भ्यासोऽभ्यसनेऽन्तिके ॥१५॥
 आगोऽपराधे पापे स्यादाश्वास पुंसि निवृत्तौ ।
 आख्यायिकापरिच्छेदे चाशीर्दन्ते मरुद्भुजाम् ॥१६॥

दितस्याशंसने स्त्री स्याद्विद्यासः कार्मुके पुमान् ।
 त्रिपु स्यात् क्षेपके चेषोरुच्छ्वासः प्राणनेऽपि च ॥१७॥
 आख्यायिका परिच्छेदेऽप्याश्वासेऽपि पुमानयम् ।
 उत्तंसः कर्णपूरेऽपि शिखरेऽपि च नस्त्रियाम् ॥१८॥
 उपम् प्रत्यूपसि क्लीवं पितृप्रस्ताञ्च योपिति ।
 उरस् वक्षसि च श्रेष्ठेऽप्येनः पापापराधयोः ॥१९॥
 आजम् दीप्ताववष्टम्भे प्रकाशबलयोरपि ।
 आकस् आश्रयभात्रे च मन्दिरे च नपुंसकम् ॥२०॥
 कीकसः कृमिजातौ स्यात् पुंसि कुल्ये नपुंसकम् ।
 चमसो यज्ञपात्रस्य भेदेऽस्त्री पिष्टके स्त्रियाम् ॥२१॥
 कृन्दस् पद्ये च वेदे च स्वैराचाराभिनापयोः ।
 ज्यायान् बृह्देऽतिप्रशस्ते ज्योतिरश्रौ दिवाकरे ॥२२॥
 पमान् नपुंसकं दृष्टौ स्यान् नक्षत्रप्रकाशयोः ।
 तरो वले च वेगे च तपो लोकान्तरेऽपि च ॥२३॥
 चान्द्रायणादौ धर्मे च पुमान् गिशिग्माघयोः ।
 तमो ध्वान्ते गुणे शोके क्लीयं वा ना विधुन्तुद् ॥२४॥
 तामसो निर्गि दुर्गायां तामसो भुजगे खले ।
 तेजो दीप्तौ प्रभावे च स्यात् पराक्रमरेतमोः ॥२५॥
 धनुः पियाने ना नस्त्री राशिभेदे गगामने ।
 धनुर्दरे त्रिपु नभः क्लीवं व्यान्ति पुमान् घने ॥२६॥

प्राणश्रावणवर्णासु विसतन्तो पतद्द्यहे ।

पनसः कण्टकीफले कण्टके वानरान्तरे ॥२७॥

स्त्रियां रोगप्रभेदे स्यात् पयस् स्यात् क्षीरनीरयोः ।

पायसस्तु क्लीवपुसो श्रीवासपरमान्नयोः ॥२८॥

पुक्त्सी कलिकानील्योः पुक्त्सः यपचेऽधमे ।

बीभत्सो नाऽर्जुने क्रूरघृणात्मविह्वते त्रिपु ॥२९॥

भूयान् त्रिपु वङ्गतरे पुनरर्थे त्वदेऽव्ययम् ।

मनस् चित्ते मनीषायां मच्च उत्सवनेजसोः ॥३०॥

मानसं सगसि स्वान्ते रभसो वंगहर्षयोः ।

रहस् तत्त्वे रते गुह्ये रजस् क्लीवं गुणान्तरे ॥३१॥

आर्त्तवे च परागे च रेणुमात्रे च दृश्यते ।

राक्षसो यातुधाने स्याच् चण्डायां राक्षसी स्मृता ॥३२॥

रेपाः स्याद्धमे क्रूरे कृपणेऽप्यभिधेयवत् ।

रेतस् शुक्रे पारदे च रोदय रोदसोति च ॥३३॥

दिवि भूमौ पृथक् च स्यात् सहे। त्रयापेतयो स्तथा ।

लालसौ। त्स्वदृष्ट्यातिरेकया ज्ञासु च द्वयोः ॥३४॥

ययस् पत्तिणि वाल्यादौ यौवने च नपुसकम् ।

वर्च्चा नपुसकरूपे विद्यायामपि तेजसि ॥३५॥

पुंसि चन्द्रस्य तनये वर्धिस पुंसि उतागने ।

नस्ती कुगे वपुस् क्लीवं तनौ गस्ताक्षतावपि ॥३६॥

वतंसस्तु पुमान् कर्णपूरणेश्वरयोरपि ।
 वाहसो जलनिर्याने शयानौ सुनिषण्के ॥३७॥
 वायसोऽगुरुवृक्षे च श्रीवासध्माङ्गयोः पुमान् ।
 काकोडम्बरिकायाश्च काकमाच्याश्च वायसी ॥३८॥
 विद्वानात्मविदि प्राज्ञे पण्डिते चाभिधेयवत् ।
 विलासो हारभेदे स्यात् लीनायामपि पुस्ययम् ॥३९॥
 वीतंसो बन्धनोपाये मृगाणां पक्षिणामपि ।
 तेषामपि च विश्वासहेतोः प्रावरणेऽपि च ॥४०॥
 वेधाः पुंसि हृषीकेशे बधे च परमेष्ठिनि ।
 शिरस् प्रधाने सेनाग्रै शिखरे मस्तकेऽपि च ॥४१॥
 श्रीवासो वृकधूपे स्यात् पङ्कजे मधुमूढने ।
 श्रेयो मुक्तौ शुभे घर्मेऽतिप्रशस्ते च वाच्यवत् ॥४२॥
 श्रेयसो करिपिष्यन्त्यामभयापाठयोरपि ।
 सद्यो वले ज्योतिषि च पुंसि हेमन्तमार्गयोः ॥४३॥
 सरसी विज्ञे कासारि सरो नीरतडागयोः ।
 स्यात् समासस्तु पुलिङ्गः सङ्क्षेपे च समर्थने ॥४४॥
 सारसः पक्षिभेद्वेदाः क्रीवन्तु सरसीरुचे ।
 साहसन्तु वनात्कारहानकार्ये दमेऽपि च ॥४५॥
 सरसन्तु त्रिषु स्वर्गैः प्रणामे तु नृपुंसकम् ।
 स्त्री रास्तानागमात्रेण स्त्रीतोऽस्युवेग इन्द्रिये ॥४६॥

।वि हे।तव्यमात्रे च सर्पिष्यपि नपुंसकम् ।

सचतुष्कम् ।

अधिवासो निवासे स्यात् सस्कारे धूपनरदिभिः ॥४७॥

अवधंसः परित्यागे निन्दनेऽप्यवचूर्णने ।

अवतसो नस्त्रियां स्यात् कर्णपुरे च शेखरे ॥४८॥

अगोकाः पुंसि शरभे पक्षिपञ्चास्ययोरपि ।

उदर्चिस्तप्रभे वाच्यलिङ्गः पुंसि ज्ञताशने ॥४९॥

कलहंसस्तु कादम्बे राजहंसे नृपोत्तमे ।

कनीयानतियुनि स्यादत्यल्पानुजयोः स्त्रियु ॥५०॥

कुम्भोनसः क्रूरसर्पे स्त्रियां लवणमातरि ।

भवेद् घनरसः सान्द्रनिर्यासे मोरटेऽम्बुनि ॥५१॥

कर्पूरे पीलुपर्ण्याञ्च सम्यक् सिद्धरसेऽपि च ।

चन्द्रहासो द्दशग्रीवकरबालेऽसिमात्रके ॥५२॥

जटायुसंपुंसि सम्पातेः कनीयसि च गुग्गुलौ ।

अथ तामरसं पद्मे ताम्रकाञ्चनयोरपि ॥५३॥

त्रिस्रोता जङ्गुकन्यायां स्रोतस्वत्यन्तरेऽपि च ।

दिवोकाश्च दिवोकाश्च पुंसि टेत्रे च चातके ॥५४॥

दीर्घायुः शात्मन्नीवृत्ते वायसे जीवकद्रुमे ।

मार्काण्डेये च पुंसि स्याच्चिग्रीविनि वाच्यवत ॥५५॥

नगौकाः पुंसि शरभे पक्षिपञ्चाखयोरपि ।
 निःश्रेयसन्तु कल्याणमोक्षयोः शङ्करे पुमान् ॥५६॥
 नीलाञ्जसाऽशरोभेदे सरिङ्गे च विद्युति ।
 प्रचेता पाशिनि मुनौ ना प्रहृष्टहृदि त्रिषु ॥५७॥
 पुनर्वसुर्ना मुनिभिद्यजे द्वित्वे तु भान्तरे ।
 पौर्णमासः पुमान् यज्ञभेदे स्तो पूर्णिमातिथौ ॥५८॥
 महारसः स्यात् खर्जूरै कोपकारकशरुणोः ।
 मलीमसस्तु मलिने पुष्यकाशोशलोक्षयोः ॥५९॥
 भवेनमधुरसा द्राक्षामुर्विकादुग्धिकासु च ।
 यमस्वसा तु दूर्गायां यमुनायामपि स्त्रियाम् ॥६०॥
 यवीयाननुजेऽपि स्यादतियूनि च वाच्ययत् ।
 रासेरसस्तुगोष्ठां स्याद् रासशृङ्गारयोरपि ॥६१॥
 रससिद्धौ रसावासे पृष्ठीजागरकेऽपि च ।
 राजहसस्तु कादम्बे कलहसे नृपोत्तमे ॥६२॥
 वरीयान् योगभिच्छ्रेष्ठवरिष्ठेष्वतियूनि च ।
 विद्यायाः शकुनौ पुंसि गगने पुन्नपुसकम् ॥६३॥
 विभावस्तुः पुमान् सूर्ये द्वारभेदे च पावके ।
 श्रेयसन्तु कल्याणे परमात्मनि शर्माणि ॥६४॥
 अथ सर्वरसा वाद्यभाण्डभेदे च धूनके ।
 सप्तार्चिः पावके पुंसि क्रूरचक्षुषि तु त्रिषु ॥६५॥

साधीयानतिवाढे स्यादतिसाधौ तु वाच्यवत् ।

सिद्धगसो रसे पुंसि धातुप्रमृतिषु त्रिषु ॥६६॥

सुमनाः पुष्यमालत्याः स्त्रियां ना धीरदेवयोः ।

सुमेधास्तु स्त्रियां ज्योतिष्मत्यां त्रिषु सुबुद्धिनि ॥६७॥

सपञ्चकम् ।

दिव्यचक्षुः सुगन्धस्य भेदे नाऽन्धे सुलोचने ।

म्यान् नभश्चमसु चन्द्रे चित्रापूपेन्द्रजालयोः ॥६८॥

द्विद्भुनिर्यास इत्येप निम्ने द्विद्भुरसेऽपि च ।

सपङ्कम् ।

द्विरण्यरेताः पुंसि स्याद् दिवाकरहविर्भुजोः ॥६९॥

सान्तवर्गः समाप्तः ।

हैककम् ।

दः शिवे सलिले ष्टन्ये धारणे मङ्गलेऽपि च ।

गगने नकुलीशे च रक्ते नाके च वर्ण्यते ॥१॥

हृदिकम् ।

अक्षि घृन्नासुरे सर्पे पुंसोद्योद्यमवाञ्छयोः ।

कुशः स्तो कोकिनालापनष्टेन्दुकनदर्शयोः ॥२॥

१५ऽनुग्रहनिर्व्वन्धग्रहणेपु रणोद्यमे ।

सूर्यादौ पृथनादौ च सैहिकेयोपरागयोः ॥३॥

ग्राहो ग्रहेऽवहारे च गृहः पाण्मातुरे गृहा ।

सिंहपुच्छाच्च गर्त्ते च पर्व्वतादेश्य गङ्गरे ॥४॥

गृह गृहाश्च पुंभूमि कलत्रेऽपि च सद्गनि ।

नाहस्तु वस्त्रने कूटे प्रोहो गजाङ्घ्रिपर्व्वणोः ॥५॥

वाच्यवत् निपुणे तर्के वर्धे पिच्छे दनेऽस्तियाम् ।

वज्र स्यात् त्यादिसङ्घासु विपु लेऽप्यभिधेयवत् ॥६॥

महीनद्यन्तरे भूमौ मह उत्सवतेजसोः ।

अथ मोहो नृलिङ्गः स्यादविद्यायाञ्च मूर्च्छने ॥७॥

लोहोऽस्त्री शम्भुके लौहे जोङ्गके सर्व्वतैजसे ।

वहः स्याद् वृषभस्कन्धे वाहे गन्धवहेऽपि च ॥८॥

वाहो भुजे पुमान् मानभेदाश्चवृषवारुपु ।

ब्रीहिः सामान्यधान्ये स्यादाशुधान्ये तु पुंस्ययम् ॥९॥

व्यूहः स्याद् बलविन्यासे निर्माणे वृन्दतर्कयोः ।

सहो बले नस्त्रियां स्यात् स्त्रियान्तु नखभेपजे ॥१०॥

दण्डोत्पलामुद्गपर्णिकुमारीपृथिवीपु च ।

सिंहः कण्ठीरवे गणौ सत्तमे चात्तरस्थितः ॥११॥

सिंही तु कण्ठकार्यां स्याद् वार्त्ताकौ यामकेऽपि च ।

सैहः स्यात्पुंसि तैत्रादिरसद्रव्ये च सौहृदे ॥१२॥

हत्रिकम् ।

अत्यूहा नीलिकायां स्त्री कालकण्ठखगे पुमान् ।
 आग्रहोऽनुग्रहासत्तोरारक्रमे यद्वणेऽपि च ॥१३॥
 आरोह स्ववरोहे च वररारहाकटावपि ।
 आरोहणे गजारोहे दीर्घत्वे च समुच्छ्रये ॥१४॥
 उत्साह स्वद्यमे सूत्रे कटाहः कूर्मकर्परे ।
 द्वीपस्य च प्रभेदे स्यात् तैलादेः पाकभाजने ॥१५॥
 जायमानविपाणायमहिपीशावकेऽपि च ।
 कलहं युधि वाटेना खड्गकोपे च भण्डने ॥१६॥
 दांत्यूहस्तु पुमान् कालकण्ठचातकपक्षिणोः ।
 नियहो भर्त्सनेऽपि स्यात् मर्यादायाश्च वन्धने ॥१७॥
 निर्यूहः शिखरे द्वारे निर्यासे नागदन्तके ।
 निरूहो वस्तिभेदे स्यादूहशून्ये च निश्चिते ॥१८॥
 प्रग्राहस्तु तलाहने वृषादिप्रग्रहेऽपि च ।
 पटहो ना समारम्भे आनके पुत्रपुसकम् ॥१९॥
 प्रवहस्तु वदिर्यात्रा मातरित्यप्रभेदयोः ।
 प्रग्रहस्तु तुलासूत्रे वन्द्यां नियमने भुजे ॥२०॥
 द्यादिर्गमौ रगमौ च सुवर्णालुमहीरुहे ।
 प्रवाहस्तु प्रवृत्तौ स्यादपि खेतसि वारिणः ॥२१॥

अव्ययानि ।

अथाव्ययानि वक्ष्यन्ते व्यक्तं पूर्वोदितैः क्रमैः ।
अकाराद्यन्तता चास्मिन् तस्मादप्यतिरिच्यते ॥१॥

अ

अशब्दः स्यादभावेऽपि स्वल्पार्थप्रतिषेधयोः ।
अनुकम्पायाञ्च तथा वासुदेवे त्वनव्ययम् ॥२॥

आ

आ प्रशुद्धं स्मृतौ वाक्येऽनुकम्पायां समुच्चये ।

इ

इ खेदे च रूपोक्तौ चापाकरणानुकम्पयोः ॥३॥

ई

ई विपादेऽनुकम्पायां लक्ष्मणां पुनरनव्ययम् ।

उ

उ सम्बोधनरोपोक्त्योरनुकम्पानियोगयोः ॥४॥
पदस्य पूरणे पादपूरणेऽपि च दृश्यते ।

ऊ

ऊ वाक्यार ; का , दृश्यते ॥५॥

क्व

क्व वाक्यारम्भे रक्षायां वक्तुः स्मृत्योरन्ययम् ॥६॥
देवाम्नायां दनौ चापि भैरवे दनुजे गतौ ।

लृ

लृकारो देवताम्नायां भुवि कुध्रे च कीर्तितः ॥७॥

लृ

लृकारो देवनार्यां स्यान् नार्यात्मन्यपि मातरि ।

ण

ण स्मृतावप्यस्ययानुकम्पामन्त्रणहृतिषु ॥८॥

ऐ

ऐ शब्दो दृश्यते ऋतौ स्मृत्यामन्त्रणयोरपि ।

ओ

ओ सम्बोधन आज्ञाने स्मरणे चानुकम्पने ॥९॥

ओ

ओ शब्दः कथितो ऋतौ तथा सम्बोधनेऽपि च ।

स्त्री तु विश्वम्भरायां स्यात् पुमांस्तु निस्वने स्मृतः ॥१०॥

कैककम् ।

कु पापे चेपदर्शे च कुप्तायाञ्च निवारणे ।

कदिकम् ।

धिक् भस्मने च निन्दायां

कत्रिकम् ।

मनागप्यल्पमन्दयोः ॥११॥

हिरूक् शब्दे विनार्ये च मध्वार्येऽपि च दृश्यते ।

गद्विकम् ।

अङ्ग सम्योधने ह्ये सम्भ्रमासूययोरपि ॥१२॥

उद्विकम् ।

अऽड् सीमायामभिव्याप्तौ क्रियायोगेपदर्थयोः ।

चैककम् ।

चान्वाचये समाहारेऽप्यन्योन्यार्ये समुच्चये ॥१३॥

पक्षान्तरे तथा पादपूरणेऽप्यदधारणे ।

चद्विकम् ।

किञ्चारम्भे च साकल्ये प्राक् पूर्वग्नित्तयान्तरे ॥१४॥

अग्रे प्रभातिऽतीते च टेगे दिक्कालयोरपि ।

चत्रिकम् ।

चिर्यकतिरोर्ये वक्त्रे च विहङ्गादौ त्वनव्ययम् ॥१५॥

ननु च प्रश्नदुष्टोक्त्याः सम्यक् दृढप्रगंसयोः ।

ठद्विकम् ।

सुष्टु प्रशंसनेऽपि स्यादत्यर्थं च निगद्यते ॥१७॥

ठत्रिकम् ।

अपष्टु निरवद्ये च शोभनार्थे च दृश्यते ।

णचतुष्कम् ।

अन्तरेणपदं विद्याद् विनामध्यार्थयोरपि ॥१८॥

तैककम् ।

तु पादपूरणे भेदे समुच्चयेऽवधारणे ।

पक्षान्तरे नियोगे च प्रशसायां विनियुद्धे ॥१९॥

तद्विकम् ।

अतिशब्दः प्रशंसायां प्रकर्षे लङ्घनेऽपि च ।

नितान्तासम्प्रतिल्लेपवाचकोऽप्येष दर्शितः ॥२०॥

अस्तु स्यादभ्यनुज्ञानेऽप्यसूयापीडयोरपि ।

प्रतिल्लेपे प्रशसायां प्रकर्षे लङ्घनेऽपि च ॥२१॥

असम्प्रत्यर्थ उद्दिष्टमिति जेतौ प्रकाशने ।

निदर्शने प्रकारे स्यात् परकृत्यनुकर्षयोः ॥२२॥

समाप्तौ च प्रकरणेषुतात्यर्थविकल्पयोः ।

समुच्चये वितर्के च प्रश्ने च पादपूरणे ॥२३॥

उत् स्यात् प्रश्ने वितर्के च चेत् कुस्मितप्रशंसयोः ।

पक्षान्तरेऽप्यसाकल्ये जातुगर्भे विगर्षणे ॥२४॥

कदाचिदर्थेऽपि तथा नेत् विकल्पनिषेधयोः ।
 प्रति प्रतिनिधावित्यभूताख्यानाभिमुख्ययोः ॥२५॥
 मात्रार्थभागवोष्वासु लक्षणप्रतिदानयोः ।
 वता मन्त्रणसन्तोषखेदानुक्रोशविस्मये ॥२६॥
 स्वस्ति स्यान् मङ्गले पुण्येऽप्याशंसायामपि क्वचित्
 स्थित् प्रश्ने च वितर्के च तथैव पादप्रणये ॥२७॥
 हन्त वाक्यारम्भखेदविपादं हर्षसम्भ्रमे ।

तत्रिकम् ।

आरात् दूरे समीपे च कश्चित् कामप्रवेदने ॥२८॥
 प्रश्ने हर्षे मङ्गले च किमुत प्रश्नतर्कयोः ।
 विकल्पेऽतिशयेऽपि स्यात् तावन् मानेऽवधारणे ॥२९॥
 सम्भ्रमे च परिच्छेदे तथा कात्स्न्याधिकारयोः ।
 पश्यत् स्यात् प्रशंसायां विस्मये च निगद्यते ॥३०॥
 पद्यात् प्रतीच्यां चरमेऽप्यधिकारेऽपि दृश्यते ।
 यद्वत् प्रश्ने वितर्के च यावत् कात्स्न्येऽवधारणे ॥३१॥
 प्रशंसायां परिच्छेदे नानाधिकारसम्भ्रमे ।
 पक्षान्तरे च शब्दत् स्यादनुप्रश्ने च मङ्गले ॥३२॥
 पुरा कल्पे सदार्थे च पुनरर्थे च दृश्यते ।
 सद्यत् सहैकवारे स्यात् साक्षात् प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥३३॥

तचतुष्कम् ।

अहोवतानुकम्पायां खेदे सम्बोधनेऽपि च ।
पुरस्तात् प्रथमे प्राच्यामग्रतोर्यपुरार्ययोः ॥३४॥

यदिकम् ।

अथाथो संशये स्यातामधिकारे च मङ्गले ।
विकल्पानन्तरप्रश्नकार्त्स्न्यारम्भसमुच्चये ॥३५॥
तथाऽभ्युपगमे पृष्टप्रतिवाक्ये समुच्चये ।
सदृशे निश्चयेऽपि स्यात् यथा तुल्यार्थमानयोः ॥३६॥
प्रशंसायां वृथा बन्धे

यत्रिकम् ।

निष्कारणेऽन्यथा पुनः ।

वितथे चापरार्थे च सर्व्वथा हेतुवाङ्मयोः ॥३७॥

ददिकम् ।

उत्प्रकाशे विभागे च प्रावल्या स्वास्थ्यशक्तिषु ।
प्राधान्ये बन्धने भावे मोक्षे लाभोर्द्धकर्म्मणोः ॥३८॥
यद् गर्हाहेत्वचघृत्यो र्यदि गर्हा विकल्पयोः ।

घदिकम् ।

अधि स्यादधिकारे चापोश्वरे च निगद्यते ॥३९॥

नैककम् ।

न स्यान् निषेधोपमयो नि निवेशमृशार्थयोः ।

नित्यार्थसंशयक्षेपकौशलोपरमेषु च ॥ ४० ॥

सामीप्याश्रयदानेषु मोक्षान्तर्भावबन्धने ।

राश्वघोभावविन्यासे नु वितर्कापमानयोः ॥ ४१ ॥

विकल्पानुनयातीते प्रश्ने हेत्वपदेशयोः ।

नद्विकम् ।

अनु हीने सहार्थे च पश्चात् सादृश्ययोरपि ॥ ४२ ॥

लक्षणेत्यभूताख्यानभागवीषास्वनुक्रमे ।

आयामे च समीपे च किन्तु प्रश्नवितर्कयोः ॥ ४३ ॥

चन विस्मये साकल्ये ननु शब्दो विनिग्रहे ।

अनुप्रश्ने परकृतावधिकारे च सम्भ्रमे ॥ ४४ ॥

आमन्त्रणेऽप्यनुनये प्रश्नानुज्ञावधारणे ।

नानाशब्दो विनार्थेऽपि तथानेकोभयार्थयोः ॥ ४५ ॥

स्थाने तु करणार्थे स्याद् युक्तसादृश्ययोरपि ।

पद्विकम् ।

अप स्यादपकृष्टार्थे वर्जनार्थवियोगयोः ॥ ४६ ॥

विपर्यये च विकृतौ चौर्ये निर्देशहर्षयोः ।

अपि सम्भावनाप्रश्नशङ्कागर्हासमुच्चये ॥ ४७ ॥

तथा युक्तपदार्थेऽपि कामकारक्रियासु च ।

उप स्यादधिकार्थे च हीनार्थानुन्नयोरपि ॥ ४८ ॥

भद्विकम् ।

अभीत्यमृतकयने चाभिमुख्याभिलापयोः ।

मैककम् ।

मा वारणे विकल्पे च स्नाऽतीते यादपूरणे ॥४८॥

स्यान् मङ्गले परकृतौ

भद्विकम् ।

अमान्तिकसहार्थयोः ।

आम् ज्ञाननिश्चयस्मृत्योरुम् रोपेऽङ्गीकृतावपि ॥५०॥

प्रश्नेऽपि स्यादुम् रूपोक्तौ पृच्छायामोमुपक्रमे ।

प्रणवे चाभ्युपगमे चापाकृतौ च मङ्गले ॥५१॥

कम् यादपूरणे तोये मस्तके च सुखेऽपि च ।

किम् कुत्सायां वितर्के च निषेधप्रश्नयोरपि ॥५२॥

किमु सम्भावनायां स्याद् विमर्षे चापि दृश्यते ।

नाम कोपेऽभ्युपगमे विस्मये स्तरणेऽपि च ॥५३॥

सम्भाव्यकुत्साप्राकाशविकल्पेऽपि च दृश्यते ।

सम् कल्याणे सुखे सन्तु शोभनार्थसमार्थयोः ॥५४॥

सङ्गार्थे च प्रष्टार्ये सामिनिन्दार्थयो र्मतम् ॥

इम् रूपोक्तावनुनये ऊम् स्मृत्यव्ययाकृतौ ॥५५॥

अनुप्रश्नेऽभ्यनुशायां ङम् स्यात् प्रत्यवितर्कयोः ।

मत्रिकम् ।

अलम् भूपणपर्याप्तिवारणेषु निरर्थके ॥५६॥
 शक्तावेवम् प्रकारे स्याद्ङ्गीकारेऽवधारणे ।
 अनुप्रश्ने परकृतादुपमापृच्छयोरपि ॥५७॥
 कथम् हर्षे च गर्हायां प्रकारार्थे च सम्भ्रमे ।
 प्रश्ने सम्भावनायाच्च कामम् चानुमतौ स्मृतम् ॥५८॥
 प्रकामे चाप्यसूयायां तथानुगमनेऽपि च ।
 जोषम् सुखे प्रशंसायां तूष्णीं च ननुनयोरपि ॥५९॥
 नूनन्तु निश्चिते तर्के स्मरणे चाक्यपूरणे ।
 परम् नियोगे क्षेपे च प्राध्वम् नर्मानुकूलयोः ॥६०॥
 सत्यम् प्रश्नेऽभ्युपगमे

मचतुष्कम् ।

ऽवश्यम् नित्यप्रयत्नयोः ।

अभीष्टम् मुञ्जर्यान्ते शोघप्रकर्षयोरपि ॥६१॥
 इदानीं वाच्यभूषायां सङ्गत्यर्थे च दृश्यते ।
 तद्विनम् दिनमध्ये स्यान् तद्यैव प्रतिवामरे ॥६२॥
 साम्प्रतम् चाधुनार्थे स्यादुचितार्थे च दृश्यते ।

यद्विकम् ।

अथि प्रश्नानुनययो स्यात् सन्बोधनेऽपि च ॥६३॥
 अथे बोधे विषाटे च सम्भ्रमे स्मरणेऽपि च ।

ध्या ह्यप मङ्गले च पश्यशब्दस्तु विस्तये ॥६४॥

सायामपि तथा

यत्रिकम् ।

समयाऽन्तिकमध्ययोः ।

रैककम् ।

प्रकर्षे गताद्यर्थेऽपि

रद्विकम् ।

अरेऽपाकृत्यस्ययोः ॥६५॥

धूरी चाप्युभौ शब्दैः विस्तारेऽङ्गीकृतावपि ।

निपेधे च कष्टे च नि निर्णयनिपेधयोः ॥६६॥

रे स्यात् सर्वतोभावे वर्जने व्याधिप्रपयोः ।

त्यम्भृताख्यानभागवीशालिङ्गनलक्षणे ॥६७॥

।पाख्याने निरसने पूजाव्य।श्रोत्र भूपणे ।

रा विमोक्षप्राधान्यप्रातिलोम्येषु धर्षणे ॥६८॥

॥भिमुख्ये • शार्थे च विक्रमे च गतौ वधे ।

रा पुगाणे निकटे प्रवन्धातीत भाविषु ॥६९॥

३ प्रेत्यव्योम्नि नाके चापि

रत्रिकम् ।

अन्तः स्वीकारमध्ययोः ।

प्रन्तगा तु विनार्ये स्यान् मध्यार्थनिकटार्थयोः ॥७०॥

उर्युस्युररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम्
 नकि निषेधोपमयोः प्रादुः प्राकाश्य इयं
 सम्भाव्ये च प्रवृत्तौ च पुनरप्रथमे मतम् ।
 अधिकारे च भेदे च तर्थापत्तान्तरेऽपि
 नद्विकम् ।

किलशब्दस्तु!वार्त्तायां सम्भाव्यानुनयार्थ्ये
 रालु स्याद् वाक्यभूपायां जिज्ञासायाञ्च स
 वीक्षामाननिषेधेषु पूरणे पदवाक्ययोः ।
 वैककम् ।

वा स्याद् विकल्पोपमयो वितर्के पादपूरण
 समुच्चये च विस्मयो नानार्थातीतयोरपि ।
 वे स्यात् सम्बोधने पादपूरणेऽनुनयेऽपि च
 वि निग्रहे नियोगे च तथैव पदपूरणे ।
 निश्चयेऽनद्यने चैतावद्याप्तिविनियोगयोः
 ईपदर्थे परिभवे गुहायान्त्वनेऽपि च ।

विज्ञाने (पद्विकम्)

अथैव चोपम्ये नियोगे वाक्यपूरणे ॥७७॥
 अवधारणे च चाग्नियोगे च विनिग्रहे ।

पद्विकम् ।

उपा रात्रौ तद्वन्ने च, दोषा रात्रौ च न

। ह्यु शीघ्रे भृगार्थे च

पत्रिजम् ।

निकपाऽन्तिकमध्ययोः ।

सैककम् ।

। अथायां भृगार्थानुमतिश्च ससृष्टिषु ॥७६॥

सद्विकम् ।

। स स्वरणेऽपातरणे कोपसन्तापयोरपि ।

। स्वभावनै कोपि नि निषेधे च निश्चये ॥७७॥

। कल्याणोत्तयोर्भोसु सम्बोधनविपादयोः ।

सत्रिकम् ।

। असाशब्द आख्यात सन्त्यहर्णार्थयोरपि ॥७८॥

। रोऽन्तर्हौ तिर्यगर्थे निचैः सैरान्वयोर्मतम् ।

। रोऽग्रे प्रथमे भयोऽधिकारे च पुनः पुनः ॥७९॥

। योऽन्योन्य रक्षार्थे च शनैः स्वरैः शनैश्चरे ।

सचतुष्कम् ।

। भितः शीघ्र साकल्यसन्मुखे भयतोऽन्तिके ॥८०॥

। अतः प्रथमे चाग्रे पुरतः प्रथमाग्रयोः ।

। धु प्रातःकाले स्नात् तथैव धर्मावासरे ॥८१॥

सैकरुम् ।

। न्यात् सम्बोधने पादपूरणे च विनियमे ।